Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

जनज्ञान (हिन्दी मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय	2
बीसवें वर्ष में प्रवेश	6
महात्मा वेदभिक्षु: की अमर वाणी	9
सामयिक विचार—सत्यपाल शास्त्री	11
आप ही के पत्र	15
विघटनकारी तत्वों का तुष्टीकरण कब तक ? —धर्मपाल शर्मा	17
हिन्दी का वर्चस्व क्यों नहीं बढ़ रहा—विशनस्वरूप गोयल	25
झूठी आधुनिकता का शिकार भारत—शालिग्राम पाण्डेय	28
क्रांतिकारियों की सहायता करें—डॉ. प्रशान्त वेदालंकार	33
पाखण्ड कैसे रुके ?—देवकीनन्दन सिंह अत्रि	38
यही राम की जन्मभूमि है (कविता)—आशुतोष प्रकाश	41
जीवन अशान्त क्यों है ?—देवीप्रसाद मस्करा	42
बाबू कुंवरसिंह, जिन्होंने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया	49
आर्य लोग भारतवर्ष के मूल निवासी—योगीन्द्र	59
अमन के लिए (कविता)—चंचल बलरामपुरी	63
हिन्दुओं और सिखों का धर्म एक ही है—निरंजन वर्मा	65
नारी समाज किस ओर ?—आनन्दप्रकाश आर्य	69
आत्मा, परमात्मा और प्रकृति, जिन पर त्रैतवाद का सिद्धांत आधारित है—रामनारायण महतो	72
स्वाधीनता की कीमत (कहानी)—कुमारी दिव्या	76
आवश्यकता है क्रांतिकारी परिवर्तन की (श्री देवीदास आर्य से भेंटवार्ता) ! डा. सुधांशु मोहन अग्निहोत्री	81
भारत को अखंड रहना ही है —बालासाहब देवरस	91

(प्रकाशित लेखों में प्रकट किये गये विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं ।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र की एकता के लिए आवश्यक—

क भाषा, एक नियम एक धर्म ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु
सम्पादक—राकेशरानी
वेदमंदिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-110036
फोन नं. 745325
कार्यालय—2286, आर्यसमाज रोड,
नई दिल्ली-110005
फोन नं. 5724741
वार्षिक मूल्य : 35 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड, 60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
आजीवन : 501 रुपये
विदेश में : 1501 रुपये
यह अंक : 3.50 रुपये
ज्येष्ठ संवत् : 2043
मई, 1987 : वर्ष 20, अंक 1

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ।

अर्थ—(अग्ने) हे प्रकाशक सर्वोपरि परमात्मन (वयम्) हम सब (धिया) बुद्धि से (नमो भरन्तः) नमस्कार करते हुए (दिवेदिवे) प्रतिदिन (दोषावस्तः) सायं और प्रातः (त्वा) आपकी (उप एमसि) उपासना करें ।

इस मन्त्र का देवता अग्नि है, जिसका भौतिक अर्थ यज्ञाग्नि है तथा आध्यात्मिक अर्थ ईश्वर है । भौतिक अर्थ में यह मन्त्र इस बात का प्रमाण है कि हमें प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ करना चाहिए । आध्यात्मिक अर्थ में वही मन्त्र दोनों समय सन्ध्या करने का भी प्रमाण है । इस मन्त्र में साधन 'धिया' (बुद्धि के द्वारा) पद है । यजुर्वेद में भी "धिया विप्रोऽजायत" कहकर चिन्तन का साधन बुद्धि को ही माना है । योग दर्शन में भी "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" कहकर चित्त नाम से बुद्धि को ही कहा है । जिस अवस्था में परमानन्द प्राप्त होता है उस अवस्था को भी "समाधि" पद से पुकारा है. जिसका अर्थ है—समा स्थिरा धीर्यस्या अवस्थायां सा समाधि अर्थात् जिस अवस्था में व्यक्ति स्थितप्रज्ञ होता है, उस अवस्था का नाम समाधि है । इससे पता चला कि मेधा बुद्धि ही मेधा बुद्धि के ध्यान का मुख्य साधन है । इसलिए वेद में "यां मेधां" मन्त्र में मेधाबुद्धि की प्रार्थना की गई है ।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

मई मास याद कराता है इतिहास

मई मास जब आता है तो इतिहास के अनेक प्रेरक पृष्ठ मानस पटल पर स्वतः उभर उठते हैं। याद आता है दस मई 1857, जिस दिन इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) के समीप मयराष्ट्र (मेरठ) में अंग्रेजों की दासता से मुक्ति के लिए राष्ट्रभक्त सैनिकों ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध प्रथम स्वातंत्र्य समर का सिंहनाद किया था। और यही मई मास स्मृति दिलाता है उस महापुरुष की जिसने "1857 का स्वाधीनता संग्राम" ग्रन्थ की रचना करके 1857 के महान् अनुष्ठान को गदर का नाम देने वालों के मिथ्या प्रचार को तार-तार कर दिया था। जिस ग्रन्थ का हर शब्द और पंक्ति अंग्रेजी शासन को तीर की तरह चुभी थी और इसीलिए उन्होंने इस महान ग्रंथ को प्रकाशन से पूर्व ही जब्त घोषित कर दिया था, उस महान लेखक वरेण्य इतिहासकार वीर सावरकर की जन्म तिथि 28 मई, 1883 है।

यही मास हमें उस महान नाम की स्मृति भी दिलाता है जिसने स्वतन्त्रता के अरुणोदय के साथ ही इस देश के सत्तासूत्र को अपने हाथों में संभाल कर भारत को औद्योगिक दृष्टि से सबल तथा आत्मनिर्भर बनाकर विश्व में शान्ति की अमृतसुधा सरसाने और महान आर्य पूर्वजों के "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः उदघोष को सबल बनाने में महती भूमिका निभाने का स्वप्न संजोया था। वह महान आदर्शवादी राजनीतिज्ञ देश के इतिहास में अपना अनुपम स्थान बना गया है। विडम्बना ही है कि हमने स्वातन्त्र्य समर के उन महान लक्ष्यों को स्वतन्त्र होने के चालीस वर्ष बाद भी आत्मसात नहीं किया है जिन्हें 857 के स्वातन्त्र्य समर के उन्नायकों ने "स्वराज्य और स्वधर्म" की गरिमा की पुर्नःस्थापना के उद्घोष के साथ अपना लक्ष्य बनाया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी भांति स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के महान दर्शन और पं. जवाहरलाल नेहरू के वैचारिक अधिष्ठान के बारे में हममें अनेक भ्रान्तियां हैं। ऐसा ही आज के मनीषियों द्वारा उनके चिन्तन की व्याख्या से प्रतीत होता है। यह कल्पना कर ली जाती है कि सावरकर और पं. जवाहरलाल नेहरू दो विभिन्न राहों के पथिक थे, जबकि तनिक गहराई से सोचा जाए तो यह सत्य उजागर हो जाता है कि उन दोनों महामानवों का लक्ष्य एक ही था। भारत को एक महान देश के रूप में विश्व के मानचित्र पर उभारना जो भयाक्रान्त संसार को वास्तविक अर्थों में मानवता की वह सुशीतल समीरण प्रदान कर सकें जिसके प्रभाव से मानव मात्रभय, अन्याय, उत्पीड़न और शोषण से सर्वथा मुक्त हो सके। ये दोनों ही महापुरुष एक सुदृढ़, सबल और समृद्ध भारत की स्थापनार्थ समर्पित थे।

यह मास हमें चिन्तन और मनन का अवसर प्रदान करता है। जब हम वर्तमान स्थिति की समीक्षा करते हैं तो हमारे समक्ष यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्र चल रहा है, परन्तु रास्ता लम्बा है। उसपर चलते-चलते अड़चनें भी आती हैं। विपथ की चकाचौंध से आंखें चुंधियाती हैं और ऐसी स्थिति में स्वाभाविक ही है कि देश प्रेरणा के लिए, प्रकाश के लिए सभी दिशाओं में नेत्र पसारता है। हम आज भारत की अभिवृद्धि के लिए विदेशों में प्रेरणा-स्रोत खोजते हैं। स्वराज्य कैसा होना चाहिए इसके लिए भी विदेशों की ओर ही निरन्तर ताकने वाले "मनीषियों" की भी कमी नहीं है। किन्तु सत्य यह है कि वह प्रवृत्ति अर्थकारी है। इसी प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप अनेक "उदारचेता" राम और बाबर को समकक्ष रखने और औरंगजेब तथा शिवाजी को एक धरातल पर खड़ा करने एवं मुहम्मद अली जिन्ना और वीर सावरकर दोनों को ही भारत विभाजन की स्थितियों के बनने के लिए समान रूप से उत्तरदायी ठहराने में भी संकोच नहीं कर पाते।

ऐसे लोग अपनी कल्पनाओं के लोक में ही विचरण करते हैं। सत्य तो यह है कि इस देश की संस्कृति रामायण है और इस देश के राम प्रथम राष्ट्र-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्माता हैं, जिनकी आदर्श शासन व्यवस्था स्वातन्त्र्य समर के महान सेनानियों की भी प्रेरणास्रोत रही है। महात्मा गांधी ने रामराज्य की स्थापना का सपना अपने नेत्रों में संजोया था। इतिहास साक्षी है कि बाबर एक आक्रांता था, जिसने पराधीनता के पाश में इस देश को आबद्ध करने की तमन्ना अपने मन में संजोई थी। इसी प्रकार यह भी प्रखर सत्य है कि शिवाजी स्वराज्य संस्थापक थे और औरंगजेब धर्मोन्मादी शासक जिसने अपने पिता शाहजहां को भी अपनी सत्ता की भूख मिटाने के लिए कारागार के सींखचों के पीछे डालने में संकोच नहीं किया था। इसी भांति जहां मुहम्मद अली ज़िन्ना ने भारत भूमि को खंडित करने की दुरभिसंधि अपने मन में संजोकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद से नापाक गठबन्धन कर अपनी सियासत का तानाबाना पूरा था, वही वीर सावरकर ने ब्रिटिश सत्ता को उसके दुर्ग लन्दन में प्रवेश करके चुनौती दी थी और देशभक्ति के पावन अपराध में उन्हें दो जन्मों के कठोर कारावास (कालापानी) की सजा सुनाई गई थी। उन्होंने पूरे तेरह वर्ष तक अवर्णनीय यातनाएं सहन की थीं। दोनों हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी डाले प्रतिदिन कोल्हू में बैलों के स्थान पर जुतकर तीस-तीस पौंड तेल भी उन्हें निकालना पड़ा था। यह भी सत्य है कि वीर सावरकर ने ही भारतीय राजनीति में हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा का समावेश किया था। किन्तु उन्होंने हिंदुत्व के जिस व्यापक स्वरूप को प्रस्तुत किया था, उसमें साम्प्रदायिकता और संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं है। हिंदूपद पादशाही के लेखक वीर सावरकर ने ही अपनी लेखनी से ब्रिटिश शासक के विरुद्ध हुए प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम के नायकों में से एक बहादुरशाह जफर की विरुदावली गाने में भी कोई संकोच नहीं बरता था।

अंग्रेजों ने अपनी विभाजन और शासन की जिस नीति से इस देश को विविधों भागों में बांटने का षडयंत्र रचा था, वीर सावरकर ने उसे राष्ट्र का निर्धारित व्यक्तित्व स्वीकार न कर एक अखंड राष्ट्र के सनातन अस्तित्व को ही सर्वोपरि महत्व दिया था। राष्ट्र के इसी राजनैतिक व्यक्तित्व को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी श्रद्धा में प्रतिष्ठित कर उन्होंने देशभक्ति के जो सिद्धांत निर्धारित किए थे, उनपर वे आजीवन निःशंक निर्भीकतापूर्वक चलते रहे थे।

वीर सावरकर का स्मरण आते ही आर्यावर्त के उन ऋषि-मनीषियों के तपःपूत एवं तेजस्वी व्यक्तित्व सहसा ही मन पर चित्रित हो आते हैं, जिन्होंने राष्ट्र के शरीर और प्राणात्मा को अपने मानस मंदिर मे भक्तिपूर्वक पूजा था। □

महात्मा हंसराज दिवस पर श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह का उद्बोधन

नई दिल्ली। पंजाब के त्यागी-तपस्वी आर्य नेता और सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस 19 अप्रैल को यहाँ उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि भूतपूर्व रक्षामन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने शिक्षण संस्थाओं के संचालकों से अपील की कि वे अलगाववाद को निरुत्साहित करें और एकता का प्रसार करें। श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने उन सज्जनों को इस अवसर पर सम्मानित किया, जिन्होंने अपना सारा जीवन शिक्षा के प्रसार और सामाजिक उत्थान के लिए अर्पित किया।

अन्त में सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी ने आशीर्वचनों के साथ सभी अभ्यागतों को धन्यवाद दिया। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बीसवें वर्ष में प्रवेश

इस अंक के साथ आपका प्रिय जन-ज्ञान अपने प्रकाशन के बीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जन-ज्ञान का प्रथम अंक मई 1968 में प्रकाशित हुआ था। महाप्राण आजानुबाहु स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी (तब पंडित भारतेन्द्रनाथ जी) ने इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों के प्रचार के लिए की थी। बाद में जब सन् 1980 में विधर्मी षड्यन्त्रकारियों ने धर्मान्तरण का चक्र चलाया, मीनाक्षीपुरम् में अनेक हिन्दू मुसलमान बनाये गये और स्थान-स्थान पर मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आक्रमण किये, तब महात्माजी ने भारत रक्षा समिति को हिन्दू रक्षा समिति का नाम देकर हिन्दू जागृति और संगठन का काम प्रारम्भ किया। यह आंदोलन भी मुख्यत: जन-ज्ञान के माध्यम से चलाया गया।

तब से जन-ज्ञान इन दोनों आन्दलनों के प्रचार-प्रसार का माध्यम है— महर्षि दयानन्द की वैदिक विचार धारा का प्रचार-प्रसार और हिन्दू जागृति व संगठन। जनज्ञान आर्यत्व और हिन्दुत्व की रक्षा के लिए प्राणपण से समर्पित है। इस खातिर हमें कैसे-कैसे दारुण कष्ट झेलने पड़े, यह आप सब जानते हैं। आज भी हम पर 41 आपराधिक मुकद्दमे केवल इसलिए चल रहे हैं, क्योंकि हम हिन्दू हितों की रक्षा के लिए मैदान में हैं।

इन 19 वर्षों में हमने इसे अधिकाधिक उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया है, लेकिन अभी भी हम सन्तुष्ट नहीं। स्वर्गीय महात्मा जी की इच्छा थी कि जन-ज्ञान का गोरखपुर के कल्याण की तरह व्यापक प्रचार-प्रसार हो। उसका गीता प्रेस जैसा प्रेस हो। वेद मन्दिर के बारे में भी उनकी कल्पना थी कि वह नई दिल्ली के लक्ष्मीनारायण मन्दिर (बिड़ला मन्दिर) के मुकाबले में इक्कीस ही हो, उन्नीस न हो। अभी इन सब सपनों का साकार होना शेष है। अभी तो वेद मन्दिर की यज्ञशाला भी अधूरी है और इस प्रतीक्षा में है कि कोई यज्ञप्रेमी उसे पूरा करे।

जहां तक जन-ज्ञान का सम्बन्ध है, हम इसे एक बहु-आयामी पत्रिका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का रूप देना चाहते हैं और इसे न्यूनाधिक हिन्दी रीडर्स डाइजेस्ट का रूप देने के इच्छुक हैं। हम इसमें अनेकानेक उपयोगी विषयों का समावेश करना चाहते हैं। इसे अधिक रोचक भी बनाना चाहते हैं। हमारी प्रबल इच्छा है कि हम इसे विभिन्न रुचियों की एक ऐसी पत्रिका का रूप दें, जो अधिकाधिक पठकों के लिए रुचिकर हो—उन्हें आकृष्ट कर सके। आपसे भी अनुरोध है कि आप इसे अपने परिचितों-मित्रों, बन्धु-बान्धवों और रिश्तेदारों-सम्बन्धियों तक पहुंचायें। प्रत्येक अवसर पर इसे याद रखें और हर प्रकार से इसे सहयोग दें, ताकि हम स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी के सपनों को साकार कर पायें—दूसरे शब्दों में अपने देश को वैभव के उच्चतम शिखर तक पहुंचाने में समर्थ हों।

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहां वेद का स्वर।

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

पुस्तकालय संस्करण : लागत मूल्य ५०० रुपये

उपहार संस्करण : लागत मूल्य १,१०० रुपये

प्रचार के लिए

५०० रुपये के प्रत्येक वेद-सेट के साथ २५१ रुपये का साहित्य (वैदिक सम्पत्ति, महाभारत, गीता (हिन्दी भाष्य), वेदांजलि, संक्षिप्त रामायण तथा अन्य ग्रंथ) उपहार दिया जाएगा।

आदेश का सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम

अलीपुर, दिल्ली-११००३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंडिता राकेशरानी जमानत पर रिहा

दिल्ली, 24 अप्रैल। दिल्ली के मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री गुरमीत कुमार ने आज सुप्रसिद्ध हिन्दू नेता, दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष व जनज्ञान की सम्पादिका पंडिता राकेशरानी जी को पांच हजार रुपये की जमानत पर रिहा कर दिया। जमानत श्री. सरदार सिंह वर्मा ने दी।

दिल्ली पुलिस ने करौलबाग थाने में उन पर धारा 153ए के अधीन मुकद्दमा (नम्बर 1032) दायर कर उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया था।

यह मुकद्दमा फरवरी 1986 के जनज्ञान में प्रकाशित श्री रमेश नौटिताल के लेख "बंगलादेश के हिन्दू" के प्रकाशन पर दायर किया गया है।

राकेशरानी जी की ओर से जमानत की अर्जी राजधानी के प्रसिद्ध वकील श्री देवकीनन्दन शर्मा एडवोकेट ने दी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन में सफलता कैसे मिले ?

सफल जीवन के लिए कौन-से कर्म उपयोगी हैं, यह वेद में अनेक स्थलों पर बताया गया है। यजुर्वेद के दो निम्नलिखित मन्त्र इस पर कुछ प्रकाश डालते हैं—

स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व।
महिमा तेऽन्येन न सन्नशे ॥
(23/१5)

'बलवान् आत्मा ! तू आप अपने शरीर को समर्थ बना, आप यज्ञ कर, आप सेवा कर, तेरी महिमा किसी दूसरे के द्वारा प्राप्त नहीं होगी।

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथाऽसथ ॥ (17:46)

मनुष्यो ! आगे बढ़ो। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो। भगवान् तुम्हें अपनी शरण प्रदान करें। तुम्हारी भुजाएं उग्र हों, जिससे कोई तुम्हें हानि न पहुंचा सके।

पहला मंत्र व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में कहता है, दूसरे मन्त्र में उस कठोर वातावरण को ध्यान में रखा गया है, जिसमें हम सबको रहना होता है। इन्हें इसी क्रम में लें।

पहले मन्त्र के दूसरे भाग में कहा गया है कि वास्तव में व्यक्ति की महिमा या बड़ाई किसी दूसरे की देन नहीं हो सकती। उसके अपने श्रम का फल होती है।

व्यक्ति का प्रथम काम तो अपने शरीर को बनाना है। पहले माता अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शरीर से बच्चे का पालन करती है, पीछे उसे अन्न आदि खिलाती है। आगे चलकर वह आप खाने लगता है और अन्त में जो कुछ खाता है, उसे कमाता है।

दूसरे वेद मन्त्र में स्पष्ट शब्दों में आदेश है—

आगे बढ़ो। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो। तुम्हारी भुजाएं उग्र हों, जिससे कोई तुम्हें हानि न पहुंचा सके। आजकल जिन राष्ट्रों के हाथ में कुछ करने की शक्ति है वे उस आदेश पर अमल करते हैं। जो अशक्त हैं वे अहिंसा के गुण गाने में लगे हैं। स्वामी दयानन्द ने अहिंसा का अर्थ 'वैर-त्याग' किया है। यही इसका तत्व है। मैं तो किसी का शत्रु नहीं परन्तु यदि कोई मुझसे शत्रुता करता है, तो मुझे बताना चाहिए कि मुझे इस विशाल दुनिया में जीने का अधिकार है।

इसी आशय की प्रार्थना निम्न लिखित मंत्र में की गई है—

दृते दृह मा मित्रस्य मा चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।। यजु० 36।18 ।।

दृढ़ बनाने वाले परमात्मा! मुझे ऐसा दृढ़ बना कि सारे प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें। मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूं। हम सब एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

मन्त्र के अर्थ पर अन्त की ओर से विचार करें। आवश्यकता व्यापक मित्रता और सद्भावना की है। इसके लिए परमात्मा से याचना करते हैं। इस व्यापक मित्रता के लिए मैं अपने व्यवहार में इसे लक्ष्य के रूप में स्वीकार करता हूं और परमात्मा को साक्षी बनाकर कहता हूं कि मैं सबको मित्र भाव से देखता हूं। परन्तु यह तो पर्याप्त नहीं। दूसरों का भी मेरी ओर मित्र भाव होना चाहिए। जीवन में सफलता का यही मार्ग है।

(महात्मा वेदभिक्षुः जी द्वारा लिखित पुस्तिका 'विश्व को वेद का सन्देश' से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काले धन पर गुलगपाड़ा

राजनैतिक दृष्टि से मार्च और अप्रैल के महीने हलचल से भरे रहे। एक घटना ने दूसरी घटना को जन्म दिया। 13 मार्च को इण्डियन एक्सप्रेस और उसी ग्रुप के अन्य समाचारपत्रों ने प्रधान मंत्री के नाम राष्ट्रपति का पत्र प्रकाशित किया, जिसमें राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री के इस दावे का खंडन किया था कि वे महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी राष्ट्रपति को देते रहे हैं। उसी दिन इन पत्रों के संचालक रामनाथ गोयनका के घर छापा पड़ा और इन पत्रों के सलाहकार एस. गुरुस्वामी को गिरफ्तार कर लिया गया। मुकद्दमे की सुनवाई के दौरान अनेक नये तथ्य प्रकाश में आये, जिनमें से एक यह था कि वित्त मंत्रालय ने काले धन का पता लगाने के लिए फेयरफैक्स नामक विदेशी गुप्तचर एजेंसी की सेवायें लीं। (सम्भवत: इसी कारण 24 जनवरी को वित्त मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को वित्त मंत्रालय से रक्षा मंत्रालय भेज दिया गया था) फेयरफैक्स को क्या उत्तरदायित्व सौंपा गया था, इस पर खूब बाल की खाल खींची गई।

वित्तराज्य मंत्री श्री ब्रह्मदत्त को संसद् के विपक्षी सदस्यों के अनेक कठिन प्रश्नों के उत्तर देने पड़े। संसद में कई दिन तक गुलगपाड़ा मचता रहा। अन्तत: प्रधान मंत्री ने दो न्यायाधीशों के एक आयोग के गठन की घोषणा कर दी, लेकिन सदस्य सन्तुष्ट न हुए। उनकी मांग थी कि सारे मामले की जांच के लिए संसदीय समिति गठित की जाये। उक्त आयोग के गठन के बाद सम्भवत: प्रधान मंत्री की ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए रक्षा मंत्री ने 9 अप्रैल को रक्षा मंत्रालय द्वारा सात वर्ष पूर्व खरीदी गई पनडुब्बियों में कमीशन की वसूली की जांच का आदेश दे दिया। अब रक्षा मंत्री का अपने पद पर बने रहना कठिन हो गया और उन्होंने 12 अप्रैल को त्यागपत्र दे दिया। अभी यह मामला ठंढा भी न हो पाया था कि स्वीडन की बोफोर्स कम्पनी द्वारा तोपों की बिक्री के लिए एजेंटों को बड़ी-बड़ी राशियां देने का आरोप लगाया गया। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक इस मामले पर ले-दे हो रही है। त्यागपत्र देकर श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह हीरो बन गये थे, लेकिन बारबार श्री राजीव गांधी के प्रति निष्ठा की शपथ खाने का परिणाम यह निकला है कि लोग कहने लगे हैं कि "इनकी रीढ़ की हड्डी नहीं है और ये सरकार के पालतू हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीन विद्वानों का वियोग

अप्रैल में तीन विद्वान् हमसे वियुक्त हुए। प्रथम हैं श्री चारुदेव शास्त्री। उनकी उम्र 90 वर्ष थी। वे आधुनिक समय के पाणिनि माने जाते थे। वर्षों लाहौर के डी. ए.-वी. कालेज में प्रोफेसर रहे। उनके सुपुत्र प्रो. सत्यव्रत शास्त्री दिल्ली विश्वविद्यालय में चिरकाल तक संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे। चारुदेवजी ने संस्कृत में निबन्धों की एक पुस्तक लिखी थी, जिसकी साहित्यिक भाषा की छटा देखते ही बनती थी। वे वेदों के प्रेमी थे और वेद गोष्ठियों व संस्कृत गोष्ठियों में नियमित रूप से उपस्थित होते थे।

द्वितीय विद्वान् हैं श्री शुचिव्रत शास्त्री। वे प्रसिद्ध विद्वान् पंडित राजाराम शास्त्री के सुपुत्र थे, जो लम्बे समय तक लाहौर के डी. ए.-वी. कालेज में संस्कृत के प्रोफ़ेसर रहे। शुचिव्रत जी भी अपनी उम्र के अधिकांश समय लाहौर के डी. ए.-वी. कालेज में संस्कृत के प्रोफेसर रहे। अनेक वर्षों तक आर्यसमाज अनारकली (लाहौर) के मन्त्री रहे। वैद्य गुरुदत्त ने अनेक धर्मग्रन्थों की जो टीकायें लिखी हैं, वे उनके लेखन में उनके सहायक थे। विद्वान होने के साथ वे सेवा भावना से भी ओतप्रोत थे।

तृतीय सज्जन का व्यक्तित्व बहु-आयामी था। वे हैं श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'। अज्ञेय जी अनेक क्षेत्रों में चमके। लेकिन प्रकाश में तभी आये, जब सन् 1965 में उन्होंने 'दिनमान' का सम्पादक बन कर यह पत्रिका निकालनी प्रारम्भ की। उससे पूर्व उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत न था। बाद में वे नवभारत टाइम्स के भी सम्पादक बने। जिन क्षेत्रों में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, उनकी सूची बहुत लम्बी है। उनके पिता डा. हीरानन्द शास्त्री पुरातत्व विशेषज्ञ थे। अज्ञेय जी संस्कृत के विद्वानों का बहुत आदर करते थे। हिन्दी जगत् में बहुत कम ऐसे व्यक्ति होंगे, जिन्हें अज्ञेय जी जितना सम्मान मिला हो। वे अगणित बार पुरस्कृत किये गये।

तीनों विद्वानों को हमारा शत-शत नमन। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

—सत्यपाल शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिवकुमार गोयल पुरस्कृत

गाजियाबाद। देश के ख्यातिप्राप्त हिन्दुत्वनिष्ठ पत्रकार एवं जनज्ञान के सुपरिचित लेखक श्री शिवकुमार गोयल को स्थानीय चौधरी गोष्ठी कक्ष में शेरसिंह सावित्री देवी ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सम्पादक श्री विनोदकुमार मिश्र ने श्यामसुन्दर चौधरी साहित्य पुरस्कार प्रदान किया और श्री गोयल के संघर्षशील और सजग व्यक्तित्व की सराहना की।

समारोह में श्री गोयल को 2,100 रुपये की राशि, दीपदान व प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। गाजियाबाद जिला पत्रकार संघ की ओर से श्री तेलूराम काम्बोज ने श्री गोयल को अभिनन्दनपत्र भेंट किया।

श्री गोयल ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि लेखन को अच्छे ध्येय की भावना से करने की जरूरत है। सनसनीखेज पत्रकारिता का सीमा से ज्यादा बढ़ना समाज के लिए शुभ संकेत नहीं।

'क्रान्तिकारी सावरकर' पुरस्कृत

श्री गोयल की पुस्तक "क्रान्तिकारी सावरकर" को शकुन्तला सिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया है।

इलाहाबाद की इस संस्था ने इस पुस्तक को राष्ट्रीयता की प्रेरक व बाल साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तक माना है।

'क्रान्तिकारी सावरकर" में बच्चों के लिए महान् देशभक्त स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर के क्रान्तिकारी जीवन के प्रेरक प्रसंग सरल भाषा में दिये गए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राम जन्मभूमि पर कोई समझौता नहीं करेंगे : पंडिता राकेशरानी

अजमेर, 9 अप्रैल। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडिता राकेश रानी ने कहा है कि राम जन्मभूमि पर हिन्दू कोई समझौता नहीं करेंगे।

किशनगढ़ से 25 किलोमीटर दूर रूपनगढ़ में हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने सरकार से अपील की कि वह राष्ट्रविरोधी ताकतों का दृढ़ता के साथ मुकाबला करें तथा एक और पाकिस्तान बनने से रोकें।

उन्होंने कहा कि उन पर सरकार ने 41 आपराधिक मुकद्दमे इसलिए चला रखे हैं, क्योंकि वे हिन्दुत्व की रक्षा और देश के प्रति निष्ठा की बात कहती हैं, जबकि बोट क्लब पर राष्ट्रविरोधी धमकीभरे भाषण देने वाले लोगों के ख़िलाफ कोई कारंवाई नहीं की जाती। उन्होंने कहा कि "पाकिस्तान जिन्दाबाद" का नारा लगाने वालों को भारत से निकाला जाना चाहिए।

उन्होंने हिन्दुओं से अपील की कि वे वर्तमान संकट में सभी भेदभाव भुलाकर संगठित हों और अपने आपको एक राजनैतिक शक्ति का रूप दें। तभी उनकी बात सुनी जाएगी।

सम्मेलन में बोलते हुए दयानन्द संस्थान के मंत्री प्रो० धर्मवीर ने कहा कि हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन के लिए हम भी जिम्मेदार हैं, क्योंकि हम अपने ही समाज के लोगों से भेदभाव पूर्ण बरताव करते हैं। उन्हें जोड़ते नहीं, तोड़ते हैं।

इससे पूर्व पंडिता राकेशरानी जी ने आर्यसमाज किशनगढ़ के साप्ताहिक सत्संग में अपने सारगर्भित विचार प्रकट किये।

आर्यसमाज अकोला का उत्सव

अकोला (महाराष्ट्र)। स्थानीय आर्यसमाज का उत्सव 25 से 27 मई तक मनाया जा रहा है। अनेक विद्वान, संन्यासी, महात्मा और भजनोपदशक जनता का मार्गदर्शन करेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप जैसी सुयोग्य विदुषी नारियां बहुत कम हैं

आदरणीय बहन राकेशरानी जी,

स्नेहभरी नमस्ते।

आपका भेजा हुआ हिन्दू जागृति विशेषांक प्राप्त हुआ। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई।

भारत में आप जैसी सुयोग्य विदुषी नारियाँ बहुत कम हैं। आपकी पत्रिका पढ़कर हमें प्रेरणा मिलती है। यह देशभक्ति के भावों का प्रसार करती है।

हमारा देश अपना गौरव खो रहा है। हम अपने धर्म और कर्त्तव्य से च्युत हो रहे हैं। यही कारण है कि हमें अधिकतर क्षेत्रों में असफलता का मुंह देखना पड़ रहा है।

हमारे मन में अपने पूज्य भाई भारतेन्द्र नाथ जी के लिए अगाध श्रद्धा है। उन जैसा आदर्श और जीवनदानी सज्जन अब आर्यसमाज में दिखाई नहीं देता। आपकी सदिच्छायें पूर्ण हों। आपका मिशन सफल हो। आपका कार्य आगे ही आगे बढ़ता रहे।

आज भारत की युवा पीढ़ी पथभ्रष्ट हो रही है। नैतिकता का ह्रास हो रहा है। सिनेमा और टेलीविजन से हमारा पतन हो रहा है। देश के प्रति निष्ठा कम हो रही है। कौन हमारी भावनाओं में पवित्रता भरेगा? हिन्दू समाज लक्ष्यहीन है। सुरा, सुन्दरी और सत्ता के मोह जाल में फंसा हुआ है। हिन्दू समाज सच्चे धर्म से विमुख हो रहा है। परमात्मा ही इसे सद्बुद्धि दे।

मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि वह आपको शतायु करें।

नागपुर

—चन्द्रकांता विद्यालंकृता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपमें हिम्मत है—हौसला है

पंडिता राकेशरानीजी, नमस्ते।

मैंने समाचारपत्र में पढ़ा कि आप पर दो मुकद्दमे और दायर हो गये हैं। आप में हिम्मत है—हौसला है। आप नारी जाति के लिए गौरव करने योग्य हैं। स्वाधीन भारत में अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए आपने बहुत कष्ट उठाये हैं। आपने नारी जाति का यश उज्ज्वल किया है। मैंने पंजाब केसरी के 13 मार्च 1987 के अंक में आपके पतिदेव महात्मा वेदभिक्षुः जी के सम्बन्ध में श्री सत्यपाल शास्त्री का लेख (महात्मा वेदभिक्षुः की स्मृति) पढ़ा। मेरा हृदय बहुत प्रसन्न हुआ। आने वाली पीढ़ियां उन्हें याद रखेंगी। भारत माता को आप जैसी सन्तान की आवश्यकता है।

देहरादून

शिवनाथ आर्य

आर्य हवन सामग्री

आयुर्वेदिक ताजा जड़ी-बूटियों से निर्मित यज्ञ से समस्त घर को सुवासित करने वाली अपूर्व सुगन्धयुक्त, कीटाणुनाशक, स्वास्थ्यवर्द्धक, उत्कृष्ट, रोग-नाशक और पौष्टिक आर्य हवन सामग्री से ही प्रतिदिन हवन करें।

1. स्पेशल चन्दन वाली गुग्गुल युक्त हवन सामग्री का भाव 25 रु. किलो है। 2. सुगन्धित हवन सामग्री का भाव 10 रु. किलो है। 3. सामान्य हवन सामग्री का भाव 8 रु. किलो है।

आर्डर निम्न लिखित पते पर भेजें—

धर्मवीर आर्य झंडाधारी

अध्यक्ष, आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला,

9857 अहाता ठाकुर दास,

सराय रुहेला, नई दिल्ली-5

दूरवाणी : 586545

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विघटनकारी तत्वों का तुष्टीकरण कब तक ?

—धर्मपाल शर्मा

राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद के विवाद ने विस्फोटक रूप धारण कर लिया है। समझौतावादी विचारकों द्वारा इस संबंध में जो लचर तर्क पेश किये जा रहे हैं, दूरगामी राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से उनमें कोई तर्क-संगतता नहीं है।

वस्तुत: जिस स्थल पर विवाद है, वह ऐतिहासिक राम जन्मभूमि ही है या नहीं, और उसे तोड़कर बाबरी मस्जिद बनाई गई है या मस्जिद का स्वतंत्र अस्तित्व है, जैसे प्रश्नों को ऐतिहासिक प्रयासों से सुलझाने की बजाय तुष्टीकरण के ढंग से सुलझाने की कोशिशें की जा रही हैं। शांति और सदभाव की दुहाई देते हुए कहा जा रहा है कि इस मुद्दे पर मुस्लिम भाइयों की भावनाएं उत्तेजित हैं, बेकार तनाव बढ़ाने की बजाय यथास्थिति कायम रहने दी जाये या इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया जाये। यह भी कहा जा रहा है कि हिन्दू समाज सहिष्णु और उदार है और वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे आदर्शों को मानता है अत: अपनी विशाल दृष्टि का परिचय देते हुए उसे छोटे-से भूखण्ड पर झगड़ा नहीं करना चाहिए और यदि इतने मात्र से ही मुस्लिम बन्धु शांत हो जाते हैं तो वह स्थल उन्हें सौंप कर राम मन्दिर थोड़ा हटकर बना लेना चाहिए। आखिर अयोध्या में जगह की कमी तो है नहीं।

किन्तु हिन्दू समाज को इस प्रकार की भ्रामक उदारता और विशालता की शिक्षा देने वाले इस ऐतिहासिक सत्य को भूल जाते हैं कि विशालता और उदारता अच्छी बातें होते हुए भी संस्कृतियों और राष्ट्रों की रक्षा नहीं कर पातीं बल्कि मानवीय धरातल के ये सद्गुण अनेक बार संस्कृति के अवमूल्यन और राष्ट्र के पतन के कारण बने हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू समाज का इतिहास साक्षी है कि इसके प्रतापी सम्राट् पृथ्वीराज ने सोलह बार आक्रान्ता मुहम्मद गौरी को इसीलिए माफ किया था, क्योंकि उनका भारतीय संस्कृति की उदारता और क्षमाशीलता में विश्वास था। किन्तु इस भूल का उन्हें इतना भंयकर परिणाम भुगतना पड़ा कि सत्रहवीं बार मुहम्मद गौरी ने न केवल छलपूर्वक पृथ्वीराज को परास्त ही किया बल्कि उनकी आँखे फोड़कर हत्या भी कर डाली।

इसी प्रकार महाराजा रणजीत सिंह ने भी उदारता का परिचय देकर मुसलमानों को मस्जिदें बनाने और अपने ढंग से पूजा करने का अधिकार प्रदान किया था। हिन्दू पद पादशाही की स्थापना करने वाले शिवाजी की विशालहृदयता **और** सहिष्णुता भी जग जाहिर हैं। अपने राज्य में उन्होंने मुस्लिम संप्रदाय और अन्य मतों के मानने वालों को पूरी छूट दे दी थी।

किन्तु तसवीर का दूसरा पहलू बताता है कि भारतीय संस्कृति के इन उदात्त जीवन मूल्यों की रक्षा तभी तक संभव हो सकी, जब तक सत्ता सूत्र इस संस्कृति के मानने वाले हिन्दू शासकों के हाथों में रहे। इसके विपरीत जब भी ये सूत्र खिसक कर अन्य संस्कृति वालों के हाथों में गए, इन मूल्यों पर भारी आघात किया गया।

आक्रांता बाबर और उसके वंशज औरंगजेब ने हिन्दू मान्यताओं, भारतीय संस्कृति की उदार परम्पराओं और हिन्दू पूजास्थलों पर जो बर्बर आक्रमण किये वे आज भी इतिहास के पन्नों में अंकित हैं।

यह सच है कि 15 करोड़ के लगभग मुसलमान बाहर से नहीं आए बल्कि वे इसी देश के निवासी और धर्म परिवर्तन द्वारा मुसलमान बने हैं। किन्तु इस तथ्य को भी भुलाया नहीं जा सकता कि उनमें से एक बहुत बड़ा वर्ग अपने आपको इस देश के गौरवपूर्ण इतिहास, परम्परा और सांस्कृतिक विरासत से नहीं जोड़ पाया बल्कि उसकी आस्था के केन्द्र हमेशा देश के बाहर रहे। यही कारण है कि अशोक मेहता की रिपोर्ट के अनुसार सन 1947 में भारत के 97 प्रतिशत मुसलमानों ने अपनी अलग संस्कृति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की पहचान के नाम पर पाकिस्तान के समर्थन में मतदान किया था। ऐसा समझा गया था कि इस दुःखद अध्याय के बाद भारत में वही लोग बचे रह गये, जो इस देश की संस्कृति, इतिहास और परम्पराओं में विश्वास रखते थे परन्तु देखा इसके विपरीत ही गया कि पिछले 40 वर्षों में मुस्लिम साम्प्रदायिकता ने फिर तेजी से सिर उठाया और अपनी अलग पहचान के संघर्ष को बढ़ाते हुए बहुसंख्यक वर्ग की संस्कृति पर आक्रमण करने की नीति शुरू कर दी। उदाहरणस्वरूप जम्मू-कश्मीर में हिन्दू संस्कृति के उस प्राचीन दिव्य ग्रंथ गीता पर प्रतिबन्ध की मांग की गई, जिससे धर्म या सांप्रदायिकता का कोई सम्बन्ध नहीं था, दूरदर्शन पर रामायण जैसे उदार चरित्र के सीरियल दिखाने का विरोध किया गया और पाठ्यक्रम में से संस्कृत के नीति श्लोकों को निकालने की मांग की गई। सवाल उठता है कि इस देश की संस्कृति को, जिससे इस देश का चरित्र प्रकट होता है, इसकी दुनिया में पहचान होती है, उसे नकारने और उसके विरोध करने का आखिर प्रयोजन है? अपनी पृथक् पहचान के नाम पर पाकिस्तान प्राप्त कर लेने के बाद इस संस्कृति की पहचान और इसकी राष्ट्रीयता पर हमले करने का यह इरादा क्यों?

इसके पीछे छिपी मानसिकता को समझे बिना और कटु सत्य को स्वीकार किये बिना शतुर्मुर्ग की तरह मुंह ढांप लेने से हम सांप्रदायिकता के अजगर से बच नहीं सकेंगे बल्कि वह अधिक आक्रामक और भयानक रूप धारण कर राष्ट्रीय एकता और अखंडता को लील जाने की कोशिश करेगा।

हिन्दू आदर्शों की दुहाई देकर और इसकी विशालता का राग अलाप कर न केवल हिन्दू समाज और संस्कृति को ही हानि पहुंचाई गई है बल्कि इस देश की राष्ट्रीय पहचान को समाप्त कर इस देश के टुकड़े करने की साजिश भी की गई है। ये तत्व जानते हैं कि इस देश की एकता की कड़ी इसका सांस्कृतिक विकास ही है जिसने इसे हजारों साल से जोड़े रखा है। अतः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसे तोड़ा गया तो इस के टूटने से देश का राष्ट्रीय समाज टुकड़ों में बंट जायेगा और फिर देश के टुकड़े करना सरल हो जायेगा।

इस योजना के तहत देश के मानबिन्दुओं का सदैव विरोध किया गया है। राम-कृष्ण किसी पन्थ के नहीं समूचे भारत के आराध्य हैं, शिवाजी और राणा प्रताप किसी वर्ग के नहीं, इस देश की स्वतंत्रता के सेनानी हैं, गौ और गंगा किसी मजहब के नहीं, इस देश की प्राचीनता के पावन मान-बिन्दु हैं। इनका विरोध इस देश की राष्ट्रीयता का विरोध है, लेकिन अल्पसंख्यक वर्ग द्वारा यह निरन्तर किया गया। केवल इसीलिए किया गया कि वे इस **देश की** राष्ट्रीय पहचान को समाप्त कर इसे लुंज-पुंज जन समूह में बदल देने को आतुर रहे हैं। इसके पीछे मुस्लिम सांप्रदायिकता की एक गहरी और स्पष्ट मानसिकता है और वह यह कि कट्टरपंथी मुस्लिम नेतृत्व इस देश के मुसलमानों को आक्रमणकारियों से जोड़कर उन्हें विजेता दिखाना चाहता है। वह उनमें इसी मातृभूमि का पुत्र होने की भावना जमाने की बजाय उन्हें बहुसंख्यक हिन्दुओं से अलग आक्रामक और विजेता समझने का भाव जमाना चाहता है। उन्हें इससे संतोष नहीं कि मुसलमान इस देश के नागरिक के नाते बड़े-बड़े पदों पर हैं, मन्त्रिमंडलों के सदस्य हैं, देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद तक पर रहे हैं, बल्कि इस नेतृत्व की मानसिकता यह है कि वह इस देश की महान् उदात्त संस्कृति को नष्ट कर यहाँ अरब से आयातित इस्लामी संस्कृति की स्थापना कर इस्लामी राष्ट्र बना सकें। वे मुसलमानों के मस्तिष्क से धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता और बन्धुत्व के भाव निकालकर उनके मन में बाबर के वंशज होने की मानसिकता जमाना चाहते हैं।

खतरनाक मानसिकता

निश्चय ही यह मानसिकता बहुत खतरनाक है। मुसलमान इस देश के नागरिक हैं। शासन में उनकी पूरी भागीदारी है, रहनी चाहिए पर किसी को यह छूट कैसे दी जा सकती है कि वह इस देश की राष्ट्रीय पहचान को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही नष्ट करने पर तुल जाये। राष्ट्रीयता के नाम पर इस देश के विशिष्ट धर्मनिरपेक्ष, समतावादी, समाजवादी राष्ट्रीय स्वरूप को नष्ट कर किसी वर्ग को इसे इस्लामी राष्ट्र या ईसाई राष्ट्र बनाने की छूट कैसे दी जा सकती है ?

वास्तविकता यह है कि राम जन्मभूमि के स्थान पर बाबरी मस्जिद की स्थापना का आग्रह इसी मानसिकता का परिणाम है। यही कारण है कि कट्टर मुस्लिमपंथी वर्ग बहुसंख्यक समाज की हजारों वर्ष की आस्था को स्वीकार करने को तैयार नहीं, ऐतिहासिक प्रमाणों को मानने को तैयार नहीं और यहां तक कि अदालत के फैसले को भी मानने को तैयार नहीं। हालांकि राम जन्मभूमि के दावे को मानने के लिए बन्धुत्व के आधार पर इतना ही काफी था कि हजारों वर्ष से जबकि बाबर यहां आया भी नहीं था, अयोध्या में राम का जन्म निर्विवाद रहा है और राम बहुसंख्यक हिन्दू समाज के परम आराध्य रहे हैं।

यदि बाबरी मस्जिद वहां बन भी गई तो क्या हिन्दुओं के परम आराध्य राम के जन्म स्थल पर वह उनकी सहमति से बन गई। आक्रांता द्वारा मन्दिर तोड़कर बनाई गई मस्जिद को बरकरार रखने का आग्रह मस्जिद के अस्तित्व के कारण नहीं है, धार्मिक भावना के कारण नहीं है बल्कि इसलिए है कि कट्टरपंथी मुस्लिम वर्ग आक्रमण के चिह्न बरकरार रखकर भोले-भाले मुसलमानों में यह जहर फैलाये रखना चाहता है कि वे आक्रामक बाबर के वंशज हैं, वे उस विजेता शासक के वंशज हैं, जिसने इस देश को जीतकर यहां शासन किया था। वे इस देश के बहुसंख्य समाज से ऊपर हैं, अल्पसंख्यक होते हुए भी बराबर नहीं हैं बल्कि विजेता हैं और उन्हें फिर से इस्लामी साम्राज्य स्थापित करना है। इसलिए आक्रमण के ऐसे सभी चिह्नों को बरकरार रखना है और बहुसंख्यक समाज को आहत और अपमानित किये रहना है कि वे शासित रहे हैं। हिन्दुओं और मुसलमानों में सद्भाव और बन्धुत्व नहीं बढ़ाना है बल्कि दूरी बढ़ानी है ताकि उनकी दुरभिसंधियां सफल हो सकें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजों ने मुसलमानों में अलगाव का भाव सशक्त बनाने के लिए यह साजिश की थी। उन्होंने सिखों को भी राष्ट्रीय पहचान से पृथक् करने के लिए भड़काया था, किन्तु स्वाधीनता की लड़ाई के समय हिन्दू-मुस्लिम नेतृत्व ने इस षड्यंत्र को समझ लिया था। इसलिए बन्धुत्व को बढ़ाने के लिए राम जन्मभूमि का विवाद सुलझा लिया था। इससे घबराकर अंग्रेजी सरकार ने कुछ हिन्दू और मुस्लिम नेताओं को फांसी पर चढ़ा दिया था।

अब सय्यद शहाबुद्दीन और मौलाना बुखारी जैसे कट्टरपंथी मुस्लिम नेता फिर उन्हीं अंग्रेजी षड्यत्रों को साकार कर रहे हैं। उन्हें बन्धुत्व और सद्भाव से कोई सरोकार नहीं। राम जन्मभूमि यदि बहुसंख्यक समाज के दावों को दर किनार कर उन्हें सौंप भी दी जाये तो भी उनकी यात्रा पूरी नहीं होगी, क्योंकि राम जन्मभूमि की जगह बाबरी मस्जिद बरकरार रखना उनका अभीष्ट नहीं है। उन्होंने अपना इरादा छिपाया भी नहीं है। उन्हें भय है कि मुस्लिम आक्रमण के दौरान ध्वस्त किए गए शेष हिन्दू धर्म-स्थलों को भी कहीं वापस लेने की मांग न की जाये। आखिर ऐसी मांग गलत क्यों होगी ? आक्रामक बाबर और औरंगजेब ने हिन्दुस्थान के जिन पवित्र धर्मस्थलों को तोड़कर मस्जिदें बनाली थीं, आक्रमण के उन चिह्नों को बनाए रखने में इन नेताओं की रुचि क्या उपरोक्त कारण से ही नहीं है ? क्या इसीलिए वे सन् 1947 की स्थिति को कायम रखने की बात करते हैं ?

किन्तु किसी भी मानवीय एवं ऐतिहासिक न्याय सिद्धांत की दृष्टि से इस तर्क का खंडन नहीं किया जा सकता कि किसी आक्रमणकारी द्वारा पददलित किए गए पूजा स्थल स्वाधीनता के बाद उस देश के धर्मावलम्बियों को लौटा दिए जाएं, क्योंकि सवाल भूमिखंडों का नहीं, बल्कि आक्रमण के चिह्नों को मिटाकर उस समाज के आहत घावों को सहलाने का है। यही नहीं कि हिन्दू धर्मस्थलों को उनके मूल रूप में लौटाया जाना जायज है बल्कि स्वाधीनता के पूर्व यदि किसी हिन्दू राजा ने किसी मस्जिद को तोड़-कर मन्दिर बना दिया होता या मुगल शासकों ने गिरजे को तोड़कर मस्जिद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बना दिया होता तो उसे भी इन साम्प्रदायों को लौटाये जाने की मांग की जाती, जो जायज होती। क्या किसी आक्रमणकारी ने कभी पवित्र मक्का मस्जिद पर अधिकार कर लिया होता तो मुसलमानों द्वारा स्वाधीन होने पर उसे वापस लेने की मांग नाजायज होती ?

किसी स्वाधीन देश में आक्रमण के चिह्नों को हटा देने की सर्वमान्य परम्परा रही है। भारत में भी यह काम स्वाधीनता के तुरन्त बाद ही हो जाना चाहिए था। सरदार पटेल ने सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार करके इस परम्परा की शुरुआत भी की थी। अंग्रेजी हकूमत के चिह्न विक्टोरिया मेमोरियल को भी इसीलिए हटाया गया था कि वह गुलामी की याद दिलाता था। अंग्रेजी शासकों के नाम पर बने भवनों के नाम बदलने पर भी आपत्ति नहीं की गई। बाबर और औरंगजेब के आक्रमण चिह्नों को हटाना किस तर्क से गलत है, वह भी तब जबकि हिन्दुओं को अपमानित करने के लिए उनके पूजा स्थलों पर मस्जिदें बनाई गई थीं। क्या इसलिए गलत है कि मुसलमानों का एक वर्ग अपने आपको आक्रान्ताओं से जोड़े रखना चाहता है ?

धर्मनिरपेक्षता और साम्प्रदायिक सद्भाव के नाम पर किसी देश में बहुसंख्यकों की भावनाओं का अपमान नहीं किया जाता। ब्रिटेन और अमरीका में धर्मनिरपेक्षता की संकल्पना है पर इस कारण वहां के राजकाज के लिए प्रयुक्त प्राचीन कैथोलिक धर्म का अपमान करने की कोई हिम्मत नहीं करता या इस कारण कोई ब्रिटेन पर सांप्रदायिकता का आरोप नहीं लगा देता कि उनके उत्सव कैथोलिक पूजा पद्धति से क्यों शुरू होते हैं।

धर्मनिरपेक्षता के भारतीय ढांचे में मुसलमानों को अपने ढंग से जीने का पूरा अधिकार है, जबकि उनकी आस्था वाले मुस्लिम देशों में तो अन्य किसी पूजा पद्धति के लिए स्थान ही नहीं है। बहुसंख्या में होने के बावजूद हिन्दू समाज ने संख्या के बल के कारण अपने मूल्यों को किसी अल्पसंख्यक वर्ग पर लादने की कोशिश नहीं की, किन्तु सहिष्णुता के नाम पर क्या यह उचित होगा कि उनकी आस्थाओं और मूल्यों पर आक्रमण किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहिष्णुता और उदारता का उपदेश देने वाले उदार चिन्तकों को याद रखना चाहिए कि पृथक्‌तावादी मानसिकता के तुष्टीकरण से समस्याएं कभी हल नहीं होतीं, शांति और सद्‌भाव स्थापित नहीं होता बल्कि पृथक्‌ता फलती-फूलती ही है।

महात्मा गांधी के खिलाफत आन्दोलन में सहयोग देने पर भी आखिर पाकिस्तान की रचना हुई थी। अकाली सांप्रदायिकता को निरन्तर तुष्ट करने का नतीजा खालिस्तान की मांग के रूप में उभर कर आया। आदम सेना और सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन का गठबंधन और कश्मीर में जमाअते तुलबा तथा सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन का गठबंधन साफ इंगित करता है कि कट्टरपंथियों के इरादे इस देश के विभाजन के हैं। ऐसे तत्वों के लिए बाबरी मस्जिद का प्रश्न भी इसी मानसिकता को बल देने के लिए है। क्या कट्टर-पंथी मुस्लिम सांप्रदायिकता को तुष्ट करके एक और पाकिस्तान की मांग का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा?

इस मुस्लिम साम्प्रदायिकता का समर्थन करने और हिन्दुओं को झुकने की बात कहने वाले विचारक देश की सेवा नहीं कर रहे। मुस्लिम साम्प्रदायिक नेताओं को भी समझना चाहिए कि सन् 1947 जैसी स्थिति अब नहीं दोहराई जा सकती। मुस्लिम नेताओं की इस धमकी से कि 20 करोड़ लोग (वास्तव में मुस्लिम आबादी 15 करोड़ है) सड़कों पर आकर फैसला करने लगे तो देश के लिए मुश्किल हो जायेगा, घबराकर झुक जाने से मामला शान्त नहीं होगा। इस धमकी और अन्याय की प्रतिक्रिया से 60 करोड़ हिन्दू समाज के कदम भी यदि साम्प्रदायिकता की ओर मुड़ चलें तो अल्पसंख्यकों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

बहुसंख्यक सांप्रदायिकता भड़कना निश्चय ही खतरनाक है अतः उसके उपदेश देने या उसके वैचारिक दमन से समस्या नहीं सुलझेगी। उदार चिंतकों और कट्टरपंथी नेताओं को चाहिए कि बढ़ती हुई मुस्लिम सांप्रदायिकता को नकारें। इस तथ्य को समझना होगा कि मामला बाबरी मस्जिद का नहीं, एक गलत मानसिकता का है—न्याय और अन्याय के बीच निर्णय का है।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी का वर्चस्व क्यों नहीं बढ़ रहा ?

—बिशनस्वरूप गोयल

हमारे देश के हरयाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा बिहार ये सभी हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश हैं। किन्तु यहीं लोग हिन्दी का कम से कम प्रयोग करते हैं और नित्य अंग्रेजी के प्रति इनका प्रेम बढ़ता जा रहा है और ये हिन्दी का बहिष्कार करते जा रहे हैं। यहां तक कि ये लोग अपने घरों में अपनी पत्नी, बच्चों तक से अंग्रेजी में ही बातचीत करने में गौरव समझते हैं। इससे भी आगे वे अपने घरों पर नामों के पट्ट भी अंग्रेजी में लगाते हैं, दुकानों के पट्ट भी जिन्हें अंग्रेजी में साइनबोर्ड कहा जाता है, अधिकतर अंग्रेजी में लिखवाते हैं। यही नहीं, शादी विवाह, जन्म दिन, बधाई, शुभकामनाओं आदि के पत्र भी अंग्रेजी में ही प्रकाशित कराते हैं, जबकि उन्हें तो हिन्दी भाषा भाषी होने के कारण हिन्दी को पूरी तरह से अपने व्यवहार में अपनाना चाहिए। किन्तु वे ऐसा नहीं करते। वे अपने बच्चों से डैडी, पापा कहलवाने में शान समझते हैं, जबकि मां और पिता शब्द में जो प्यार झलकता है, वह डैडी और पापा शब्द में लेशमात्र भी नहीं। किन्तु ये लोग अंग्रेजियत के इतने गुलाम हो गये हैं कि परस्पर बात चीत करते हुए भी खिचड़ी भाषा बना देते हैं। हिन्दी बोलते-बोलते अंग्रेजी के शब्दों का समावेश कर देते हैं।

हम जिन लोगों को हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने में बाधक समझते हैं, उनका जायजा लें तो पता लगेगा कि वे जब आपस में बात-चीत करते हैं तो वे सभी अपनी प्रादेशिक भाषा में ही बोलते हैं, अंग्रेजी का प्रयोग नहीं करते। वे अपने घरों में भी पूरी तरह से अपनी ही भाषा का उपयोग करते हैं। अपने नामों के पट्ट भी अपनी भाषा और सभी प्रकार के निमंत्रणपत्र आदि भी अपनी भाषाओं में लिखवाते हैं। यहां तक कि उनकी दुकानों की पट्टिकायें भी अधिकतर उनकी अपनी भाषा में ही होती हैं। फिर हम उन्हें यह कैसे कह सकते हैं कि वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं बनने देते। हिन्दी का विरोध अंग्रेजी से है न कि प्रादेशिक भाषाओं से अंग्रेजी का प्रयोग सबसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिक हिन्दी भाषी लोग ही करते हैं और उनका हिन्दी बहिष्कार तथा अंग्रेजी के प्रति प्यार बढ़ता ही जा रहा है। यहां तक कि आजकल तो हिन्दी-भाषी क्षेत्रों के गांवों तक में भी पापा और डैडी शब्द का प्रचार हो चुका है।

इसी प्रकार सरकार की नीति को ले लीजिए। सरकार के स्पष्ट आदेश हैं कि हिन्दी में कार्य करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं किन्तु सरकारी दफ्तरों में अंग्रेजियत के गुलाम हिन्दी में काम करने में बहुत बड़े बाधक हैं। जो हिन्दी में काम करता है उससे जवाब तलब किया जाता है, उसकी तरक्की रोक दी जाती है या उसे अन्य प्रकार से परेशान किया जाता है। ऐसे करने वाले अधिकतर लोग हिन्दी भाषी क्षेत्रों के ही लोग हैं।

प्रतिवर्ष हमारे देश में सरकारी तौर पर और सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा हिन्दी दिवस और पर हिन्दी सप्ताह मनाया जाता है। लेकिन वह केवल दिखावा मात्र है। उसके माध्यम से लोगों ने दुकानें चला रखी हैं। इस काम के लिए सरकार से जो धन प्राप्त होता है उसे हड़पने मात्र का ही कार्य होता है। जो लोग इन हिन्दी सप्ताहों का आयोजन करते हैं, उनके नामों के पट्ट अंग्रेजी में ही होंगे, उनके बच्चे भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ते हैं और घरेलू व्यवहार में भी अंग्रेजी का ही अधिक प्रयोग होता है। यदि वे व्यापारी हैं तो उनकी दुकानों की पट्टिकायें भी अंग्रेजी में ही लिखी होंगी। उनके निमन्त्रण पत्र भी अधिकतर अंग्रेजी में ही छपते हैं।

जिस देश की अपनी कोई भाषा नहीं होती वह देश बहुत दिन जीवित नहीं रह सकता और एक न एक दिन पतन के गर्त्त में चला जाता है। आज हम देखते हैं कि हम विदेशी भाषा अंग्रेजी का प्रयोग करने में ही गौरव अनुभव करते हैं और हिन्दी बोलने में तौहीन समझते हैं। यदि कोई इंगलैण्ड का रहने वाला अंग्रेज हिन्दी जानता है तो वह अपने देश में या घर में हिन्दी बोलने में अपना गौरव नहीं समझता और न वह उसका प्रयोग ही करता है। दूसरी ओर हम हिन्दीभाषी लोग हैं, जो अपनी भाषा को छोड़कर विदेशी भाषा बोलने में गौरव समझते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि वास्तव में हमारे देश के हिन्दीभाषी लोग हिन्दी को पूरी तरह से अपने जीवन में आत्मसात् कर अंग्रेजी का पूरी तरह बहिष्कार कर दें तो कोई कारण नहीं कि हिन्दी राष्ट्रभाषा न बन सके। किन्तु वे इस काम को सच्चाई और ईमानदारी से करना ही नहीं चाहते। उनमें अंग्रेजियत की इतनी बू आ गई है कि वे उसे छोड़ना ही नहीं चाहते। हिन्दीभाषी लोग अपने सभी कामों में चाहे फिर वे निमन्त्रण पत्र हों या दुकान और घर की पट्टिकायें हिन्दी में लिखवायें और अपने घर पर डैडी, पापा की जगह माता जी, पिता जी सदृश शब्दों का प्रयोग करें तो कोई कारण नहीं कि हिन्दी राष्ट्रभाषा का स्थान ग्रहण न कर सके। किन्तु हिन्दी के शत्रु तो हिन्दी भाषा लोग स्वयं है जिन्हें अंग्रेजी से दिन प्रति_दिन प्यार बढ़ता जा रहा हे और जो हिन्दी का वहिष्कार करते जा रहे हैं। यदि हिन्दी भाषी लोग हिन्दी को पूरी तरह से अपना लें और अपने जीवन तथा दिनचर्या का अंग बना लें तो फिर हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने में देर नहीं लगेगी और न ही अन्य प्रादेशिक भाषा वाले ही इसका विरोध करेंगे, क्योंकि हिन्दी का विरोध देश की प्रादेशिक भाषाओं से नहीं। वे तो हमारी अपनी भाषायें हैं। हिन्दी का विरोध तो अंग्रेजी के प्रयोग से है। इस लिए अगर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना है (जैसा संविधान में लिखा है), तो सबसे पहले हिन्दीभाषी लोगों को पूरी तरह हिन्दी अपना कर अंग्रेजी का यहाँ तक वहिष्कार करना पड़ेगा कि अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के स्थान पर हिन्दी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा दिलानी होगी। तभी हम अपने संविधान का आदर कर हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के स्वप्न को साकार कर सकेंगे। ★

आर्यसमाज चाकन्द (गया) का चुनाव

गया। आर्यसमाज चाकन्द के चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—प्रधान—डा. के. पी. आर्य, मन्त्री—श्री मौजीलाल आर्य, उपमन्त्री—श्री वचवादेव मालाकार और कोषाध्यक्ष—श्री सरजूलाल।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

झूठी आधुनिकता का शिकार भारत

—शालिग्राम पाण्डेय

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान एक विद्या है, भाषा या देश नहीं है। इसलिए यह आवश्यक नहीं कि किसी भाषा-विशेष में लिखा गया विज्ञान ही प्रमाण हो। जिन देशों में अंग्रेजी नहीं बोली जाती उन देशों में भी विज्ञान अपनी गति के साथ उन्नति करता जा रहा है। किन्तु भारतीय मानस अंग्रेजी को अपने अधिक निकट अनुभव करता है। वह उसे किसी धनिक के पुत्र की सम्पत्ति की तरह माता से अधिक प्रिय है। इसलिए अंग्रेज तथा अंग्रेजी क्षेत्र में हो रही वैज्ञानिक प्रगति अधिक ममता-पूर्ण लगती हैं। अंग्रेजी वाले भी इसके लिए प्रयत्नशील हैं कि भारत उनके प्रभाव क्षेत्र से छिटक कर किसी दूसरे के प्रभाव क्षत्र में न जाये और न अपने स्वरूप में स्थित हो। अभी तक उनका मनोरथ पूरा होता रहा है। अंग्रेजी भाषा उनके लिए केवल विचार संप्रेषण का माध्यम न बन कर वर्चस्व स्थापना और भारत शोषण का माध्यम बनी हुई है। वे लोग एक पत्थर से दो शिकार कर रहे हैं। वे अपनी राजनैतिक घुसपैठ बनाये रखकर भारत को आत्मनिर्भर अथवा स्वतन्त्रचेता नहीं बनने दे रहे। वे चाहते हैं कि भारतीय उनके मुंह की ओर देखते रहें। वे उच्चता के दंभ में हमें नीचा समझते हैं। जो लोग भारत आते है उनके लिए स्वतंत्र भारत और पराधीन (गुलाम) भारत में कोई अन्तर नहीं पड़ा बल्कि स्वाधीन भारत के जो चित्र वे लोग दिखाते हैं, वे तो उससे भी अधिक घृणास्पद और भारत को नीचा दिखाने वाले होते हैं। स्वतत्रता से पहले भारत में आने वाले अंग्रेज इसे राजाओं, जादूगरों और अन्ध विश्वासों का देश कहते थे। पर आज आने वाले विदेशी इसे जाहिलों, भिखमंगों और भूखों का देश कहते है। आज हमारे देश में नागरिक चेतना की कमी है। इसके लिए हमें सोचना चाहिये कि हम भारतीयों को क्या करना है।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईसाई मिशनरी भारतीय सभ्यता के हनन के लिए काफी पैसे फेंक कर अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं। उनके पास कैमरे, टेपरिकार्डर आदि आधुनिक यन्त्र हैं।

परन्तु भारतीय ऋषियों ने जितना ज्ञान-विज्ञान मानव समाज को दिया उतना विश्व के किसी भी देश के वैज्ञानिकों या मनीषियों ने नहीं दिया। यह बात भले ही आश्चर्यजनक लगे लेकिन मिथ्या नहीं है। भारतीय ऋषियों की गवेषणाओं, स्थापनाओं की जो उपलब्धियां देखने को मिलती हैं, वे इतनी पूर्ण और महान् हैं कि उनसे एकाकार ही हुआ जा सकता है, उनका अतिक्रमण नहीं किया जा सकता। उनसे परे कुछ है भी नहीं।

मेरा विनीत आग्रह है कि जिस तरह से एक भारतीय जिज्ञासु किसी विषय को पढ़ता है, उसी तरह आज का वैज्ञानिक भारतीय ग्रन्थ को पढ़े तो उसे ज्ञात होगा कि भारतीय ग्रन्थों के निर्माता कितने विशाल शिला-फलक पर बैठे थे या अन्तरिक्ष की अपरिमेय उच्चता को देख रहे थे।

मेरे मन में अंग्रेजी या अंग्रेज के प्रति विद्वेष नहीं है, किन्तु जहां वे हमें पशु बनाये रखना चाहते हैं अथवा अपनी उच्चता को प्रमाणित करने के लिए हमें पिछड़ा हुआ बताते है, वहीं ठेस लगती है और मुझे ऐसे अनुभव होते हैं, जैसे किसी व्यक्ति को नहीं समग्र देश के इतिहास और संस्कृति के गौरव को ठोकर मार दी गई हो।

मैं यह नहीं कहता कि भारत में दरिद्रता नहीं है। भारत में भिक्षावृत्ति घिनौने रूप में है। किसी भी विशाल मंदिर और प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान के आसपास जमा भिखारियों की भीड़ देखकर मेरा मन भी रोता है। मैं भी इसे देखकर सोचता हूँ कि मेरे देश के पतित पावन भगवान् ऐश्वर्य के नीचे दबे हैं। उन्हें छप्पन भोग खिलाये जाते हैं और बाहर उसी नारायण का प्रतिरूप नर समस्त कुरूपता लिये सर्दी में ठिठुरता वर्षा में भीगता एक रोटी या पांच पैसे के सिक्के के लिए तड़पता रहता है।

दरिद्रता कहां नहीं है? जब तक कर्म भेद है तब तक योनि भेद है और यह भेद कर्म के अनुसार भोग तक चलता रहता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैसे भारत की सामाजिक व्यवस्था में भी दोष आ गये हैं। एक विकार पनपता जा रहा है पर उसे घृणा या उपहास का विषय नहीं बनाया जाना चाहिये।

प्रत्येक समस्या अपना समाधान स्वयं लाती है, मनुष्य उसे समझता है और समाधान का श्रेय प्राप्त कर लेता है। विश्व का प्राण गति है और गति में कोई वस्तु स्थिर नहीं रहा करती। इसलिए कोई भी समस्या शाश्वत नहीं। आज की स्थिति को देखकर हम खिन्न हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि चिन्तन का प्रकार बदला जाये, किसी भी रीति-रिवाज के अच्छे या बुरा होने का निर्णय लेने से पहले उसके परिप्रेक्ष्य को देख लिया जाये और फिर निष्पक्ष होकर मत अभिव्यक्त किया जाये। प्रश्न क्षेत्रीयता देशीयता या भाषा का नहीं है। प्रश्न है सहिष्णुता और सह-अस्तित्व का। अपने विश्वास और आस्था का सम्मान करने की स्वतंत्रता और सुविधा प्रत्येक व्यक्ति को होनी चाहिए।

जहां तक व्यक्ति का प्रश्न है वह अपने आप में निर्दोष है किन्तु जहां वह जातीय और सामाजिक विचारों का वाहक बन जाता है, वहां उसकी निष्पक्षता भंग हो जाती हैं। आज ऐसा ही कुछ हो रहा है, अंग्रेज या जर्मन, रूसी या जापानी मानव हैं, किन्तु उनका मोह जब उन्माद की सीमा तक पहुंच जाता है, तब वे आक्रामक बन जाते हैं। भारत की धर्म निरपेक्षता सर्व धर्म समभाव की स्थिति है। सर्व धर्म उपेक्षा की नहीं। हम किसी पर अपनी श्रेष्ठता लादने की कोशिश नहीं करते; न किसी को हेय बतलाते हैं।

अंग्रेजी भाषा या सभ्यता बुरी नहीं पर उसके आग्रह, उसके प्रकार और उसके आयाम हमारे इतिहास और वर्तमान से मेल नहीं खाते। स्थिति इतनी भयावह हो चुकी है कि हम अपने अस्तित्व, ऐतिहासिक परम्परा, संस्कृति और गौरव को ही भूलते जा रहे हैं।

यह वैचारिक आक्रमण इतनी तीव्रता से किया गया है कि हम चेतना शून्य होते जा रहे हैं और उसी को सत्य मानने के लिए विवश हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और तो और, हम अपने देश की प्राचीन परिकल्पना, आख्यायिकाओं और उपलब्धियों को भी तभी जान पाते हैं जब पाश्चात्य जगत् के वैज्ञानिक या मनीषी उसके बारे में कुछ लिखें।

स्वामी विवेकानन्द को भारत में तब सम्मान मिला जब वे शिकागो में पूजित हुए। रवीन्द्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार मिलने के बाद ही विश्व-कवि कहा गया। क्या यूरोप जाने से या अंग्रेजों के द्वारा सत्यापन करने से पहले उनके विचार एवं कवित्व में गरिमा नहीं थी? क्या यूरोप पारस पत्थर है, जिसके स्पर्श से लोहा भी खरा सोना बन जाता है? यदि ऐसा नहीं है तो भारतीयों ने इन विलक्षण व्यक्तियों का मूल्यांकन पहले क्यों नहीं किया? कारण स्पष्ट है कि अंग्रेजियत हम पर जड़ दी गई है।

हमें मानसिक रूप से दास बनाये रखने का बहुत सुनियोजित षड्यन्त्र लम्बे समय से चला आ रहा है। इन दिनों प्राचीन मूर्तियों पुस्तकों, चित्रों आदि को खरीदने का जो चक्र चल रहा है, वह हमारी भारतीय संस्कृति पर आक्रमण है। वे लोग चाहते हैं कि हमारे पास कला, धर्म, ज्ञान और संस्कृति का कोई भी ऐतिहासिक चिन्ह न बचे, हमारे आलस्य और फूट के कारण वे लोग इसे अपनी इच्छापूर्ति का साधन बना रहे हैं और भारत को तोड़ने में जुटे हैं।

आज वैज्ञानिक प्रगति या साधनों से मिलने वाले सुख-दुःखों से हम परिचित हैं। इन सब को अस्वीकारना मूर्खता है, किन्तु इसके माध्यम से एक भोगवादी जड़ संस्कृति, जो हमारे देश के मानस में पैठती जा रही है, अवांछनीय है।

सारे वैज्ञानिक उपकरणों की सुविधा केवल सुख तक पहुंचा सकती है, वह आनन्द नहीं दे सकती।

हो यह रहा है कि अंग्रेजी के नाम पर ईसाइयत में दीक्षित करने की दुरभिसन्धि रची जा रही है। इस से भारत की आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति एक छलावा है। भौतिक प्रगति करने से किसी को कष्ट क्यों होने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगा ? लेकिन यदि यह संस्कृति और जीवन विधा ही सुख-शान्ति का आधार होती तो पश्चिम में राम-कृष्ण का नाम नहीं गूंजता।

विदेशी लोग हमारी सांस्कृतिक वस्तुओं को नष्ट करने के षड्यन्त्र रचते हैं और हमारे महापुरुषों को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं। आज पूरे भारत में समाज हिन्दुत्व के विषय में बोलने वाले को पागल कहता है पर वे नहीं जानते कि भारत में जब तक हिन्दू हैं, तभी तक भारत में धर्म निरपेक्षता, लोकतन्त्र और समाजवाद हैं। जिस दिन भारत में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेगा, भारतीय संविधान पाताल में चला जायेगा।

मनुष्य बन !

वेद का संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक ही आदेश है कि मनुष्य बने। वेद कहता है—

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। ऋ० १०-५३-६

आज कोई कम्युनिस्ट बनता है तो कोई ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, सिक्ख। किन्तु संसार में एकमात्र वेद ऐसा धर्मग्रन्थ है जो उपदेश देता है और कुछ नहीं—तू **मनुष्य बन,** क्योंकि मनुष्य बनने पर सारा संसार ही एक परिवार होगा। इस उपदेश की ध्वनि यह है कि वेद संसार के सभी मनुष्यों की एक ही जाति मानता है—'मनुष्य' जाति। मनुष्य-मनुष्य के बीच की सारी दीवारें मनुष्य से अलग कर विवाद-युद्ध-द्वेष उत्पन्न करती हैं। वेद शांति के लिए इन सभी दीवारों को गिरा देने का आदेश देता है।

सभी से मित्रता का आदेश देता हुआ वेद कहता है—**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।**

हम सबको मित्र की स्नेह सनी आंख से देखें। कितनी उदात्त भावना है। प्राणिमात्र से प्यार का कितना सुन्दर उपदेश है।

एकता और सह-अस्तित्व के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता हुआ वेद कहता है कि **संगचध्वं सवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**

तुम्हारा चाल, तुम्हारी वाणी, तुम्हारे मन सभी एक समान हों। इस उपदेश पर चलें तो फिर धरती कैसे स्वर्ग न बने ?

मनुष्यमात्र की एकता के लिए वेद का यह भी आदेश है कि "**विश्वं-भवत्येक नीडम्**"। हम इस संसार को घोसला समझें।

कोई देश, जाति, वर्ग की दीवार मध्य में न हो। सभी कुछ मिलकर आपस में बाँटकर उपभोग करें तो फिर अभाव कैसे रहेगा ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रान्तिकारियों की सहायता करें

—डा. प्रशान्त वेदालंकार

पिछले दिनों पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की बहन श्रीमती शास्त्री देवी की सहायता के लिए एक अपील प्रकाशित हुई थी। उसे पढ़कर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री सत्यव्रत सामवेदी मेरे यहाँ आये। वे मुझे और धर्मपत्नी डा. सरोज दीक्षा विद्यालंकर को लेकर उत्तम नगर, दिल्ली में श्रीमती शास्त्री देवी के निवासस्थान पर गये। साथ में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मृदुला भी थीं।

उत्तम नगर में श्रीमती शास्त्री देवी के निवास्थान पर एक पट्ट पर पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की बहन तथा उनके भांजे का नाम लिखा था। हमने अन्दर जाकर देखा कि बहनजी एक टूटी हुई चारपाई पर लेटी हुई थीं। कमरे का रख-रखाव निम्न मध्यम वर्ग के परिवार से भी गया बीता था। बातचीत के बाद पता चला कि वे अपना जीवन बहुत ही अभाव की अवस्था में व्यतीत कर रही हैं। उनके लड़के का भी आय का विशेष स्रोत नहीं है। उनकी पुत्रवधु अस्वस्थ और विकलांग हैं। वे खड़ी भी नहीं हो सकतीं। उनकेपरिवार की देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति नहीं था। यह देखकर आश्चर्य और दु:ख होना स्वाभाविक है।

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपना बलिदान किया था। उनकी बहन श्रीमती शास्त्री देवी अपने घुटनों के साथ बंदूकें बांधकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने का कार्य किया करती थीं। इस समय उनके घुटनों में पीड़ा थी। मैंने उनसे कहा कि आप घुटनों में बंदूकें बांधकर कैसे चला करती थीं? अत्यन्त करुण स्वर में बोलीं—शायद उसी पाप का फल मैं भुगत रही हूं। अपने परिवार की चिन्ता न करके जो महिला अपने बलिदान से देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने क्रांतिकारी भाई की सहायता में लगी रही हो, देश के स्वतंत्र होने के बाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह असहाय और दीन-हीन स्थिति में अपना जीवन यापन कर रही थी यदि उसे अपने किये पर पश्चाताप है तो यह कई दृष्टियों से स्वाभाविक है

मेरे यह पूछने पर कि आपको कहाँ-कहाँ से सहायता मिलती है या मि रही है, उन्होंने कहा कि जो सहायता मिली, उसे मेरे रिश्तेदारों ने छी झपट लिया। मुझ तक पहुंचने ही नहीं दिया। इससे जहाँ उनके परिवार कुछ लोगों के बेईमानीपूर्ण रवैये का ज्ञान होता है, जहाँ सहायता भेजने वा की असावधानी भी सूचित होती है। उन्होंने बताया कि जब श्री दरबा सिंह पंजाब के मुख्यमंत्री थे तो पंजाब सरकार मेरे पास कुछ भेजती थी पर अब उनके हट जाने के बाद मुझे वहाँ से कुछ सहायता प्राप्त नहीं हो रही। बार-बार लिखने के बाद भी कोई परिणाम नही निकला।

सारी स्थिति को देखकर मुझे बहुत दु:ख हो रहा था। जिस व्यक्ति देश को स्वतंत्र कराया, जिसमें उनकी बहन का भी योगदान रहा, उस लिए हमारा राष्ट्र कुछ नहीं कर रहा। इतना भी नहीं हो पा रहा कि ठीक प्रकार से रह सकें, ठीक प्रकार से भोजन कर सकें, ठीक प्रकार उन्हें दवा-दारू मिल सके। अपने इलाज के लिए वे अस्पताल नहीं ज सकती, क्योंकि वहां जाने के लिए उनके पास कोई साधन नहीं। कह सुनने से सरकार से सहायता तो मिल सकती है पर सरकार उन्हें सम्मा और स्नेह नहीं दें सकती। जिस भावना से उस महिला ने देश के लिए का किया था उस भावना से उन्हें सहायता-वृत्ति नहीं दी जा रही।

पाठकों को मालूम ही होगा कि पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने भारती यता और देशभक्ति का संस्कार आर्यसमाज से प्राप्त किया था। वे आर्य समाज को अपनी माँ समझते थे। सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द दूसरे ग्रन्थों को पढ़कर उनके हृदय में जो भावनायें उत्पन्न हुई थीं, उन्हो उन्हें क्रांतिकारी बनाया था। उनके बलिदान से आर्यसमाज का मस्त ऊंचा हुआ था। यदि सरकार बहन शास्त्री देवी का उचित सम्मान न क सके तो आर्यसमाज का यह कर्तव्य बनता है कि वह बहन जी का समुचि सम्मान करें। दिल्ली में 200 आर्यसमाजें हैं। यदि प्रत्येक आर्यसमा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

10 रुपये भी प्रतिमास स्नेह और सम्मान के साथ उन्हें दे सके तो यह वस्तुतः आर्यसमाज की ही सेवा होगी। श्रीमती शास्त्री देवी को अपनी सहायता के लिए समाचारपत्रों में अपील देनी पड़े यह हम आर्यसमाजियों के लिए कोई शोभा की बात नहीं।

श्री सत्यव्रत सामवेदी ने आर्यसमाज की ओर से उन्हें 500 रुपये प्रदान लिए और कहा कि जब भी उन्हें कोई आवश्यकता हो वे निःसंकोच मिल सकती है। उन्होंने उनके सामने यह प्रस्ताव भी रखा कि वे जयपुर में आकर आदर्शनगर आर्यसमाज की स्थायी अतिथि हो जायें। इस प्रस्ताव को सुनकर वे हंस पड़ी और कहने लगी कि मेरी सेवा के लिए तुम लोग किसी सफाई कर्मचारी को लगा दोगे। उनका संकोच और व्यथा वस्तुतः स्पष्ट थी। हम लोग किसी की सेवा नहीं कर सकते—यह इससे निष्कर्ष निकलता था। मदर टैरेसा भारतवर्ष में आकर दीन-हींन दुर्बल भारतवासियों की सेवा कर नोबेल पुरस्कार प्राप्त कर सकती हैं, सेवा के बल पर भारतीयों को ईसाई बनाने का आन्दोलन चला सकती हैं, लेकिन हम अपने परिवार के सदस्य की सेवा का कार्य नहीं कर सकते।

हम लोग भारी मन से घर से बाहर जाने लगे। हमने देखा कि उसी समय डाकिया दो धनादेश लेकर आया। एक धनादेश बिहार के किसी स्थान से था। एक व्यक्ति ने उनकी अपील पर 50 रुपये भेजे थे, दूसरा धनादेश हरिद्वार से था। उस व्यक्ति ने अपनी शक्ति से 10 रुपये उनके लिए जुटाए थे। इससे पता चला कि लोगों में क्राँतिकारियों के प्रति सम्मान की भावना है। पर स्थायी योजना न होने के कारण हम किसी का सम्मान ठीक प्रकार नहीं कर सकते।

वहां से लौटने के बाद हम लोगों ने इस विषय में काफी चर्चा की। यह अनुभव किया कि इस विषय में हमें कुछ निश्चित योजना बनानी चाहिए। श्री सत्यव्रत सामवेदी जी में इस विषय में काफी उत्साह था। मैंने उनमें कहा कि आप राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री है। आप इस विषय में कोई अच्छी योजना बना सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ दिनों के बाद श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का मेरे पास पत्र आया। उसमें लिखा था कि श्रीमती शास्त्री देवी के परिवार की सहायतार्थ पं. रामप्रसाद बिस्मिल स्मृति कोष में एक लाख रुपए एकत्रित करने का निश्चय किया गया है। इसका मासिक व्याज उनके परिवार को मिलता रहेगा।

फिलहाल पंजाब नेशनल बैंक की राजा पार्क शाखा में खाता खोल दिया गया है। ट्रस्ट बनने के बाद दिल्ली में खाता खोल दिया जाएगा। एक रविवार को कोष के लिए साप्ताहिक सत्संग में अपील की गई थी। उसी समय 1500 रु. एकत्रित हो गए। योजना यह है कि 50 आर्यसमाजें एक-एक हजार रुपए और विश्व के 500 आर्य सज्जन सौ-सौ रुपए इस कोष में दें। दिल्ली में इस कार्य के लिए अधिक से अधिक समाजों एवं आर्य सज्जनों को प्रेरित करने का प्रयास करें।

बहन जी अत्यन्त वृद्धावस्था के कारण चलने-फिरने में असमर्थ हैं और उनकी एक टांग बेकार हो गई है। वे घिसटती हुई अपने घर का कार्य करती हैं। पुत्र रोगाक्रान्त होने के कारण कोई भी कार्य करने में असमर्थ हैं।

इस अवस्था में यह परिवार पंडित जी के प्रति श्रद्धा रखने वाले आर्य बन्धुओं की सहायता पर आश्रित है। कोई दस रुपया भेज देता है—कोई पचास।

स्वतन्त्र भारत में पंडित जी के परिवार की यह स्थिति देख कर कोई नहीं कह सकता कि हम स्वतन्त्र भारत में साँस ले रहे हैं। यदि शहीदों के परिवारों की यही स्थिति रही तो कौन व्यक्ति शहीद होना चाहेगा। पंडित जी ने कल्पना की थी कि शहीदों की समाधि पर लगेंगे हर वर्ष मेले। वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशाँ' होगा। परन्तु मेले लगाना तो दूर रहा, हम उनके परिवारों की न्यूनतम आवश्यकतायें पूर्ण करने में भी असमर्थ हैं।

संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। जो समाज शहीदों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सकता, वह संसार का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या उपकार कर सकता है।

हम प्रति वर्ष करोड़ों-अरबों रुपयों से भवन बनाकर मिट्टी, गारे, पत्थर, ईंट, चूना, सीमेण्ट पर एवं पौराणिक, नास्तिक, शराबी, व्यसनी तथा विधर्मी व्यक्तियों के वेतनों पर खर्च कर रहे हैं किन्तु शहीदों के दुःखी परिवारों की हमें कोई चिन्ता नहीं। हम शताब्दी समारोहों और वार्षिकोत्सवों पर लाखों रुपया—करोड़ों रुपया ख़र्च कर सकते हैं परन्तु शहीदों के परिवारों को रोटी-पानी मुहैया नहीं करा सकते।

हमारा आचरण महर्षि दयानन्द के उपदेश के विरुद्ध है। हम अपनी उन्नति से ही सन्तुष्ट हैं। दूसरों की उन्नति से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। हम अपने पेट पर, शृंगार साधनों पर, विलासता की वस्तुओं पर, दहेज पर लाखों रुपया बहा सकते हैं, परन्तु शहीदों के परवारों की सहायता के नाम पर हमारी आर्थिक स्थित खराब हो जाती है।

जो समाज रचनात्मक कार्य छोड़ देता है, वह कभी जिन्दा नहीं रह सकता। अतः हमें आर्य समाजों में रचनात्मक कार्यों पर बलि देना चाहिए।

मैं पन्द्रह जनवरी 1987 को माता शास्त्री देवी जी के उत्तम नगर स्थित निवास स्थान पर उनके परिवार की दुःखद स्थिति को देखने गया था और मैंने उन्हें आर्यसमाज आदर्श नगर की ओर से पाँच सौ रुपयों की तुच्छ भेंट अर्पित की थी।

ऊपर हमने जिस कोष की चर्चा की है उसका ट्रस्ट बना दिया जाएगा, जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता ट्रस्टी होंगे। क्रास चैक या ड्राफ्ट "पंडित रामप्रसाद बिस्मिल स्मृति कोष" आर्यसमाज, आदर्श नगर, जयपुर के नाम से भेजें।

इस कोष का प्रयोग किसी भी स्थिति में अन्य किसी कार्य के लिए नहीं किया जा सकेगा।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पावन कार्य में आर्यजगत पूर्ण सहयोग देकर पुण्य का भागी बनेगा। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाखण्ड कैसे रुके ?

—देवकीनन्दन सिंह अत्रि

हम आर्य हैं। महान ऋषियों की सन्तान हैं, जिन्होने सपूर्ण विश्व को ज्ञान का प्रकाश दिया। सम्पूर्ण विश्व को प्रेम व विश्वबन्धुत्व का अमर सन्देश दिया। हम ऋणी हैं उस महान् ऋषि दयानन्द सरस्वती के, जिन्होंने वैदिक ध्वजा सम्पूर्ण विश्व में फहराई और सैकड़ों मूर्तिपूजकों को आर्य बनाकर महान् उपकार किया, लेकिन अफसोस कि आज हम उस महान् ऋषि के संदेश को भूल चुके हैं। उनके महान् ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का हमारे जीवन में कोई मूल्य नहीं। आज हम पाखण्डियों के जाल में फंस गये हैं चारों ओर पाखण्ड, अन्धविश्वास और चमत्कारों का बोलबाला है। हमारे देश में चारों ओर नकली भगवान् ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं और हम अज्ञानियों की भांति उनके चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण कर रहे हैं। कारण स्पष्ट है कि हम इन मदारियों, बाजीगरों को अपना सर्वस्व मान चुके हैं। देश की स्थिति यह है कि चारों ओर तान्त्रिकों, ढोंगियों और पाखण्डियों की भरमार है। वे देश को दोनों हाथों से लूट रहे हैं। हमारे राजनेता इनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेते हैं कि वे भविष्य में भी देश की नय्या के खेवनहार बने रहें। हमारे अमर, तेजस्वी, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्पष्ट लिखा है कि 'जिस देश के राजा की पत्नी विदेशी होगी और वहां का राजा ढोंगियों, पाखण्डियों की शरण में जायेगा और राष्ट्र संचालन के लिए उनसे आशीर्वाद लेगा तो देश का कल्याण सम्भव नहीं है।" आज चारों ओर स्थिति काफी विषम है। हमारी सोचने-समझने की शक्ति कुण्ठित हो चुकी है। हम इनके दास बन चुके हैं। यदि कोई इनका विरोध करता भी है तो इनकी आवाज उसे दबा लेती हैं अर्थात् उसकी आवाज इनके बहुमत के सम्मुख नक्कारखाने की तूती बनकर रह जाती है। इस पाखण्ड ने समाज को नकारा बनाकर हमें निम्नलिखित उपहार दिए हैं—

हम उपहार इसने हमारे समाज को अन्धविश्वास का दिया है। हमारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोम-रोम अन्धविश्वासी हो गया है। हम भूत, प्रेत, चामुण्डा, ज्वालाजी नगरकोट, जाहरवीर आदि के भक्त बन चुके हैं। अपनी आत्मा की शान्ति के लिए लम्बी-लम्बी यात्राएं करते हैं और धन खर्च करते हैं। क्या हमारी आत्मा शान्ति प्राप्त करती है? क्या हम स्वर्ग के अधिकारी बन जाते हैं? क्या भविष्य में सभी दुःख-दर्द समाप्त हो जाते हैं? इतना सोचने का समय किसी के पास नहीं क्योंकि स्वर्ग का लालच हमारे अन्तस्तल तक समा चुका है। हम इन (पाखण्डियों) की सेवा श्रद्धापूर्वक करते हैं। हमने इतिहास से कोई सबक नहीं लिया। पाखण्डी अपने कपट जाल से धर्मभीरु जनता को बेवकूफ बनाकर अपना जीवन ऐश्वर्यपूर्ण ढंग से व्यतीत कर रहे हैं। देश की जनता भूखी मरे या नंगी रहे—इनकी बला से।

पाखण्ड ने जन्म दिया सरकार उपासना को। लक्ष्मी, ब्रह्मा, विष्णु, दुर्गा, शिव आदि देवी-देवताओं को भगवान् बना दिया गया है। उनके चार हाथ-पैर हैं जो दुष्टों से भक्तों की रक्षा करते हैं। क्या बिडम्बना है? वर्तमान युग में इस प्रकार के अधिक मुंह-पैर वाले बच्चों को अशुभ मानकर जिन्दा या मुर्दा गाड़ दिया जाता है।

लेकिन लोग आज भी इन भगवानों की—देवी-देवताओं की श्रद्धापूर्वक पूजा, उपासना आदि करते हैं लेकिन सच्चाई से कोसों दूर रह कर वास्तविकता को नहीं पहचान पाये हैं। कारण स्पष्ट है—अन्धविश्वास जो हमारी आत्मा में रच-बस गया है। धर्म ग्रन्थों में क्षेपक बढ़ाये गए। महान् पुरुष राम, कृष्ण आदि को भगवान् बनाकर एवं इनके चरित्रों को दूषित बनाकर उनकी छवि को बिगाड़ रहे हैं। हमारे महापुरुषों की श्रेष्ठता पर प्रश्नचिह्न लग गया है। हमारे महान ऋषियों को तोती, शूकर, वेश्या, दासी आदि से उत्पन्न बताकर उनके आदर्शों को समाप्त कर दिया। क्या तोता, उल्लू, आदि जानवरों से मानव पैदा होते हैं। इस प्रकार पाखण्ड ने हमें निराकार प्रभु की उपासना से दूर कर साकार उपासना की ओर अग्रसर कर दिया। विभिन्न अवतारों (नृसिंह, मछली, कछुआ, शूकर आदि) की बेबुनियाद, मिथ्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कल्पना कर हमें पंगु बना दिया। हमारा ज्ञान, हमरी बुद्धि कुण्ठित कर दी

अस्पृश्यता भी पाखण्ड की देन है। पाखण्डयों ने निम्न वर्ग के लो के मन्दिर प्रवेश, वेद पठन, स्वाध्याय, जप-तप आदि वर्जित कर दिया। य तक कि सवर्ण सामने पड़ जाने पर शूद्रों को जमीन पर लेटना पड़ता थ जिससे उनकी छाया इन पाखण्डियों पर न पड़ सके। वेद सुनने पर नि वर्ग के लोगों के कान में पिघला सीसा डाल दिया जाता था। वेद पढ़ने प जिह्वा काट ली जाती थी। इतिहास साक्षी है कि सैकड़ों लोग परेशा होकर धर्म परिवर्तन कर गये और विधर्मियों से मिलकर इस इस देश क सम्पदा, मन्दिर आदि को नष्ट करके अपनी इच्छा पूर्ति की। राह से भट एक क्षत्रिय कुमार सिद्धार्थ को वेद आदि के सत्यदर्शन न हो पाने पर गौत बुद्ध बनना पड़ा। उन्होंने नया मत चलाया।

नीच औरकामी पुरुषों की इच्छा पूर्ति इसी पाखण्डबाद ने की। वाममा भैरवी चक्र वाले खुले आम व्यभिचार करते हैं। शराब पीकर नारी गम होता है। कामी स्त्री-पुरुषों के सुलभ होने के कारण व्यभिचार खुलब होता है। सरकार भी धार्मिक भावना को ध्यान में रखकर कुछ नहीं क पाती। देवदासी प्रथा में सुन्दर सुकुमारियों को पुजारी की सेवा अप इच्छा के बिपरीत करनी पड़ती है। पुजारी मनमानी करते हैं। अप वासना तृप्ति का साधन इन कन्याओं को बनाते हैं।

यदि इसी तरह से तांत्रिक, चमत्कारी ढोंगी पाखण्डी समाज में बढ़ते र तो हमारा पतन अवश्यम्भावी है। परन्तु हम ऐसा नहीं होने देंगे। सत्या प्रकाश, वेद आदि वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन करने से ज्ञान चक्षु खुल जायेंगे मुझे विश्वास है कि आर्यसमाज के विद्वान लोगों की सुप्त भावना को जाग करने के लिए शंखनाद करेंगे। प्रभु आपको तथा सम्पूर्ण समाज को सद्बु प्रदान करें, जिससे सम्पूर्ण समाज एक बार इन चमत्कारियों, ढोंगियों ए तान्त्रिकों को ललकारे और इनके बढ़ते हुए प्रभुत्व को समाप्त करें। मु पूर्ण विश्वास है कि वह दिन अति-शीघ्र आयेगा, जब सम्पूर्ण विश्व में वैदि धर्म की ध्वजा गर्व से मस्तक उच्च किये फहरायेगी और निराकार जग पिता प्रभु का गुणगान सम्पूर्ण विश्व एक स्वर से करेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यही राम की जन्मभूमि है

रहो देखते विश्ववासियो, वह अवसर फिर से आयेगा,
सबसे ऊंचा यह भगवा ध्वज गगनांचल में लहरायेगा।
सत्य अहिंसा न्याय प्रेम का, भी होता अवतार जहां हो,
सरस्वती मां की वीणा के गाते रहते तार जहां हों।
सीमा पर विजयश्री ही आ, पहनाती जय हार जहां हो,
बजते कृषक-वधू के नूपुर रुनझुन की झनकार जहां हो।

आगे बढ़ता देश हमारा, आगे ही बढ़ता जायेगा।। सबसे ऊंचा……

भृगु वसिष्ठ बालार्क आदि ऋषि-मुनियों की यह धर्म भूमि है
विश्वामित्र, अगस्त्य, द्रोण की यह ही पावन कर्मभूमि है,
वेद यहीं पर लिखे गये यह सब शास्त्रों की मर्मभूमि है,
यहीं कृष्ण ने गाय चराई, यही राम की जन्मभूमि है।

इसको ढकने वाला बादल, क्षण भर ठहर नहीं पायेगा।। सबसे ऊंचा…

है क्या कोई देश जहां पर बोलो छः ऋतुएं होती हैं,
किसकी मातृभूमि के पग को सागर की लहरें धोती है,
किस किरीट में जम्बू और कश्मीर सरिस सुन्दर मोती हैं,
किसकी छवि को देख स्वर्ग की. बालायें आतुर होती हैं,

भगवे ध्वज की उस गरिमा को जन-गण-मन फिरसे गायेगा।। सबसे ऊंचा…

क्रूर कुटिल औरंगजेब का, वीर शिवा ने मान घटाया,
छत्रसाल बुन्देला ने था अपना क्षत्रिय धर्म निभाया,
जिसके लिए शारदा मां ने भूषण जैसा कवि उपजाया,
जिस स्वतन्त्रता की रक्षा में सिख गुरुओं ने शीश कटाया।

उस बल विक्रम का प्रतीक जन मानस में फिर बस जायेगा।।
सबसे ऊंचा……

—आशुतोष प्रकाश, बहराइच

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन अशाँत क्यों है ?

—देवीप्रसाद मरकरा

आधुनिक सभ्यता ने हमारे जीवन में अनेक नवीन सुविधाये पैदा कर दी हैं। यातायात के द्रुत साधनों ने संसार को बहुत छोटा कर दिया है। रेल में हम घर का-सा सुख प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक कार्य के लिए मशीन बन गई है। टेलीविजन ने मेघदूत को व्यर्थ बना दिया है। विज्ञान ने शारीरिक अंग-उपांगों की पूरी खोज कर ली है और चिकित्साशास्त्र जिन बातों को असम्भव कहता था, वे सब सम्भव हो गई हैं।

जहां नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, विज्ञान ने प्रकृति पर विजय पाने की घोषणा की है और जहां आराम की सब सुविधाये हैं, वहां मानव इतना प्यासा क्यों है ? उसके अन्दर शांति क्यों नहीं, तृप्ति क्यों नहीं, वह इतना खोया-खोया क्यों है, उस का सन्तोष एवं सुख बढ़ता क्यों नहीं, आधुनिक विज्ञान एवं सभ्यता के सामने यह एक अनुत्तरित प्रश्न है।

वास्तव में देखा जाये तो पाश्चात्य सभ्यता ने जीवन को उन्माद से भर दिया है। मनुष्य मशीन बन गया है। उसने अपना आत्मविश्वास, अपना ईश्वरत्व खो दिया है। वह असहाय-सा, पर अपनी शक्ति के दम्भ का प्रदर्शन करता हुआ न जाने कहां जा रहा है ? इस सभ्यता ने जो सबसे बड़ा अकल्याण किया है, वह यह कि उसने मनुष्य को बिलकुल अचेत कर दिया है और उसकी असीम दैवी सम्भावनाओं को हर लिया है।

आज किसी से ब्रह्मचर्य की बात करो, तो वह अविश्वास की हंसी हंस देगा। मनुष्य के, जो जगत् का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, मुख से दीनता, दुर्बलता और विवशता के शब्द क्यों ?

बात यह है कि जीवन की बाहरी लीलाओं में हम भूल गए हैं कि हमारे अन्दर भी एक ईश्वरीय शक्ति है। आज की सभ्यता ने हमें विश्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के संग्रहालय में, संसार की प्रदर्शनी में मोह रूप में सजे मुर्दे की भांति रख छोड़ा है। सुविधायें जरुर बढ़ीं पर सुख न बढ़ा, जीवन बढ़ा पर शांति न बढ़ी। उलटे हमारी चिन्तायें ज्यादा हो गईं। मानसिक, नैतिक और शारीरिक शक्तियां बर्फ की भांति गल गई हैं। मानव समाज दुःख, दम्भ, ईर्ष्या और द्वेष के अन्धकार में भटक रहा है।

प्रत्येक मनुष्य की यह इच्छा रहती है कि वह दुःख से छूटकर सुख प्राप्त करे और इसी के लिए समस्त संसार के मनुष्य रात-दिन प्रयत्न करते हैं, परन्तु वेद-विद्या का ज्ञान न होने से तथा सुख और दुःख के ठीक-ठीक साधन न जानने के कारण वे दुःखदायक वस्तुओं को सुखदायक समझ कर दुःख उठा रहे हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति के गुण, कर्म और स्वभाव का ठीक-ठीक ज्ञान न होने से वे अपने अनमोल जीवन को पशुओं की भांति केवल पेट पालने में ही खो रहे हैं।

एक जहर है जिसके बिना मैं जी नहीं सकता।
अमृत है यह दुनिया मगर पी नहीं सकता।
मुश्किलें ऐसी हैं कि ये जख्म जिगर के।
सीना भी अगर चाहूं तो मैं सी नहीं सकता।

सुख-दुःख का कारण बाह्य परिस्थितियां नहीं प्रत्युत मनुष्य की मनःस्थिति है। हमें शांति और आनन्द के अक्षय स्रोत को भीतर ही ढूंढ़ना चाहिए।

आज सुख को पहचानने में जो भूल हो रही है, उससे सुख प्राप्त करने की प्रबल इच्छा होने पर भी हम अतृप्त हैं। हमने सुख को वहां समझ रखा है, जहां वह है नहीं। हम भूल गए हैं कि आनन्द बाह्य सुविधाओं में नहीं, अपितु अन्तःतृप्ति में है।

भ्रमित कस्तूरी मृग की तरह हम सुख की सुगन्ध में पागल हो उसकी खोज में फिर रहे है, जबकि आनन्द हमारे अन्दर भरा पड़ा है। हमने उसका मुख ढक रखा है। यदि हम उसके मुख पर से ढक्कन हटा दें तो स्रोत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्बन्ध होकर बह निकलेगा और आनन्द का फव्वारा हमारे जीवन को आप्लावित कर देगा।

श्रुतियां और महापुरुष मन को ही मनुष्य के सुख-दुःख का कारण बताते हैं। मन ही इस सारे संसार चक्र को चला रहा है। वास्तव में यह मन बहुत बलवान् है। इसी ने विषयों, उसके कारणों, गुणों और उनसे सम्बन्ध रखने वाली वृत्तियों की सृष्टि की है? इन वृत्तियों के अनुसार ही सात्विक, राजस, तामस अनेक प्रकार के कर्म होते हैं। मन ही समस्त चेष्टाएं करता है।

जब जीवात्मा मन के अधीन होकर उसके द्वारा विषयों का भोक्ता बन बैठता है, तब कर्मों के साथ आसक्ति होने के कारण वह उससे बंध जाता है। दान, धर्मपालन, यम-नियम, वेदाध्ययन, सत्कर्म, ब्रह्मचर्य आदि श्रेष्ठ व्रत—इन सब का अन्तिम फल यही है कि मन एकाग्र हो जाये, प्रभु चिंतन में लग जाये। मन का समाहित होना ही परम योग है। यही आत्मिक उन्नति का साधन है। □

सन् १९८७ की वैदिक डायरी

संध्या, हवन-यज्ञ के मन्त्र, प्रत्येक पृष्ठ पर वैदिक सूक्ति, मूल्य 8 रु., धन अग्रिम भेजने पर मूल्य केवल छह रुपए।

कम-से-कम दस प्रतियां लेने पर भी छह रुपये में; 550 रु. सैकड़ा।

आदेश के साथ पूरा अथवा कम-से-कम चौथाई धन अग्रिम भेजना आवश्यक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४ लाख रुपये की लागत से 'भारत में इस्लाम' फिल्म बन रही है

केन्द्रीय सरकार एक ओर सरकारी समारोहों में नारियल फोड़कर या दीपक जलाकर उद्घाटन या शिलान्यास करना धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के विपरीत घोषित करने जा रही है, दूसरी ओर शिक्षा मन्त्रालय 14 लाख रुपये लगाकर 'भारत में इस्लाम' फिल्म बना रहा है।

'भारत में इस्लाम' फिल्म को भारतीय भाषाओं में 'डब' किया जा रहा है ताकि उसे टेलीविजन पर दिखाया जा सके।

देश के कुछ शीर्षस्थ बुद्धिजीवियों ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया है कि किसी एक ही धर्म के बारे में फिल्म क्यों बनाई जा रही है? हिन्दू धर्म के चिह्न, मन्दिर, प्राचीन मूर्तियां व सिक्के समस्त संसार में प्राप्त हो रहे हैं। हाल ही में चीन में हिन्दू अवतारों की प्राचीन मूर्तिया मिली हैं। सरकार क्या विश्व में हिन्दू धर्म जैसी फिल्म भी बनायेगी ?

प्रसिद्ध पत्रकार श्री आनन्द जैन ने आरोप लगाया है कि 'भारत में इस्लाम' फिल्म चुनावों में मुसलमानों के वोट प्राप्त करने दृष्टि से बनाई जा रही है।

बताया जाता है कि जामा मस्जिद के इमाम व कुछ अन्य मुल्ला-मौलवियों ने तो यहां तक टिप्पणी की है कि एक ओर कांग्रेसी शासन में मुसलमानों का संहार हो रहा है और दूसरी ओर यह फिल्म बनाकर लोगों को बेवकूफ बनाने का नाटक रचा जा रहा हैं।

भारत में वैदिक धर्म के साथ-साथ जैन धर्म के भी अनेक तीर्थस्थल तथा मंदिर हैं। भारत सरकार को जैन धर्म पर फिल्म बनाने की क्यों नहीं सूझी ?

श्रीमती इंदिरा गांधी एक ओर धर्मनिरपेक्षता का ढोल पीटती थीं और दूसरी ओर उन्होंने इस्लाम व अरबी भाषा के प्रचार के लिए करोड़ों रुपये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की भेजना बताई थी । क्या यही भारत सरकार की धर्मनिरपेक्षता है ?

भारत में इस्लाम तलवार के बल पर फैला, इस तथ्य को कोई नहीं झुठला सकता। क्या 'भारत में इस्लाम' फिल्म में विदेशी हमलावरों द्वारा इस्लाम फैलाने के लिए किये गये बर्बर अत्याचारों की घटनाओं को भी प्रदर्शित किया जायेगा। औरंगजेब ने कितने मंदिर तोड़कर मस्जिदें बनाई। क्या इसमें दिखाने का साहस किया जायेगा ?

वेद का सन्देश

आज के युग के मनीषी अणु और उदजन विस्फोटकों की अनन्त शक्ति के विकास के लिए यत्नशील है। अन्तरिक्ष की खोज उनके प्रयत्नों की सीमा है किन्तु मनुष्य जो इस भूमि का भोक्ता है, निरंतर अशान्ति, चिन्ता और पीड़ा के गह्वर में गिरता जा रहा है। धर्म के नाम पर अधर्म के प्रसार ने विचारकों के मस्तिष्क में धर्म के प्रति तीव्र घृणा भर दी है। वस्तुतः कुरान, पुराण, बाइबिल आदि पुस्तकों ने धर्म को इतने अधिक घृणित रूप में उपस्थित किया है कि कोई भी बुद्धिजीवी धर्म नाम को ही छोड़ देता है।

ऐसी विषम स्थिति में संसार को विनाश और मृत्यु से बचाने के लिए लुप्त होती हुई महान् ज्ञान-राशि वेद का पुनरुद्धार कर महर्षि दयानन्द ने मानवता को अमर संज्ञीवनी प्रदान की। धर्म के जर्जर रूप को त्याज्य बताकर धर्म को जीवन का अनिवार्य अंग बताया और स्पष्टतया यह घोषणा की कि जीवन का उत्थान, निर्माण और शान्ति-आनन्द का उदात्त मार्ग वेद की ऋचाओं में वर्णित है

—महात्मा वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां।।
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहिं काम।।
चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय।।
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल।
नानक पर गुन गाय ले छाँड सकल जंजाल।।
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार।।
झूठ बखान कहा करे जग सुहने जियुं जान।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान।।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगायो धन की।।
संग सखा सब तज गये कोउ न निबाहियो साथ।
कहु नानक एहुं विपत में टेक एक रघुनाथ।।

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है, ते सब नरक कुंड महि परि है।।

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—158, वालकेश्वर मार्ग, तीन बत्ती, बम्बई-400006

1. जावेरी बाजार 2. ग्रांट रोड 3. कोलाबा 4. दादरा टी. टी. 5. बरली नाका 6. सर्कल 7. ठाकुर द्वार 8. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट 9. घाटकोपर (पश्चिम) 10. लिंकिंग रोड, बांदरा 11. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम)।

★ कारखाना–'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड, बम्बई-40007

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बाँटिये

1.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	60 पैसे
2.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ? —वेदभिक्षुः	60 पैसे
3.	हिन्दुओं को चेतावनी–वेदभिक्षुः	60 पैसे
4.	मोपला [उपन्यास]—वीर सावरकर	5 रु.
5.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	60 पैसे
6.	पोस्टर—दो प्रकार के	1.20 पैसे
7.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	60 पैसे
8.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	60 पैसे
9.	हिन्दू जागो—देश बचाओ !	60 पैसे
10.	इस्लाम—एक परिचय	60 पैसे
11.	Bible in the Balance	1 रु.
12.	A Challenge to the Christian Faith	30 पैसे
13.	पोप की सेना का भारत पर हमला–वेदभिक्षुः	60 पैसे
14.	पादरियों को चुनौती	60 पैसे
15.	बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	60 पैसे
16.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	60 पैसे
17.	···और पादरी भाग गया	60 पैसे
18.	Christianity Unmasked	1 रु
19.	The Clarion Call	60 पैसे
20.	जनज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	6 रु.
21.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	60 पैसे
22.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	60 पैसे
23.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	60 पैसे
24.	हिन्दू जागेगा : देश का संकट भागेगा	60 पैसे

1000 पुस्तकें मंगाने पर 50% और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25% छूट; प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम एक चौथाई धन पेशगी भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाबू कुँवर सिंह, जिन्होंने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया

सन 1857 के प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन में बाबू कुंवर सिंह अंग्रेज सत्ता के सामने एक विकट चुनौती थे। वे एक अप्रतिम योद्धा, सच्चे देशभक्त और कुशल युद्ध संचालक थे। वे जगदीशपुर राज्य के 1707 गांवों की रिआया के प्रिय राजा थे। उनके अद्भुत शौर्य और पराक्रम की गाथायें 'पवांरा' में आज भी गाई जाती हैं। वे विदेशी सत्ता को केवल उखाड़ फेंकना ही नहीं चाहते थे, एक कल्याणकारी शासन भी चाहते थें।

बाबू कुंवरसिंह बाबू साहेबजादा सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनके तीन भाई थे—दयालसिंह, राजपतिसिंह और अमरसिंह। अमरसिंह भी उन्हीं की तरह वीर योद्धा थे। जनक्रांति के दौरान जब वीरकेसरी बाबू कुंवरसिंह बिहार के बाहर एक के बाद बाद एक फतह हासिल करने में लगे थे, अमरसिंह बिहार में ही अंग्रेजों के दांत खट्टे कर रहे थे।

सन् 1826 में बाबू साहेबजादा सिंह की मृत्यु के बाद 'दस्तारबंदी' की रस्म के साथ बाबू कुंवरसिंह गद्दीनशीन हुए। उस समय राज्य की कुल आय छह लाख रुपये में से 1,66,000 रुपये ईस्ट इण्डिया कम्पनी को मालगुजारी देनी पड़ती थी। मृत्यु के दस बर्ष पहले से ही साहेबजादा सिंह ने चारों भाइयों को राज-काज में लगा दिया था।

आंदोलन की पृष्ठभूमि

1845-46 में ही अंग्रेजों के खिलाफ विरोध की आग सुलगनी शुरू हो गई थी लेकिन उस पर समय रहते काबू पा लिया गया था। आगे चल कर कम्पनी सरकार के कई अदूरदर्शी कार्यों ने आग में घी का-सा काम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया। 1855 में बिहार की जेलों में कैदियों को पीतल के लोटे के बदले मिट्टी का 'मेटा' इस्तेमाल के लिए दिया गया। इसका जम कर विरोध हुआ। बाहर से भी जनसमर्थन मिला। आरा और मुजफ्फरपुर की जेलों में गोलियां चलानी पड़ीं। दूसरे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों को हर जगह वरीयता दिए जाने की बात किसी को नहीं रुची। मन्दिर-मज्जिद नष्ट किए जाने लगे थे। तीसरे देशी राजाओं के यहां कम्पनी सरकार द्वारा पोलिटिकल एजेंट और सैन्य प्रतिनिधि का रखा जाना राजाओं की प्रभुसत्ता में खुली दखलअन्दाजी समझी गई। चौथे, भागलपुर से वीरभूमि तक संथालों के उग्र रोष-प्रदर्शन ने बिहारियों को कम्पनी सरकार के विरुद्ध एक हो जाने की प्रेरणा दी।

बिहार के संथालों ने भी एक गुमनामे पत्र लिखकर कम्पनी सरकार को सतर्क कर दिया कि मुजफ्फरपुर, आरा, छपरा, अजीमाबाद, साहेबगंज, भागलपुर आदि के राजा और जमींदार दिल्ली सम्राट के झण्डे के नीचे एकजुट विरोधी सत्ता का विरोध करेंगे। समस्या का निदान सुझाया गया था—मन्दिरों-मस्जिदों को नष्ट न किया जाए। नए अंग्रेजी स्कूल न खोले जाएं, कचहरियों में स्त्रियों की हाजिरी बंद करा दी जाए। अरबी और फारसी बोलने वालों को पहले जैसी सुविधा बरकरार रखी जाए। इस गुमनाम पत्र से अंग्रेजों को बिहार के संकल्प का परिचय मिल गया।

पटना में षड्यन्त्र गुप्त रूप से चल रहा था। इसमें लखनऊ के नवाब का गुट पीरअली खां, यूसुफअली और इमामुद्दीन के तथा दिल्ली तख्त का हमदर्द गुट अली करीम और वारिस अली के नेतृत्व में सक्रिय था। दारोगा मेंहदी अली इनकी सहायता कर रहा था। 19 जून, 1857 को टेलर इन क्रांतिकारियों को दबाने में लगा था। उधर सुगौली स्थित 12वीं घुड़सवार रेजीमेंट के मेजर होम्स ने पटना और गोरखपुर के बीच पड़ने वाले सभी जिलों में मार्शल ला लागू कर दिया।

मेजर होम्स अपने ही क्रांतिकारी सैनिकों द्वारा 25 जुलाई को मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डाला गया। स्थिति गम्भीर हो गई। कम्पनी ने मजबूर होकर 30 जुलाई को सारण, तिरहुत, चम्पारण, पटना, बिहार और शाहाबाद जिलों में मार्शल ला लागू कर दिया। पटना में नौ बजे रात के बाद घर से निकलने पर पाबन्दी लगा दी गई।

कमिश्नर टेलर के सभी प्रयास बेकार सिद्ध हो रहे थे। 3 जुलाई को ही असन्तोष ने उग्र रूप धारण कर लिया था। बहुत बड़े जनसमुदाय ने 'ला इलाह इल्लिल्लाह' के झण्डों के साथ 'दीन-दीन' का जयघोष करते हुए पटना की एक अंग्रेजी इमारत पर आक्रमण कर दिया। हिन्दू-मुसलमान सभी इस आक्रमण में साथ थे। बेतिया का राजा भी उनके साथ था। टेलर ने दरोगा मेंहदी अली को बर्खास्त कर दिया। लोगों से लगभग पचास हजार हथियार जमा करा लिए। जो सबूत मिला उनसे निश्चित हो गया कि कम्पनी को उखाड़ फेंकने के लिए गुप्त संगठित योजना बड़े पैमाने पर काम कर रही है। टेलर महीनों तक बर्बरतापूर्वक क्रांतिकारियों का दमन करता रहा। अनगिनत लोगों को बिना मुकद्दमा चलाए ही फांसी पर लटका दिया गया या गोली से उड़ा दिया गया। स्वतन्त्रता आन्दोलन का सूत्रपात हो चुका था।

बाबू कुंवरसिंह मैदान में

अभी तक कम्पनी शाहाबाद के बाबू कुंवर सिंह की ओर से निश्चिन्त थी। कुंवरसिंह हर प्रकार के असन्तोष को धैर्यपूर्वक हृदय में समेटे उपयुक्त अवसर की ताक में बैठे थे। अंग्रेज अफसरों द्वारा नियन्त्रण करने की लाख कोशिशों के बावजूद दानापुर के देशी सैनिकों ने 25 जुलाई को विद्रोह कर दिया। कुंवरसिंह सोन के तट पर उनके स्वागत के लिए पहले से खड़े थे। 26 को इन क्रांतिकारियों ने आरा पर धावा बोल दिया। गढ़ पर कब्जा हो गया।

कलेक्टर एच.सी. वेक भाग कर एक रेलवे इंजीनियर विकार्स वायल की दुमंजिली इमारत में जा छिपा। कुंवरसिंह के विद्रोह पर टेलर को विश्वास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही नहीं हुआ। अभी तीन दिन पहले उसने बंगाल सरकार के सचिव को लिखा था कि मैं अभी भी बाबू कुंवरसिंह की स्वामिभक्ति और विश्वास-पात्रता के प्रति आश्वस्त हूं।

उसका अनुमान था कि सम्भवतः राजस्व परिषद् द्वारा कुंवरसिंह के मामले में हस्तक्षेप ने ऐसा कराया हो। उसने कुंवरसिंह के पक्ष में लेफ्टिनेंट-गवर्नर हैली डे को पत्र भी लिखा। पर बात तो कुछ और हो थी। कुंवरसिंह घटनाओं के मोड़ पर सावधानी से आँख लगाये हुए थे। उन्होंने देखते ही देखते दस हजार सिपाहियों की फौज खड़ी कर ली। उनके जनरल निशान सिंह ने दो रेजीमेंटें बनाईं—हुरजंग और फतहजं,ग जिसमें मुख्यतः शाहाबाद, सारण, तिरहुत, गाजीपुर और बिहार जिलों के सिपाही भर्ती किए। बीस हजार सैनिकों के लिए छह मास की रसद एकत्र की गई। यह कम्पनी सरकार के सामने बड़ी भारी चुनौती थी। ब्रिटिश संसद् में डिजरैली ने चिन्ता व्यक्त की। अंग्रेजी साम्राज्य पर आने वाली सबसे बड़ी आपदाओं में से यह एक है।

इतिहासकार सी.टी. मेटकाफ ने लिखा है कि महीनों पहले से इस विप्लव के लिए कुंवरसिंह, विठूर के नाना साहेब और बिहार के राजाओं से सम्पर्क बनाए हुए थे। 60-वर्षीय जनरल निशानसिंह, हरेकृष्णसिंह और अनुज अमरसिंह बड़ी बहादुरी से उनका साथ दे रहे थे। बिहार और संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) के प्रायः सभी राजाओं को उन्होंने कम्पनी शासन को उखाड़ फेंकने में सहयोग हेतु अमरसिंह से सन्देश भिजवाये थे।

पूरे बिहार प्रान्त की जनता क्रांतिकारी सैनिकों के साथ हो गई। कम्पनी को थोड़ा-बहुत भरोसा यूरोपीय तथा कुछ देशी सिपाहियों पर था। आरा में 27 जून को इंजीनियर की इमारत से एच. सी. बेंक ने देखा कि दानापुर से आए विद्रोही सैनिकों से सारे देशी सिपाही मिल गए हैं। खजाना लूटा गया। अफसरों के बंगलों पर धावे हुए। गढ़ पर क्रांतिकारियों ने कब्जा कर लिया। समूचा शाहाबाद कुंवरसिंह के अधीन हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने दो नए थाने बनाए और नए अफसर नियुक्त किए। परन्तु किसी भी विदेशी के साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया गया।

दानापुर से कैप्टेन डनवर के नेतृत्व में 500 अंग्रेजी और देशी सैनिक आरा भेजे गए। घमासान युद्ध हुआ। देशी सैनिक अंग्रेजों पर टूट पड़े। 29 जून को कैप्टन डनवर मारा गया। भारी संख्या में सैनिक हताहत हुए, बाकी दानापुर की ओर भाग निकले। कुंवरसिंह ने अपने को देश का राजा घोषित कर दिया। पटना के कमिशनर ने 2 अगस्त को कमाण्डर-इन-चीफ को तार भेजा, "कुंवरसिंह और आरा के विद्रोहियों का मुकाबला करने के लिए यहां सेना नाकाफी है। कुंवरसिंह ने अपनी शक्ति सुदृढ़ कर ली है और अब पटना पर आक्रमण की ताक में है।"

लगभग उसी समय संयोग से बंगाल तोपखाने का मेजर विसेंट आयर, जो गंगा के रास्ते इलाहाबाद की ओर जा रहा था, आरा में अंग्रेजों की चिन्ताजनक हालत सुनकर सदल-बल उतर गया। उसका भी प्रतिरोध हुआ। पर संघर्ष में उसने पुनः आरागढ़ पर कब्जा कर लिया। कुंवरसिंह को पीछे जगदीशपुर हटना पड़ा। आयर ने आरा में सबको निःशस्त्र करा लिया और 13 अगस्त को जगदीशपुर की ओर बढ़ा। मोर्चे के बाद कुंवर-सिंह की पल्टन पीछे जंगलों में हट गयी। मेजर आयर ने जगदीशपुर को जलाकर राख कर दिया। दलीपपुर को भी तहस-नहस किया। जो जहां मिला, वहीं भून दिया गया या पेड़ों पर फांसी पर लटका दिया गया। क्रांतिकारियों की सरगर्मी में फर्क नहीं पड़ा।

बिहार की खबरें मिरजापुर पहुंचीं। 31 जुलाई को भयाक्रान्त मजि-स्ट्रेट पुलाक चुनार किले में आ गया। विद्रोही प्रवेश न कर सकें, इसलिए सारे जिले की नाकाबन्दी कर दी गई।

इसी समय रामगढ़, बिहार में माधवसिंह तथा दोरंदा में जयमंगलसिंह के नेतृत्व में विद्रोह कर देशभक्त सिपाही क्रांतिकारियों से मिलने रोहतास की ओ बढ़ चले। बाद में 26 अगस्त को अनेक गद्दारों की सहायता से लेफ्टिनेंट अर्ले हजारीबाग को पुनः जीत सका।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुंवरसिंह की विजय परिक्रमा

इसी समय राजा अर्जुनसिंह के नेतृत्व में सिंह भूमि के कोल उठ भिड़े। छापामार लड़ाई चलती रही। जनवरी 1858 में कोलों ने अंग्रेजों को परास्त किया।

बिहार प्रान्त के बाहर भी इस अभियान का फैलाव जरूरी था। मध्य भारत और संयुक्त प्रांत में देशी शक्तियों का संगठन करना आवश्यक समझा गया। बस, निकल पड़े अभियान पर। असम और बंगाल रेजीमेंट के सिपाही भी मिले थे। खर्च की समस्या थी। प्रवन्ध के लिए सीधासिंह उनके 'सपरमैना' थे। डुमरी के साहू से साठ हजार रुपये कर्ज लेकर वे जगदीशपुर से नोखा की ओर बढ़े। हजारीबाग से आए दो कम्पनी सैनिक यहीं मिले। अब उनके पास एक हजार प्रशिक्षित सैनिक, चार हाथी, चौदह ऊंट और अनेक घोड़े हो गए।

मिरजापुर जिले में वे प्रवेश न कर सकें, इसका हर सम्भव प्रयास पहले से ही किया गया था, फिर भी उन्होंने 26 अगस्त को विजयगढ़ में डेरा डाल दिया। रामगढ़ और घोरावल होते हुए उनकी फौज एक सितम्बर को नेवारी पहुंची। सिंगरौली के राजा ने कुंवरसिंह का स्वागत किया। शिवराजपुर होते हुए वे रीवा की ओर बढ़े। रीवा रेजीमेंट के कमाण्डर कर्नल हिण्डे और पोलिटिकल एजेन्ट लेफ्टिनेंट बिलोवी ने प्रतिरोध करना चाहा परन्तु जनता द्वारा कुंवरसिंह के व्यापक समर्थन के कारण उनके सारे प्रयत्न निष्फल हो गए।

तात्या टोपे से सम्पर्क जरूरी था। अनेक विषम बाधाओं को पार करते हुए वे बीस हजार सैनिकों के साथ 29 सितम्बर को रीवा से बांदा आए। बीमार जनरल निशान सिंह पालकी में चल रहे थे। बांदा के नवाब ने कुंवरसिंह की सेना का शानदार स्वागत किया। नवाब की सेना के साथ उन्होंने अजयगढ़ के निमनीपार किले पर आक्रमण कर उसके सरदार को कैद कर लिया। बांदा में कुंवरसिंह के पौत्र वीरभंजन सिंह का देहान्त हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

20 अक्तूबर, 1858 को वे बांदा से कालपी की ओर बढ़े। यहां उन्होंने अंग्रेज-परस्त शिवराम तात्या को कैद किया। यहीं 7 नवम्बर को ग्वालियर की देशभक्त फौज भी आ मिली। अब कानपुर पर आक्रमण की तैयारी थी।

दिसम्बर में नाना साहेब और कुंवरसिंह की संयुक्त कमान ने कानपुर में अंग्रेजों से लोहा लिया। यहां सफलता न मिली और पीछे हटना पड़ा। पीछे हटने की कला में कुंवरसिंह बड़े निपुण थे। इसकी अंग्रेजों ने भी प्रशंसा की है। अब वे लखनऊ की ओर मुड़ गए। अवध के नवाब वाजिद अलीशाह की ओर से इनका राजकीय सम्मान किया गया। बेगम हजरत महल ने इन्हें कीमती 'सिरोपा' (पोशाक), नकद और आजमगढ़ जिले का 'फरमान' देकर शानादर विदाई दी। आगे घाघरा के बर्नीघाट पर कुंवरसिंह के भतीजे पर 1800 सैनिकों को साथ लेकर अंग्रेजों ने हमला कर दिया परन्तु उन्हें मुंह की खानी पड़ी।

अंग्रेजों से जहां देशी राजे-महाराजे लोहा ले रहे थे, वहीं साधु-संन्यासी भी पीछे नहीं थे। अयोध्या के बाबा रामस्नेही दास और रामचरण दास अनगिनत शिष्यों सहित अंग्रेजों से आमने-सामने की लड़ाई में शहीद हुए। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में संन्यासी आन्दोलन अलग सक्रिय था। इसका नेतृत्व कर रहे थे कुंवरसिंह के समधी स्वामी महावीर। इनका केन्द्र था सारनाथ। जगह-जगह जनजागरण के लिए आनन्दमठ बनाए गए। इन्हीं आनन्दमठों के क्रिया-कलापों से प्रभावित होकर बंकिमचन्द्रजी ने 'आनन्दमठ' की रचना की, जिससे क्रान्तिकारियों ने बहुत प्रेरणा पाई।

फैजाबाद के बाद कुंवरसिंह 12 फरवरी, 1858 को अयोध्या पहुंचे। नरहरपुर के राजा और अयोध्या के राजा मानसिंह पहले से ही कम्पनी सरकार के खिलाफ थे। फिलौर, पंजाब से अचरजसिंह, शिवसहाय, मथुरा चोबे, रामसरन चौबे और गुल्ला विद्रोह कर चले थे। अचरजसिंह सूरजकुण्ड में कुंवरसिंह की सेना में मिल गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

17 मार्च को उनकी फौज आजमगढ़ से 25 मील पहले अतरोलिया पहुंच गई, जहाँ कर्नल मिलमैन ने उन पर धावा किया किन्तु वह कुंवरसिंह के सामने टिक न सका। 27 मार्च को 4,000 सहायकों के साथ कुंवरसिंह ने आजमगढ़ पर कब्जा कर लिया। वे यहां तीन सप्ताह रहे।

आजमगढ़ के पतन से अंग्रेजी खेमे में दहशत फैल गई। शाहाबाद की ओर कुंवरसिंह की वापसी के समाचार से पटना का कमिश्नर फिर चिन्तित हो उठा। उसने इलाहाबाद, गाजीपुर, गोरखपुर, सासाराम, छपरा और चम्पारण के कलेक्टरों को सतर्क कर दिया ताकि कुंवरसिंह के बढ़ाव को जहां हो, वहीं रोक दिया जाए। उसका अनुमान सही था कि शाहाबाद के राजपूत, विद्रोही सिपाही और असन्तुष्ट कर्मचारी सब मिलकर कुंवरसिंह की शक्ति को और सुदृढ़ कर देंगे। इसलिए उसका ध्यान आरा की सुरक्षा की ओर पहले गया। कुंवरसिंह की सेना गंगा पार न कर सके, इसलिए हर जगह घाटों की नाकेबन्दी कर दी गई। गाजीपुर के सैनिकों और अफसरों को भोजपुर बुला लिया गया।

फिर जगदीशपुर की ओर

आजमगढ़ से कुमक के लिए इलाहाबाद और सासाराम तार भेज दिया गया था। उस समय लार्ड केनिंग इलाहाबाद में तथा कमाण्डर-इन-चीफ सर कालिन कैम्बल लखनऊ में थे। लार्ड केनिंग के आदेश से लार्ड कर 22 अफसरों और 450 सिपाहियों के साथ ब्रिगेडियर लुगार्ज को लिये 6 अप्रैल, 1858 को आजमगढ़ आ धमका। अन्य जगहों से भी कुमुक आनी जारी थो। लेकिन कुंवरसिंह से यहां सम्पर्क नहीं हो पाया क्योंकि जनरल निशानसिंह के साथ 2,000 सहायक लगा कर सालारजंग हरेकृष्णसिंह को संग लेकर वे गाजीपुर की ओर पहले ही रवाना हो चुके थे, ताकि गंगा पार कर जगदीशपुर में पुनः मोर्चेबन्दी कर सकें। बलिया उन दिनों गाजीपुर जिले का एक अंग था।

डगलस आजमगढ़ से ही कुंवरसिंह का पीछा करने में लगा था। कुंवर-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिंह इधर अंग्रेजों से भिड़ना नहीं चाहते थे। वे सारी शक्ति समेट कर जगदीशपुर पहुंचना चाहते थे। उनकी रणनीति के कारण डगलस सफल नहीं हो पा रहा था। घोसी, नगरा, सिकन्दरपुर होते हुए बाबू कुंवरसिंह 20 अप्रैल को मनियर आ गए। बनारस के कमिश्नर एफ. बी. गिबन्स के अनुसार मनियर के लोगों ने उनकी भरपूर सहायता, स्वागत और सत्कार किया। डगलस बांसडीह में डेरा डाल चुका था। उसे जब पता चला तब उसने मनियर पर धावा बोल दिया। कुंवरसिंह की सेना तितर-बितर होकर बलिया नगर से कोई 10 मील पूरब शिवपुर पहुंच गई। पीछा जारी था। शिवपुर के राजपूतों ने पूरी पल्टन और कुंवरसिंह की आवभगत की। मनियर के जमीदारों ने घाघर से बीस नावें शिवपुर नौरंगा घाट पर भिजवा दी थीं। शिवपुर के लोगों ने छिपे रूप से ये नावें घाट पर उपलब्ध करा दीं।

डगलस तथा कर्नल कम्बरलेज के दो घुड़सवार दस्तों की चौकसी के बावजूद बाबू कुंवरसिंह गंगा पार हो गए। पहले सिपाहियों को नावों से पार कराया और स्वयं हाथी से पार हुए। अफसोस, पार करते समय गोली लगने से उनकी दाहिनी कलाई एकदम बेकार हो गई। पूरे शरीर में जहर न फैले, इस लिए उन्होंने अपनी तलवार से झट काट कर कलाई को अलग कर दिया।

बाबू कुंवरसिंह २२ अप्रैल, 1858 को एक हजार सहायकों के साथ पुनः जगदीशपुर पहुंचने में सफल हो गए। यही उनका लक्ष्य था। आरा और पटना के अंग्रेज अफसरों में खलबली मच गई। कमिश्नर सैमुअल्ए के हुक्म से 300 सिपाहियों के साथ कैप्टन ली ग्रैण्ड ने जगदीशपुर पर आक्रमण कर दिया। 75 वर्षीय वीरकेसरी कुंवरसिंह ने अच्छी मोर्चेबन्दी कर ली थी।

उनके सिपाही अंग्रेजी फौज पर टूट पड़े। निर्णायक युद्ध हुआ। अंग्रेजी सेना का कमाण्डर कैप्टन ली ग्रेण्ड मारा गया। अंग्रेजी फौज खदेड़ दी गई। कम्पनी की भारी शिकस्त हुई। उनके केवल 7 अफसर और 30 सिपाही बच निकले, बाकी मारे गए। मातृभूमि पर पुनः कब्जा हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगातार दस मास के युद्ध और ढलती उम्र की थकान के कारण बाबू कुंवरसिंह शरीर से अशक्त हो चले थे। कलाई कट जाने के कारण अत्यधिक रक्तस्राव भी हो चुका था। जगदीशपुर विजय के तीन दिन बाद वीरकेसरी का देहावसान हो गया। अंग्रेज अफसर अटकलें लगाते रह गये। लाश तक नहीं पा सके। बाबू कुंवरसिंह ने प्रथम स्वाधीनता का जो युद्ध अंग्रेजों से लड़ा वह अपने में बेमिसाल है। वे अपने पीछे भारतीय स्वातंत्र्य-संघर्ष की एक उज्ज्वल और गौरवपूर्ण परम्परा छोड़ गए हैं।

काश, भारत के सभी राजाओं ने एकजुट होकर बाबू कुंवरसिंह की मिसाल का अनुसरण किया होता। तब भारत का इतिहास कुछ और ही लिखा गया होता। ★

जनज्ञान (मासिक)

के

आजीवन सदस्य बनकर

हमें आगे बढ़ने में सहयोग दीजिये। अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइये।

आज ही ५०१ रुपये भेजिये।

साथ में १०१ रुपये मूल्य की 'वैदिक सम्पत्ति' उपहार में लें।

☐ अपने और अपनी आने वाली पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य तथा संस्कार निर्माण के लिए पढ़ें-पढ़ायें

वैदिक साहित्य : हिन्दू-रक्षक साहित्य।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य लोग भारतवर्ष के मूल निवासी

—योगीन्द्र

विगत शताब्दी में यूरोप वासियों विशेषतः जर्मन विद्वनों में संस्कृत पठन-पाठन की रुचि बढ़ी। उन्होंने आर्यों के गौरवशाली इतिहास को पढ़ा, जिसमें भूगोल के सर्वप्रथम मूर्धाभिषिक्त सम्राट् मनु ने तो स्पष्ट धारणा कर दी थी कि इस देश के अग्रजन्मा ब्राह्मणों से पृथ्वी के समस्त मानव अपने-अपने चरित्र की शिक्षा लो। **एतदोवेश्य प्रसुतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षोरत् पृथिव्यां सर्वमानव।** आर्यों के स्वाभिमानपूर्ण गौरवशाली भारतीय इतिहास को पढ़कर उनमें द्वेष उत्पन्न हुआ। उन्होंने प्रतिपादित किया कि आर्य भारतवर्ष में बाहर से आये। वह इतिहास, जिस पर भारतवासी स्वाभिमान करते हैं उनके पूर्वजों का इतिहास नहीं तथा उसमें वर्णित अत्रि, पुलस्त्य, मनु, कृष्ण, द्वैपायन आदि महापुरुष मिथिकल हैं। आर्यों को प्रवासी बतलाने में राजनैतिक कूटनीति भी एक कारण थी। उन्हें भय था कि कहीं सिंहराष्ट्र भारत अपनी स्वाभिमान जन्य जागरूकता से वस्तुतः प्रवासी जाति को जो इस देश पर शासन कर रही थी, बाहर खदेड़ने का व्रत न लेले। यह बात अलग है कि परमात्मा की कृपा तथा भारत के भाग्योदय से उसे भारत छोड़ना पड़ा।

किसी ने आर्यों को मध्य एशिया से, किसी ने आर्कटिक महासागर के किनारे से, किसी ने बेरुन नदी के किनारे से तो किसी ने ईरान से ईसा पूर्व 2500 वर्ष के समीप आया हुआ बताया तथा वही बात परतंत्र भारत में बंगाल लोक शिक्षा समिति के प्रधान मैकाले (1855) द्वारा लिखवाये तथा स्वतंत्र भारत में भी प्रचलित इतिहास में पढ़ायी जाती है। वस्तुतः आर्य लोग भारतवर्ष के मूल निवासी हैं जिसमें अधोलिखित प्रमाण है :—

1. भारत वर्ष जम्बू द्वीप (एशिया) का एक भाग है। पहले जम्बू द्वीप पर ही नहीं प्रत्युत संपूर्ण द्वीपों के वसनीय खण्डों पर आर्यों का निवास था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कालान्तर में आर्य नाम वाले लोगों का स्थान संकुचित होता गया। पुनः भारत में भी उनका वासभाग संकुचित होकर आर्यावर्त कहलाया। आर्यावर्त का अर्थ ही है आर्यों के आर्वतन, व्यवहार का देश।

2. यवन लेखक मेगस्थनीज (विक्रम से लगभग 300 वर्ष पूर्व) स्पष्ट लिखता है कि भारतीय प्रजा इसी देश की थी।

3. भारतवर्ष में अनेक नगर और देश हैं, जिनके नाम अति पुरातन आर्य राजाओं के नाम पर रखे गये हैं।

यथा कौशाम्बी : महाराज कुशाम्ब से बसाई नगरी, हस्तिनापुर महाराज हस्ती से बसाया नगर, वत्स देश—महाराज वत्स से बसाया गया देश, कुरु देश—महाराज कुरु से बसाया देश।

इसी प्रकार के शतशः नाम भारतीय इतिहास में मिलते हैं। ये नाम महाभारत युद्ध काल से बहुत पूर्व से चले आ रहे हैं। इन नामों के राजाओं का अस्तित्व वंशावलियों में है। रामायण, महाभारत और पुराणगत इन वंशावलियों का निरादर करना प्रच्छन्न धूर्तता है। ईसाई पक्षपाती लेखक आर्थर बेरिडेल कीथ ने लिखा है :—

We have not the slighest reason to suppose that the Puranas had any realy reliable traditions upon which to fall back and we do know that they leave us hopelessly at a loss to find genuine history in times which should have come reasonably within their realms nor does the epics supply us with more reliable information.

इस वचन में कीथ की प्रतिज्ञा मात्र है। अतः उसका कोई मूल्य नहीं। इसका उत्तर कीथ के देश भ्राता पार्जिटर ने पहले ही दे दिया था—

If anyone maintains that these genealogies are worthless the burden rests on him to produce, nor more doubts and suppositions but substantial grounds and reason for his assertions.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वंशावलियों से निश्चित होता है कि ये आर्य महाभारत युद्ध से सहस्रों वर्ष पहले भारत में रहते थे।

4. वैदिक ऋषियों के वंशक्रम भी इसी सत्य को प्रमाणित करते हैं।

5. मिस्र, बाबुल, सीरिया, चीन, यूनान और अरब के किसी पुराने इतिहासकार ने नहीं लिखा कि ब्राह्मण, क्षत्रिय लोग भारत में बाहर से आये।

6. भारत के उत्तर-पश्चिम देशों में अनेक क्षत्रियोपनिवेश थे। हित्ती राज्य इसी प्रकार का था। इससे सिद्ध होता है कि भारतीय आर्यों ने अपने उपनिवेश बाहर बाये। वे आर्यावर्त देश से बाहर गये।

7. विष्णुगुप्त कौटिल्य (विक्रम से लगभग 1400 वर्ष पूर्व) के अर्थशास्त्र में दाण्डक्य, भोजकुशल, वैदेह, तालजरठ, ऐल, रावण, हैहय, अर्जुन (सहस्रबाहु), वृष्णिसंघ, वैपायन, अम्बरीष, नाभाग और जामदग्न्य परशुराम का उल्लेख है। इन सब का इतिहास वंशावलियों की तथ्यता को स्वीकार किये बिना जुड़ नहीं सकता और इतिहास के जुड़ने पर यह अनायास सिद्ध हो जाता है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य (आर्य लोग) विष्णुगुप्त से सहस्रों वर्ष पूर्व भी भारत में ही रहते थे।

अर्थशास्त्र को चाणक्य की कृति मानने में ईसाई लेखकों के मार्ग में यही अड़चन थी, जिसके कारण जुलियस जाति प्रभुति ने भरसक यत्न किया कि अर्थशास्त्र और उसके रचयिता ऐतिहासिक न माने जायें।

8. गोत्र परम्परा प्राचीन काल से भारत में चली आई है। गोत्र प्रवर्तक ऋषि भारतवर्ष में ही रहा करते थे। तभी से उनमें से अनेक की मातृभूमि भारत थी। उन्हें भारत में बाहर से आया मानना इतिहास-विरुद्ध है।

9. सरस्वती और दृषद्वती दोनों देवनदियां हैं। चिरकाल से सरस्वती उत्सन्न हो चुकी है। यह घटना महाभारत युद्ध से बहुत पहले की थी। पर जबों सरस्वती अपने पूरे यौवन पर थी, तब आर्य सम्राट् और ऋषि इसके कूल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर वास करते थे। भारत में आर्य लोग उस प्राचीन काल में भी थे।

10. प्रियं भारत भारतम्—अन्त में एक ऐसा प्रमाण देते हैं, जो यूरोप के लेखकों पर करारा प्रहार है। महाभारत भीष्म पर्व में कौरव मंत्री संजय धृतराष्ट्र को सुनाता है—

अत्र ते वर्णयिष्यामि वर्षं भारत भारते।
प्रियं इन्द्रस्य देवस्य मनोर्वैवस्वतस्य च।
पृथोश्च राजन् वैन्यस्य तथैक्ष्वाको र्महात्मनः
ययातेरम्बरीषस्य मान्धातुर्नहुषस्य च।
तथैव मुचुकन्दस्य शिवेरोशीवरस्य चः
ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतेसाथा।
अन्येषां च महाराज क्षत्रियाणां बलीयसाम्।
सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम्।

इसका स्पष्ट अभिप्राय है कि देव इन्द्र, वैवस्वत मनु और वैन्य आदि के काल से भारतवर्ष की भूमि आर्य भूमि थी। इस ओर ऐसे अन्य सत्य वृत्तान्तों से भयभीत लेखकों ने महाभानत और उसके रचयिता द्वैपायन व्यास के अस्तित्व में ही संदेह कराने का जघन्य प्रयास किया है। निःसंदेह प्रिय भारत आदि काल से आर्य लोगों का निवास स्थान है। ऐसी स्थिति में ईसाइयों का प्रलाप कि भारत में आर्य ईसा पूर्व 2,500 वर्ष के समीप आये व्यर्थ हैं। उनके उच्छिष्टभोजी आँख मूंदकर इसे भलेही स्वीकार करने पर सूक्ष्म दृष्टि के विद्वन ऐसा नहीं मान सकते। ★

आवश्यक निवेदन

जनज्ञान मासिक का मार्च अंक हिन्दू जागृति विशेषांक था। उसका मूल्य छह रुपये था, लेकिन असावधानी से साधारण अंक वाला मूल्य (साढ़े तीन रुपये) ही अंकित हो गया। सूचनार्थ निवेदन है कि मूल्य छह रुपये ही था, जैसा विशेषांक से पूर्व प्रकाशित अंक में घोषित किया गया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमन के लिए

जंग है, ज्वाल है, क्रन्ति भूचाल है, इस वतन के लिए बस चमन के लिए।
युद्ध विस्फोट का हम जलाते अनल, बुद्ध के शुद्ध सत्याचरण के लिए ।।
आज हिंसा हमारी छिड़ी उग्र है, दुष्ट आतंक के द्रुत क्षरण के लिए।
तीव्र संघर्ष का है प्रभंजन उठा, क्षुद्र भ्रष्टाचरण के मरण के लिए ।।
वज्र की गर्जना की भयंकर घटा, मानवी लाश के आवरण के लिए।
ज्वार अंगार के हैं मचाते प्रलय, इस चमन के सुमन के कफन के लिए ।।
लाख गाँधी, भगत और ईसा सदा, हम लुटाते रहे उद्धरण के लिए।
हम गरल का हलाहल सदा पी रहे, इस धरा के सुपर्यावरण के लिए ।।
दीप की वर्तिका से जले सर्वदा, शुभ्र आलोक के संचरण के लिए।
दुर्ग दुर्दम्य वाणी मुखर हो उठी, मौन हिम से मनुज जागरण के लिए ।।
हर कलमकार देखो भगीरथ बना, शान्ति मंदाकिनी अवतरण के लिए।
हैं गगन तक बढ़ी इन मशालों की लौ, ज्योति के पर्व के सन्तरण के लिए ।।
एकता रश्मि का अंशुमाली प्रखर, द्वेष दुर्भाव के अपहरण के लिए।
एक संग्राम तूफान लेकर चढ़ा, मौन बंजर धरा उर्वरण के लिए ।।
चन्द्र से है कढ़ी अग्नि-सी यह किरण, पुष्ट पाषाण पवि के द्रवण के लिए।
कत्ल, वैषम्य, विघटन, घुटन, टीस की मृत्यु आगे बढ़ी निस्तरण के लिए ।।
आज इन्सानियत सत्य के शील का ध्वज उठा, शौर्य के अनुसरण के लिए।
जाति के भेद को भेदने मेदिनी की उठी धूल नभ के वरण के लिए ।।
पातकी त्रास-रोधी समर की रणन, शील सद्भाव के आचरण के लिए।
तामसी तर्जना का तिमिर त्यागने, क्रांति की शुभ्रता आभरण के लिए ।।
नष्ट हो व्यष्टि का कष्टकारी प्रवण, दिव्य मनुजत्व के संक्रमण के लिए।
सत्य के धर्म में कर्म की व्यंजना, कृष्ण गीतोद्भवी भव्य प्रण के लिए ।।
सत्य के स्वत्व का तत्त्व जागृत हुआ, वर्णमाला बढ़ी व्याकरण के लिए।
ध्वंस की धृष्टता कर दमन का शमन अर्चना शुभ्र वातावरण के लिए ।।
आज भड़का अंगारों का अभियान है, बेबसी चल पड़ी आक्रमण के लिए।
राम रण का चरण पा त्वरण बढ़ चला, रावणी आवरण के हरण के लिए ।।

—नरसिंह नारायण पाण्डे
(चंचल बलरामपुरी)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

	मूल्य
1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	500 रु.
2. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	80 रु.
3. वेद-ज्योति	15 "
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मन्त्रों की व्याख्या)	30 "
5. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	20 "
6. अथर्ववेद परिचय	6 "
7. संस्कार विधि (सजिल्द)	15 "
8. सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	20 "
9. यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा. रामनाथ वेदालंकार)	25 "
10. सत्यार्थ-प्रकाश (10"×15") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	151 "
" " (आर्ट पेपर पर)	201 "
11. ज्योति-स्तम्भ	10 "
12. वैदिक सम्पत्ति	101 "
13. योगासन	2 "
14. योग और ब्रह्मचर्य	3 "
15. Concept of God	50 "
16. श्रीमद् दयानन्द प्रकाश	25 "
17. LIGHT OF TRUTH	50 "
18. प्रकृति और सर्ग : (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	6 "
19. वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	50 "
20. संक्षिप्त महाभारत	50 "
21. संक्षिप्त रामायण	10 "
22. गायत्री मन्त्र (चार्ट) हिन्दी व्याख्या सहित	1.5 "

दोनों ओर पत्ती लगी। कम से कम दस प्रतियां मंगवायें। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें। सूचीपत्र मुफ्त मंगायें।

कार्यालय :	दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर
2286, आर्यसमाज रोड	महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
करोलबाग, नई दिल्ली-110005	अलीपुर, दिल्ली-110036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओं और सिखों का धर्म एक ही है

—निरंजन वर्मा, भूतपूर्व संसद् सदस्य

पंजाब में विगत वर्षों से ही उत्पातों के कारण देश-विदेश के नागरिकों में यह धारणा घर कर गई है कि इन दोनों समुदायों के धर्म अलग-अलग हैं। वास्तव में यह कहना ही भ्रांतिमूलक है कि दोनों के धर्म पृथक् होने कारण ही वे अब विभाजित हैं। निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाये तो इन दोनों समुदायों में कलह और उत्पात धर्म के कारण नहीं अपितु राजनैतिक सत्ता की होड़ के कारण उत्पन्न हुए हैं। धर्म ने तो अतीत में दोनों समुदायों को जोड़ कर ही रखा था। ओम् (प्रणव) का प्रचलन, गोसेवा, राम गुण-गान, पुनर्जन्म की आस्था तथा मरणोपरान्त अग्निदाह, अस्थिविसर्जन की धार्मिक क्रियायें एवं अन्याय संस्कार दोनों समुदायों में एक-से ही हैं। नाम सादृश्य के अलावा दोनों में विहाह भी होते हैं।

यद्यपि यह सत्य है कि गुरु नानक जी ने एक नये सम्प्रदाय को जन्म दिया पर वे भी पूर्ण रूप से हिन्दू ही थे। उनके जीवनकाल में केवल एक शिष्य ही मुसलमान था। वाद में अपवाद छोड़कर कभी भी किसी मुस्लिम धर्मावलम्बी ने सिख धर्म को स्वीकार नहीं किया। दसों गुरुओं के शिष्य हिन्दुओं में से प्राप्त होते रहे। यही नहीं, स्वयं सिख शब्द भी शिष्य शब्द का अपभ्रंश है। भाषा, व्यवहार, सभ्मता, संस्कृति, उत्तराधिकार आदि में तथा विवाहोपरान्त पति-पत्नी की उदास भावनाओं में वे पूरे हिन्दू ही रहे हैं। संस्कृत अथवा हिन्दी जानने वाला कोई भी व्यक्ति उनकी भाषा को सरलता से समझ सकता है। लिपि भी देवनागरी वर्णमाला के सबसे अधिक निकट है।

हिन्दुओं के रक्षक

अधिकतर सिख उत्तर भारत की वीर हिन्दू जाति जाट से ही उद्भूत हैं। इस कारण मुस्लिम शासनकाल में हिन्दुओं की रक्षार्थ उन्होंने लगातार घोर युद्ध किये हैं। उन्होंने मुस्लिम आक्राताओं के सामने कभी भी आत्म-समर्पण नहीं किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुंतखब-उल-लुबाब के लेखक धर्मान्ध मुहम्मद हाशिम ने जिसे काफी खां कहा जाता है, सिखों को काफिरों का सम्प्रदाय कहा है। उसने लिखा है—

'इस संप्रदाय में मुख्यत: पंजाब के जाट और खत्री हैं। औरंगजेब को जब इन काफिरों का पता चला तो उसने नायबको गुरुओं और इनके मंदिरों को गिरा देने का आदेश दिया। चूंकि सिख लोग अवतारवाद को मानते हैं अत: एक व्यक्ति ने अपने को गुरु का अवतार बता कर राजद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। बंदा नाम के इस भ्रष्ट व्यक्ति ने दिल्ली से लाहौर तक का सारा प्रदेश रौंद डाला। इनमें सहस्रों हिन्दू शामिल हो गये और सच्चे बादशाह का नारा लगाने लगे।'

इस घटना से पूर्व भी गुरु तेगबहादुर और गुरु गोबिन्द सिंह के द्वारा हिन्दू जाति के लिए किये गये अनुपम बलिदानों की कहानियाँ भारत भर में बड़े सम्मान के साथ वर्णित की जाती हैं। परन्तु यह नहीं सोचा जाना चाहिये कि हिंदू जाति की रक्षार्थ किये गये ये बलिदान गुरु परम्परा की समाप्ति के बाद समाप्त हो गये। वस्तुत: बाद में भी पंजाब के राजाओं और सरदारों ने हिंदू धर्म रक्षार्थ धन-धान्य और जीवन का उत्सर्ग किया है।

किसी समय भोपाल की पोलिटिकल एजेंसी में कार्यरत श्री जोजेफ डेविड कनिंघम ने सिखों का उत्कृष्ट इतिहास लिखा है। वे सन् 1838 में सिख महाराजा रणजीतसिंह से भी मिले थे। उनके अनुसार महाराजा बड़े धार्मिक और हिंदूनिष्ठ व्यक्ति थे। पाठकों से यह तथ्य छिपा हुआ नहीं होगा कि ये महाराजा रणजीत सिंह ही थे, जिन्होंने मुगल बादशाहों द्वारा ध्वस्त काशी के विश्वनाथ मन्दिर का न केवल उद्धार ही किया था, अपितु उस मंदिर से सटे हुए अहिल्याबाई द्वारा नवीन ज्यतिलिंग के नये मंदिर पर पूरे सोने के पत्र चढ़वा कर उसे दिव्यता प्रदान की।

उस समय सिख हिंदू धर्म का ही अंग माने जाते थे। रणजीतसिंह के पौत्र नौनिहालसिंह के श्वसुर सरदार श्यामसिंह की रणक्षेत्र में मृत्यु हो गई तो उनकी पतिपरायणा स्त्री ने अपने विवाह के समय के नवीन वस्त्र पहि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुके और सोलह श्रृंगार करके अपने पति की चिता में अपने को विसर्जित कर दिया।

महाराजा की पत्नी रानी जिंदा की धार्मिक प्रवृत्ति से अंग्रेज बहुत सशंक रहते थे कि कहीं इससे विद्रोह न फैल जावे। अतएव नाराज होकर अंग्रेज गवर्नर सर हेनरी लारेंस ने महारानी को एक कड़ा पत्र भेजा। उसमें लिखा—

आप गत एक माह से नित्य प्रति पचास ब्राह्मणों को भोजन करा रही हैं। इसके अतिरिक्त एक धार्मिक स्थल पर मंडल में भी सौ ब्राह्मणों को भेजे जाने का समार मिला है। यह सब पूर्णतः अनुचित है। आप इसको पूरी तरह त्याग दें यदि आप की इच्छा दरिद्र और धार्मिक व्यक्तियों को भोजन कराते रहने की है तो आप प्रत्येक हिंदू मास की प्रथम तिथि को अथवा शास्त्रसम्मत किसी अच्छे दिन यह कार्य करें।'

एक अन्य धार्मिक विश्वास की भी चर्चा करना आवश्यक है। किसी दरबारी की पदोन्नति के समय सिख राजा अपने हाथ से उसके माथे पर तिलक लगा कर सम्मान करते थे। हेनरी लारेंस ने दलीपसिंह को कहा कि वे तेजसिंह का तिलक करें। रानी ने दलीपसिंह को मना कर दिया कि तेजसिंह को कभी तिलक न करे। इससे अंग्रेजों में नाराजगी फैल गई। इस बात पर लार्ड हार्डिज ने अपने एक सहकारी केरी साहब को व्यक्तिगत पत्र लिखा कि इस घटना से सर हैनरी लारेंस का तिरस्कार हुआ है। फलस्वरूप यह तिलक दरबार के एक ब्राह्मण द्वारा तेजसिंह के माथे पर लगवा दिया गया। सन् 1848 में जब महारानी को लाहौर से हटा कर शेखूपुरा भेजा गया तो उन्हें बहुत असंतोष हुआ। फलतः उन्हें 14 मई सन् 1848 को एक हिन्दू धार्मिक स्थान काशी भेज दिया गया ताकि वे वहाँ अपना धार्मिक पूजा-पाठ आदि नियमानुसार किया करें। एक अन्य असंतोषी सरदार चतुर सिंह का भी हिन्दू तीर्थों का देशाटन करने के लिए प्रबन्ध कर दिया गया।

गोभक्ति

गौ के प्रति भी राज दरबार की पूरी निष्ठा और भक्ति थी। जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजों की आज्ञानुसार महाराज के पुत्र दलीपसिंह को एक अंग्रेज सेना नायक जनरल लेंगिन के संरक्षण में उनके निवास पर नजरबन्द कर दिया गया तो लेंगिन ने यह आज्ञा प्रसारित करा दी कि उनके बंगले के चारों ओर के क्षेत्र में गोमांस न लाया जाये, दलीपसिंह की पतित पावनी गंगा के प्रति भी अगाध श्रद्धा थी। एक इतिहासज्ञ के अनुसार जब अंग्रेज दलीपसिंह को लाहौर से फतहगढ़ ले जा रहे थे तो मार्ग में उन्होंने हरिद्वार जाकर दान-पुण्य करने की इच्छा प्रकट की। वहाँ उनके पास दान-पुण्य करने के लिए धन नहीं था अतएव उनकी एक बांदी मंगला ने दलीपसिंह को अपना धन देकर दान करने की प्रार्थना की। परन्तु स्वाभिमानी राजा ने अपनी बांदी से धन लेकर दान करना अनुचित समझा और दुःखित मन से अस्वीकार कर दिया।

सिखों को गंगा के प्रति इतना मोह और श्रद्धा थी कि दलीपसिंह की एक मामी ने गंगा के तट पर निवास करने की आज्ञा चाही परन्तु अंग्रेजों ने धार्मिक भय से उनकी प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया।

महारानी जिन्दां काशी में रहकर धर्म पूजादि में व्यस्त रहती थी। उस पर भी अंग्रेजों को शक हुआ तो वे चनार भेज दी गईं। वहाँ वे हिन्दू धर्म के अनुसार संन्यासिनी हो गईं और चुपके से नेपाल चली गईं। अन्त मे सन् 1864 में जब उनकी मृत्यु हो गई तो दलीपसिंह ने प्रचलित प्रथा के अनुसार नर्मदा के पुण्य तट पर पहुंच कर उनका अस्थिविसर्जन किया।

हिन्दू धर्म के अटूट अंग

अतः यह निर्विवाद तथ्य है कि धर्म के विषय में हिन्दुओं और सिखों में कोई अलगाव नहीं। दिल्ली में जब बिड़ला बन्धुओं द्वारा निर्मित लक्ष्मी-नारायण मन्दिर का महात्मा गांधी द्वारा उद्घाटन हुआ तो उन्होंने यह लिखा देखकर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की कि महान् हिन्दू धर्म की आर्य-समाज, सनातनी, सिख, बौद्ध और जैन धार्मिक शाखायें हैं।

अंग्रेजों ने फूट का बीज बोकर सिखों को हिन्दुओं से पृथक् करना चाहा परन्तु सन् 1952 में भोपाल में हुए हिन्दू महासभा के अधिवेशन में सिखों के नेता मास्टर तारा सिंह ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि वीर सावरकर की परिभाषा के अनुसार सिख हिन्दू ही हैं। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नारी समाज किस ओर ?

—आनन्दप्रकाश आर्य

आज विज्ञान की अनेक दुर्लभ उपलब्धियों से वैज्ञानिक जन तो हर्षित हैं ही, मानव समाज भी इन उपलब्धियों को ईश्वरीय सत्ता पर विजय का प्रतीक मानने लगा है जो मनुष्य का भ्रम ही कहा जा सकता है। आज की नवीनतम उपलब्धि गर्भ काल के दौरान उदरस्थ शिशु के लिंग को प्रसव से पूर्व जान लेना है। कुछ लोग इस उपलब्धि को स्त्री-पुरुष की इच्छानुसार सन्तान को धरा पर उतारना कह सकते हैं परन्तु यह खोज समस्त नारी समाज के लिये एक अजीब मुसीबत व उलझन बनकर रह जायेगी।

यदि गर्भस्थ सन्तान परिवार वालों की इच्छा के विपरीत होगी तो उस के जन्मने से पूर्व ही गर्भपात की वैधानिकता का सहारा लेकर गर्भपात करा उससे छुटकारा पाने का प्रयास हो सकता है। अब विज्ञान के इस करिश्मे से वह भले ही सन्तुष्टि अनुभव करे किन्तु यह स्थिति उस दम्पती के जीवन को नारकीय बना देगी और इससे सारा समाज प्रभावित होगा।

बच्चा माँ के लिए कितना प्यारा होता है इस बात की कल्पना की जा सकती है। इसके पालन-पोषण के लिए वह कष्ट सहती है और अपने जिगर के इस टुकड़े को कष्ट उठाकर भी हंसमुख देखना चाहती है। अब उसकी इच्छा के विपरीत गर्भपात की बात सामने आने से उस पर क्या गुजरेगी—कहा नहीं जा सकता। हम समाचारपत्रों में विज्ञापन पढ़ते हैं कि अमुक क्लिनिक में आओ, शुल्क जमा करो और जानो कि स्त्री के गर्भ में लड़की है या लड़का, इसका शुल्क भी कम नहीं होता, जो हरेक चुका सके। पता लगने पर यदि लड़की हुई तो निश्चित ही कहीं-कहीं मातम छा जायेगा और यदि लड़का हुआ तो उस देवी के लिए वरदान बन जायेगा। यदि पारिवारिक जन समझदार हैं, पुत्र अथवा पुत्री को समभाव समझते हैं तब ठीक अन्यथा कलह जन्म लेगा। पारिवारिक सुख-शान्ति चौपट हो जायेगी। हर दशा में यह भ्रूण परीक्षण नारी समाज के लिए कल्याणकारी नहीं बन सकेगा। इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भ्रूण परीक्षण का उद्देश्य भले ही कुछ हो, किन्तु अभी हमारा समाज इतना विवेकशील और प्रबुद्ध नहीं, जो इस उपलब्धि के प्रयोग को लाभकारी बना सके। सबसे पहले तो स्त्री समाज में ही इतनी जागरूकता नहीं कि लड़की या लड़के को समभाव दे, सदियों की मानसिक दासता के वशीभूत हमारी सांस्कृतिक धार्मिक उन्नत मान्यतायें धराशायी हो गई है और रही-सही कमी को आज की गलत अर्थव्यवस्था ने चौपट करके रख दिया है। अभी तो दहेज रूपी दानव के कारण ही न जाने कितनी बाल कलिकायें खिलने से पहले ही कुम्हला जाती हैं। अपना अस्तित्व मिटा लेती हैं। ऐसी घटनायें प्रतिदिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होकर मानवता के मुख पर कालिख पोत रही हैं। वर्तमान उपलब्धि निश्चित रूप से कटे पर नमक बुरकने का काम करेगी, जो एक चिन्तनीय स्थिति है।

इस गम्भीर और सामाजिक चिन्तन पर आज के मनीषियों को विचार करना होगा, अन्यथा परिणाम दुःखद होगा। टेलीविजन के अश्लील प्रसारणों ने तो समाज का चरित्र ही चौपट कर दिया है। अब यह भ्रूण परीक्षण पारिवारिक सुख-शांति को घुन लगायेगा। एक समय था कि कन्या के जन्मने की हीन भावना से गला घोंट दिया जाता था जो आज भी कहीं-कहीं किसी रूप में चल रहा है और अब इसकी पुनरावृत्ति गर्भकाल में भ्रूण परीक्षण कराकर गर्भपात कराने की वैधानिक छूट के कारण पनप उठेगी। यह धारणा आज निर्मूल बन गई है कि बेटा बुढ़ापे का सहारा होता है। हमने अनेक माता-पिताओं को कई पुत्रों वाला होने पर भी बुढ़ापे में रोटी के टुकड़ों के लिए तड़पते देखा है। कितनों को अपने दुखड़े रोते देख रहे हैं।

इस नवीनतम उपलब्धि के दूरगामी परिणामों पर नारी समाज की प्रबुद्ध महिलाओं को चिन्तन करना चाहिये। लड़का हो या लड़की सबको जीने, खाने-पीने और कर्म क्षेत्र में कार्य करने का समान अधिकार है। उनके अपने-अपने दायित्व हैं। उन्हें इस परीक्षण का विरोध करना चाहिये अन्यथा नारी जीवन नारकीय बन जायेगा।

जीवन को उन्नत, सुखी और समृद्ध बनाने के लिए वेद, वेदांग और शास्त्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्मशील होने का उपदेश करते हैं। स्त्री-पुरुष, लड़का-लड़की समाज के अभिन्न अंग हैं। यदि एक अंग भी कमजोर होगा तो गिरावट आ जायेगी। पतन होने लगेगा। इसलिए सावधान होकर आज हम पाश्चात्य प्रवाह की आँधी से बचें। पाश्चात्य सभ्यता के परिणामों को भुगत कर लोग सुख-शांति के लिए भारतीय अध्यात्म की ओर आ रहे हैं। कैसी विडम्बना है यह! मानसिक दासता के जन्मदाता भ्रूण परीक्षण और अन्य ऐसी ही बातों का यथा व्यापारिक क्षेत्र में विज्ञापनों पर नारी के बेढंगे अर्द्ध नग्न चित्र अथवा धार्मिक चिह्न प्रयोग का सर्वत्र विरोध होना चाहिये और महिला कल्याण संस्थायें इसमें आगे आयेंगी तो इसका अधिक प्रभाव पड़ेगा। ★

गुरुकुल प्रभात आश्रम के विद्यार्थी विजयी

धर्म संघ महाविद्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित संस्कृत भाषा एवं सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता में गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी (भोलाझाल) के विद्यार्थी वाचस्पति, राजेन्द्र और बृहस्पति विजयी हुए और उन्होंने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर दो चलवैजयन्ती उपहार जीते।

आर्यसमाज शक्ति नगर (मिर्जापुर) का वार्षिकोत्सव

मिर्जापुर ? आयसमाज शक्ति नगर का तृतीय वार्षिकोत्सव 25 से 28 मार्च तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन, युवा सम्मेलन आदि का आयोजन हुआ। अन्य विद्वानों के अतिरिक्त पंजाब विश्वविद्यालय को दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष डाक्टर भवानीलाल भारतीय भी उत्सव में पधारे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मा, परमात्मा और प्रकृति, जिन पर त्रैतवाद का सिद्धान्त आधारित है

—रामनारायण महता

यह ब्रह्माण्ड बहुत ही विशाल है। इसकी सीमाए अनन्त हैं। हमारे सौर-मण्डल की तरह असंख्य मण्डल उसमें हैं, जिसमें पृथ्वी भी एक मण्डल है। इस पृथ्वी में असंख्य वस्तुएं तीन पदार्थों से बनी हैं। आत्मा, परमात्मा और त्रैतवाद का सिद्धान्त इन्हीं तीनों की सत्तापर आधारित है काफी छूट प्रकृति।

जिससे शरीर बनता है उसका नाम प्रकृति है। प्रकृति जड़ अर्थात् अचेतन है। सब प्राणियों के शरीर प्रकृति से ही बने हैं और फिर प्रकृति में ही मिल जाते हैं।

प्रकृति परमाणु रूप है। इसमें असंख्य परमाणु हैं। वे समस्त ब्रह्माण्ड में बिखरे हुए हैं। वे सब परमाणु एक समान हैं। इनसे ही वस्तुओं के अनेकानेक रूप बनते हैं।

दूसरा पदार्थ परमात्मा है जो उन्हें विभिन्न रूप प्रदान करता है। वह सभी वस्तुओं का निर्माता है। परमात्मा ही सबको बनाता है।

परमात्मा एक ही है। उसने इस जगत् की रचना की है और इस पूर्ण ब्रह्माण्ड में वह व्यापक है। वेद में कहा है—

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्

अर्थात् परमात्मा, जो कुछ इस ब्रह्माण्ड मे चल रहा है अथवा ठहरा हुआ है, सबमें व्याप्त है और सभी पर छाया हुआ है।

तीसरा पदार्थ है आत्मा। जब कोई ऐसा शरीर बनता है, जिसमें यह सुखपूर्वक रह सकता है, तो एक जीव उसमें रहने के लिए समा जाता है।

जीव जो प्राणियों में बैठा कार्य करता है, वह परमात्मा से विलक्षण है। ये असंख्य हैं। सब भिन्न-भिन्न हैं। सब अपनी इच्छा से कार्य करते हैं और उसका फल भोगते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शरीर और आत्मा के संयोग को ही जीवन कहते हैं। आत्मा को अपने विभिन्न कार्यों के लिए कुछ यंत्र चाहिये और वे यंत्र शरीर में लगे होते हैं। जब शरीर में कुछ ऐसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं, जिनके फलस्वरूप शरीर आत्मा के रहने योग्य नहीं रह जाता तो आत्मा शरीर को छोड़ जाता है। आत्मा मरता नहीं परन्तु आत्मा छोड़ने के बाद शरीर विघटित होने लगता है। गीता में कहा है—

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदंततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ।।

अर्थात् आत्मा अविनाशी है। यह पूर्ण शरीर में व्याप्त है और इस अव्यय पदार्थ का कोई नाश नहीं कर सकता। जीव मरता नहीं, शरीर मरता है। शरीर के मरने के समय वह इसे छोड़ जाता है।

प्राणी में प्राण कहां से आता है? इसके विषय में वेद में कहा है—

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वामध्न्या इंद्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा बस्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।

इसका अभिप्राय यह है कि प्राणशक्ति जो सब प्रकार के कर्म करने की सामर्थ्य रखती है, वह सूर्य से पृथ्वी पर अन्न और ऊर्जा के रूप में आ रही है। परमात्मा की शक्ति ही सूर्य के मार्ग से पृथ्वी पर आती है। ब्रह्म सूत्रों में भी लिखा है। इतरपरामर्शात्स इति चेन्न संभवात् ।।

अर्थात् परमात्मा की शक्ति दूसरे (जीवात्मा) की राय से प्रयोग होती है। परमात्मा की शक्ति ही प्राणवानों का प्राण है।

इस प्रकार वास्तविक शक्ति का स्रोत हैं आत्मा और परमात्मा। इसी से प्राणों में कार्य करने की शक्ति आती है। कोई भी कार्य बिना उस तत्त्व की सहायता के नहीं हो सकता, जो प्राणी में जीवन बनाए हुये हैं। एक आत्मा है, जो हम से कार्य कराता है। यह शरीर जड़ प्रकृति है। जड़ स्वत: कोई कार्य नहीं कर सकता। आत्मा गतिशील तत्त्व हैं और ये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सारे कार्य आत्मा ही करता है। जब तक वह है यह शरीर चलता है और जब वह तत्त्व चला जाता हैं, तब शरीर शव रह जाता है। वह प्रकृति के समान क्रियाविहीन हो जाता है। अतः हमारे सारे कार्यों का उत्तरदायित्व आत्मा पर ही है और आत्मा शरीर में ही है।

प्राणी प्रकृति, मन और आत्मा का सहयोग है। जब आत्मा का संयोग मन और बुद्धि से होता है, तब प्राणी कर्म करने लगता है। जितनी पच्छी बुद्धि और मन मिलते हैं, आत्मा का कार्य उतनी ही अच्छी तरह हो सकता है। ये पूर्व जन्म के कर्मों से मिलते हैं।

मनुष्य-जन्म में उसे सब जीवों से अच्छी बुद्धि तथा मन मिलता है। इस प्रकार परमात्मा ही हमें शरीर, बल, बुद्धि और विद्या देने वाला है। अतः आइये, हम सब मिल कर गायत्री मन्त्र से उसकी आराधना करें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

आर्यसमाज रामपुरा (कोटा) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कोटा। आर्यसमाज रामपुरा कोटा के 88 वें वार्षिकोत्सव पर संक्षिप्त चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रो० रतन सिंह जी (गाजियाबाद), मीरायति जी (ज्वालापुर), श्री रामप्रसाद वेदालंकार (गुरूकुल काँगड़ी), कु० महीपाल सिंह भजनोपदेशक आदि ने अपने विचार प्रकट किये।

प्रथम दिन प्रातः यज्ञ एवं भजनोपदेश के पश्चात् शोभा यात्रा निकाली गई।

गुरुकुल दाधिया की रजत जयन्ती

अलवर। आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया की रजत जयन्ती 28 मई से 31 मई तक धूमधाम से मनाई जा रही है। अनेक विद्वान् संयासी और भजनोपदेशक इस उत्सव पर पधार रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

स्वाधीनता की कीमत

—कुमारी दिव्या

"कौन है ?" नारी का एक अलसाया हुआ स्वर गूंजा।

"मैं तांत्या हूं दीदी।" पुरुष ने कहा। "तांत्या!" नारी ने घबरा कर कहा। अन्दर घर में कुछ देर खटर-पटर के बाद दरवाजा खुलने की आवाज आई। "अरे तांत्या, इतनी सर्दी में ! क्या बात है ?" नारी ने पूछा। "दीदी, मेरे पीछे कानपुर की पुलिस लगी है। लगता है कि आज नहीं बच पाऊंगा।" तांत्या ने उत्तर दिया। "नहीं भैया, ऐसा मत कहो।" नारी ने तांत्या के होंठों पर हाथ रखते हुए कहा। फिर कुछ सोच कर बोली, "अन्दर आ जाओ भैया।" नारी तांत्या को लेकर अन्दर चली गई।

यह सन् 1857 के उस समय की कहानी है जब मेरठ छावनी से उभरा स्वतन्त्रता संग्राम देश भर में फैल रहा था। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और कानपुर में तांत्या टोपे ने अंग्रेजों की पुलिस की नाक में दम कर रखा था। अंग्रेजी पुलिस इन दोनों को हर हालत में जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए प्रयत्नशील थी। आज जब अंग्रेजी पुलिस को पता चला कि तांत्या टोपे दिल्ली से कानपुर जा रहे हैं, तो कानपुर की पुलिस ने अपना जाल बिछा कर इस सुनहरे अवसर को, जिससे वह तांत्या को पकड़ने में सफल हो सकती, खोना नहीं चाहा।

दिसम्बर मास का अंतिम सप्ताह चल रहा था। सर्दी चरम सीमा पर थी। सूरज अपनी किरणें समेट कर तथा अपने रथ को लौटा कर अस्ताचल की ओर जा रहा था। कहीं दूर पोस्ट लैम्प पर दीपक जल रहा था। खबर आई कि जिस ट्रक में तांत्या टोपे गुजरने वाला है, वह ट्रक नम्बर दो चौराहे पर जाने वाला है। पुलिस की गतिविधियां और तेज हो गईं। अचानक ट्रक की हैडलाइट चमकी। ट्रक करीब आने लगा तो कर्मचारी और सतर्क हो गये। ट्रक चौराहे पर आया और पुलिस कर्मचारी के हाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस
वतन पर मिटने वालों का यही बाक़ी निश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देने पर रुक गया। फिर अचानक गतिमान् हो गया। पीछे से गोलियों की वर्षा से ट्रक का पहिया फट गया और करीब 5 या 7 गज की दूरी पर एक पेड़ से टकरा गया। इससे पूर्व कि पुलिस ट्रक पर पहुंचती' एक छाया ट्रक से निकल कर बाईं ओर बस्ती में घुस गई। पुलिस जीप ट्रक के पास जाकर रुकी और उसने बस्ती को चारों ओर से घेर लिया।

'ट्रक से बाहर निकलो तांत्या।" [पुलिस अधिकारी पिस्तौल तान कर बोला, "तांत्या, बाहर निकलो वरना मैं गोली से भून दूंगा।"

"लगता है मर गये सब," पुलिस अधिकारी धीरे-धीरे बढ़ता हुआ फुसफुसाया।

पुलिस अधिकारी बढ़ता हुआ ट्रक के बिलकुल करीब आ गया तो उसने देखा कि दो आदमी घायल अवस्था में पड़े हैं। एक मृत अवस्था में पड़ा है। उसने आदेश दिया, "दोनों को बाहर खींच लो।" आदेश मिलते ही कर्मचारी आगे बढ़े और एक व्यक्ति का हाथ पकड़ कर खींचा। दूसरे ने दूसरे घायल को खींचना चाहा पर खींच न सका तो एक घूंसा उसके मुंह पर दे मारा और अन्य कर्मचारी की सहायता से उसे भी बाहर निकाला।

'तांत्या कहाँ है," पुलिस अधिकारी ने एक घायल का सिर पकड़ कर झिंझोड़ा तो उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई। "यह तो मर गया साला।" पुलिस अधिकारी ने कहा। फिर दूसरे के पास गया तो उसने सुना, घायल कराह रहा था पानी-पानी। पानी जरूर पिलायेंगे बस इतना बता दो कि तांत्या कहाँ है ?" पुलिस अधिकारी ने उसे दिलासा भरे शब्दों में कहा। मुझे नहीं पता, पानी।" कहते-कहते वह प्यासा भी तड़प कर एक ओर लुढ़क गया। पुलिस अधिकारी चिल्लाता रहा, "तांत्या टोपे कहां है?" परन्तु तांत्या वहाँ कहाँ था। वह तो अपनी बहिन के हाथों दूध पी रहा था।

"दीदी। "हूं।" क्या सोच रही हो" "कुछ भी तो नहीं।"

"तो फिर दरवाजा क्यों नहीं खोलतीं ? कोई खटखटा रहा है बहुत देर से। "कौन है ? खोलती हूं।" "मैं हूं मनीष।" "मनीष !" नारी ने घबराकर दोहराया। "कौन ? कौन है दीदी ? ताँत्या ने पूछा था। "तुम्हारे जीजा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थी" नारी ने कहा। तांत्या ने मुस्कराते हुए कहा "तुम तो एक दम घबरा गई हो। क्या बात है?" "ऊंह। नहीं, कुछ भी नहीं।" नारी ने संभलते हुए कहा। उसने दरावाजा खोला तो एक पुलिस अधिकारी ने प्रवेश किया। "आज बहुत देर कर दी है आपने।" "हाँ आज हमें पता लग गया था कि तांत्या टोपे दिल्ली से कानपुर आ रहा है। हमारी पूरी तैयारी के बाद भी वह निकल भागा।" "जल्दी से हाथ-मुंह धो कर आओ। मैं खाना लगाती हूं।" "अन्दर कमरे में तो जाने दो। पहले थोड़ी देर आराम करूंगा," मनीष ने कहा। "नहीं वर्दी उतार कर मुझे दो और मुंह हाथ धोकर अन्दर आओ।" नारी ने जिद करते हुए कहा। "अरे, आज कुछ ज्यादा ही मेहर-बान हो।" "यह मज़ाक छोड़ो, जल्दी करो, आज सर्दी भी कुछ ज्यादा है।"

मनीष ने वर्दी उतार कर रक्षा को दे दी और स्नान घर में चला गया। रक्षा वर्दी ले कर घर में गई और उसने बैल्ट खोल कर पिस्तौल हाथ में ले ली। उसने दूसरे कमरे में झांक कर देखा, तांत्या आराम से बिस्तर पर लेटा हुआ था और रक्षा कुछ सोच में डूबी हुई थी। वह सोचने लगी कि एक ओर पति है, जो उसे जान से भी ज्यादा प्यार करता है और अंग्रेजी पुलिस का अधिकारी है और वह भी कर्त्तव्य परायण। यदि उसे पता चल गया कि तांत्या यहाँ है तो वह उसे किसी कीमत पर नहीं छोड़ेगा। दूसरी ओर धर्म भाई तांत्या टोपे। उसे याद है कि जब वह राखी खरीद कर लाई थी, लेकिन बांधती किसे यह सोच कर उसके नेत्र सजल हो रहे थे, तभी घर में कोहराम मच गया। उसके पिता ने दिन एक क्रांतिकारी के विरुद्ध कोर्ट में अर्जी दी थी। वही क्रांतिकारी आज बदला लेने की भावना से आया था। दो आदमी उन्हें कोड़े मार रहे थे। एक खड़ा देख रहा था। वह दौड़ कर उसके पास गई थी और चिल्ला उठी थी, "भैया मत मारो मेरे पिता को। उन्हें बचा लो। भैया, तुम्हें एक बहिन की सौगन्ध।" और फिर वह गर्जा था "फैज सिंह, किशन लाल। छोड़ दो इन्हें।" और हाथ जोड़ कर बोला था। "बहन, मैं नहीं जानता कि तेरी कुछ सेवा कर सकूंगा। तूने मुझे अनजाने में भाई कहा तो मेरी इस सूनी कलाई पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राखी बांध दे। मैं आज तो तुझे कुछ नहीं दे पाऊंगा, क्योंकि मुझे पुलिस का डर है। परन्तु भविष्य में कोशिश करूंगा।" यह कह कर वह भाग निकला था। आज वह धर्म भाई जान हथेली पर रख कर स्वतन्त्रता संग्राम को सफल करने का बीड़ा उठाये फिरता है। हे ईश्वर! किसे बचाऊं? देशभक्त धर्म भाई को या अंग्रेजभक्त पति को। स्नानघर का दरवाजा खुलने का स्वर सुन कर रक्षा की तन्द्रा भंग हुई। उसने निर्णय करना था। अचानक रक्षा के मुखमण्डल पर नई आभा चमकी। लगा कि उसने निर्णय कर लिया है। उसने पिस्तौल पर उंगलियों की पकड़ मजबूत की और सीधे कदमों से बाहर आंगन में आ गई। उसने देखा कि दरवाजा अभी बन्द है और मनीष तौलिये से मुंह पोंछ रहा है। अचानक मनीष की दृष्टि दरवाजे की ओर गई तो रक्षा को पिस्तौल ताने देखा।

"यह क्या मजाक है, रक्षा?" "वहीं खड़े रहो। जानते हो कि जिस तांत्या के पीछे तुम पड़े हो, वह मेरा धर्म भाई है।" "क्या?" मनीष देखता रह गया "कहाँ है वह?" कहता हुआ मनीष रक्षा की ओर बढ़ा। रक्षा सतर्क थी। उसने कहा "तांत्या यहीं इसी घर में है। दूसरे कमरे में।" मनीष इतना सुनते ही कमरे की ओर दौड़ा। परन्तु दरवाजे पर पहुँचने से पूर्व ही रक्षा ने पिस्तौल से गोली दगा दी। गोली मनीष की पीठ में धंस गयी। वहीं खड़े-खड़े वह चिल्लाई "मुझे अंग्रेजों का गुलाम सुहाग नहीं चाहिये।

गोली चलने एवं मनीष की चीख सुन कर तांत्या टोपे कमरे से बाहर निकल कर बाहर की ओर भागा। उसने देखा था कि रक्षा पिस्तौल लिये खड़ी थी औन मनीष लहूलुहान पड़ा था।

"दादी, आपने यह क्या किया? मुझ पराये की खातिर आपने अपने पति की बलि दे दी। मैं तो आपको कुछ भी न दे सका उलटा आपका सुहाग छीन लिया। मैं कैसा अभागा हूँ भाई जो अपनी बहिन को सुख तो दे न सका पर इतना दुःख दिया।" तांत्या रो पड़ा। अब जाओ भैया, चले जाओ, इससे पहले कि कोई पुलिस वाला आ जाये या कोई और आ जाये। जो अपने देश का नहीं वह मेरा सुहाग नहीं हो सकता, मेरा सुहाग तो है भारत,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसके रखवाले तांत्या जैसे वीर है। मेरे भैया मेरी राखी की लाज रखना। मुझे वचन दो कि मेरे सुहाग की रक्षा करोगे। यदि तुमने यह वचन निभा दिया तो मैं समझूंगी कि तुमने राखी का हक अदा कर दिया। भैया, अब देर न करो। पुलिस जीप की आवजें आ रही हैं। रक्षा के इशारे पर तांत्या टोपे पिछले द्वार की ओर मुड़ा। फिर अचानक पीछे की ओर रक्षा के चरण स्पर्श करके पिछले दरवाजे से निकल गया। और रक्षा—वह स्वयं एक गोली खाकर मृत्यु की गोद में चली गई थी और उसका आशीर्वाद तांत्या टोपे का साथ दे रहा था और कहीं दूर झुरमुट से आवाज आ रही थी—

न बहाओ आँसू उन पर, जो इस जहाँ से चले गये।

मातम करो उन कायरों, बुजदिलों का जो दुनिया के जुल्मों से आँख बन्द कर लेते हैं, मानो कुछ हुआ ही न हो। ★

हम असाधारण बनना चाहते हैं, इसलिए कि हम में एक विशिष्टता है, अमरता की। सब कुछ नाशवान् है। सूर्य भी, चन्द्र भी, सागर भी, विशाल ग्रह भी, सब मरेंगे पर मैं कभी नहीं मरूंगा यही मेरा विशिष्टपन मुझे महान् बनाता है।

मैं महान् हूं, अमर हूं शाश्वत हूं—आनन्द का पान मेरा जीवन है, सुधा का शृंगार और मुस्कराहट मेरा आभूषण है। मैं ऊंचा हूं सब से। प्रकृति से भी और सब से भी। पर कब? जब कि मैं लक्ष्य को अपने को पहचान लूं।

अमरता मेरी है, मैं अमर हूं। मैं अपने को जानता हूं, लक्ष्य को पहचानता हूं, तो अमर हूं। अमर होकर आनन्दमय हूं। किन्तु अपने को भुला कर मैं दुःखों का ढेर, निराशा का गीत बन जाता हूं।

प्राणों को ज्योतिर्मय करो। अंधेरा छोड़ो, लक्ष्य पहचानो और भटकना छोड़ो। यही सत्य है। सत्य को ठुकराओ नहीं, अपना लो। सब कुछ मिलेगा।

—महात्मा वेदभिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री देवीदास आर्य से भेंट-वार्ता

आवश्यकता है क्रान्तिकारी परिवर्तन की

—डॉ. सुधांशु मोहन अग्निहोत्री

आज भारतवर्ष में अराजकता और अनैतिकता का नग्न नृत्य हो रहा है। अधिकतर राजनीतिज्ञ अधिकार-लिप्सा के वशीभूत होकर राष्ट्रहित को भी अनदेखा कर रहे हैं। आये दिन समाचारपत्रों में हिंसा, अपहरण, व्यभिचार तथा अन्य अत्याचारों की सूचनायें पढ़ कर मातृभूमि के सच्चे सपूतों के चित्त विह्वल हो उठे हैं। एक ही प्रश्न लगातार हमारे मस्तिष्क को मथ रहा है—'क्या होगा इस महान् राष्ट्र का?' जिस पवित्र भूमि को ऋषियों ने अपने रक्त से सींचकर उर्वरा और वीर-प्रसू बनाया, वही अपने पुत्रों की अविवेकशीलता से व्यथित हो करुण क्रन्दन कर रही है।

यह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की ही कृपा है कि श्याम घटाओं से आवृत नैराश्यपूर्ण वातावरण में भी यदा-कदा आलोक-रश्मि के दर्शन से हम आशान्वित हो उठते हैं। भोगवाद का अंधड़ प्रखर वेग से चल रहा है किन्तु भारत के कुछ महापुरुष दीपक के समान ज्योतिर्मय होकर अन्धड़ और अन्धकार को पराजित करने का दृढ़ संकल्प ले चुके हैं। इन्हीं महापुरुषों में अग्रणी हैं निर्बलों और अबलाओं के संरक्षक श्रीयुत देवीदास जी आर्य। वही देवीदास, जिन्होंने अपने प्राणों को संकट में डाल कर निजी साधनों व अपने खर्चे से कई नारियों को गुण्डों के चंगुल से मुक्त कराया। जिन्होंने अनेक कन्याओं को वेश्यालयों से मुक्त करा उन्हें समाज में सम्मानित स्थान दिलाया। वही देवीदास, जिन्होंने बहुत-सी कन्याओं को अपनी पुत्रियां समझ कर उनके विवाह करवाये, वृद्ध स्त्री-पुरुषों और विधवाओं को शासन से पैंशन स्वीकृत करवाई। उन्हीं के हाथों तीन सहस्र से भी अधिक विधर्मी शुद्ध होकर वैदिक धर्म में दीक्षित हुए। श्री आर्य की इन्हीं सामाजिक सेवाओं के फलस्वरूप भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने उन्हें शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिछले दिनों मुझे महिलाओं के निन्दनीय शोषण तथा राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं पर श्री देवीदास आर्य से अन्तरंग भेंट-वार्ता करने का सुअवसर मिला। जब मैं गोविन्द नगर स्थित आर्य-निवास पहुंचा तो आर्य जी चिन्तन-लीन बैठे थे। मेरा मंतव्य जान कर कहने लगे—

'आज भारतवर्ष में विदेशी संस्कृतियों का कुप्रभाव अनैतिकता और अराजकता के रूप में परिलक्षित हो रहा है। अश्लील सिनेमा तथा अनीश्वरवादिता के कारण समूचा राष्ट्र पतन के गर्त में गिरता जा रहा है।'

महिलाओं के शोषण की चर्चा छिड़ने पर उन्होंने कहा—'यहां महिलाओं का शोषण तो प्राचीन काल से चला आ रहा है। एक समय था जब महिलायें धार्मिक व आध्यात्मिक शक्ति के बल पर अपनी सुरक्षा करने में सक्षम थीं, किन्तु आज भोगवादी संस्कृति के कुप्रभाव से नारी जाति अशक्त और अरक्षित हो गई है।'

'धार्मिकता से आपका अभिप्राय क्या है?' मैं पूछ बैठा।

वे बोले—'धर्म का अर्थ ढोंग और पाखंड नहीं। सदाचारी और सद्-विचारी व्यक्ति ही धार्मिक कहलाने का अधिकारी है।'

मैंने प्रश्न किया—'क्या विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा देकर वातावरण सुधारा जा सकता है?' 'क्यों नहीं, धार्मिक शिक्षा का प्रभाव तो निश्चित रूप से पड़ेगा। परन्तु वातावरण में अनैतिकता इस तरह व्याप्त हो चुकी है कि सुधार करने के लिए केवल शिक्षा-प्रणाली में ही नहीं, बल्कि फिल्म, राजनीति और सामाजिक जीवन में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।'

मैं ध्यानपूर्वक आर्य जी के विचार हृदयंगम कर रहा था। एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न मेरे मानस-मंच पर थिरक रहा था। अतः मुझे पूछना ही पड़ा—क्या वर्तमान परिस्थितियों में भ्रष्टाचार-उन्मूलन का कोई उपाय है?"

वे मेरे प्रश्न को उत्तरित करने लगे—

'देखिये, भ्रष्टाचार का रोग बहुत जटिल हो गया है। भारतवर्ष जैसे आध्यात्मिक राष्ट्र में लोगों को ईश्वर का भय तो रहा ही नहीं। सामाजिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मर्यादाओं को स्वार्थान्ध राजनीतिज्ञों ने समाप्त कर दिया है। प्रशासन और कानून का अपराधों पर कोई अंकुश नहीं रह गया है। जो मुट्ठी भर लोग भ्रष्टाचार का खुल कर विरोध करते हैं, वे समाज में दया के पात्र बन कर रह जाते हैं। आप स्वयं अनुभव करिये—कितने लोग हैं भारत में जो पराई स्त्रियों को माता के रूप में देखते हैं? कथनी-करनी में बहुत बड़ा अन्तर है। मैंने अनेक ऐसी कन्याओं को दुराचारियों के जाल से मुक्त कराया है, जिन्हें इनके बेशर्म पिताओं ने ही वेश्या-वृत्ति के लिए विवश किया था।

मेरा चित्त ग्लानि से भर उठा। कुछ पल खामोशी में बीत गये। फिर वार्ताक्रम को बढ़ाते हुए मैंने पूछा—'कुछ विचारकों का मान्यता है कि नारी वर्ग अपने शोषण के लिए स्वयं उत्तरदायी है। क्या आप उन लोगों से सहमत हैं, जिनका कथन है कि इज्जत लूटी नहीं, लुटाई जाती है।'

आर्य जी सहसा कुछ गम्भीर हो गये।

कहने लगे—'उन लोगों की धारणा गलत है। स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक भावुक और संवेदनशील अवश्य होती हैं लेकिन उन्हें पथभ्रष्ट करने में धूर्त पुरुषों का ही हाथ होता है। आपको आश्चर्य होगा कि प्रतिवर्ष लगभग एक लाख कन्याओं और महिलाओं को दुराचारियों द्वारा फांस कर भगाया जाता है। मेरा यह अनुभव है कि ऐसी अनैतिक गतिविधियों में उन अराष्ट्रीय तत्त्वों का हाथ अधिक होता है, जिन्हें भारतीयता से प्रेम नहीं है।'

मेरा अगला प्रश्न था –'मेरी धारणा है कि महिलाओं के नैतिक पतन में निर्धनता की अपेक्षा फैशनपरस्ती का अधिक हाथ है। आज उन्मुक्त जीवन और मुक्त यौनाचार को आधुनिकता या प्रगतिशीलता की संज्ञा देकर समूचे समाज को भ्रष्ट करने का षड्यन्त्र चल रहा है। आप की क्या राय?'

आर्य जी सहमति के स्वर में कहने लगे—'आप की धारणा ठीक है। मैं प्रायः देखता हूं कि सम्पन्न परिवारों की लड़कियाँ भी अश्लील सिनेमा आदि से प्रभावित होकर पथभ्रष्ट हो जाती हैं। भ्रष्ट और अनैतिक लोग प्रत्येक गलत काम को प्रगतिशील की संज्ञा देने लगते हैं। कुछ ऐसे भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकरण मेरे समक्ष आते हैं, जिनमें बेमेल विवाह के विरोध में युवतियां घरों से भागती हैं। इस तरह की सारी घटनाओं के लिए सरकार भी जिम्मेदार है। शासन यदि चाहे तो अश्लील साहित्य और सिनेमा पर प्रतिबन्ध लगा सकता है, मादक द्रव्यों का व्यापार रोक सकता है तथा विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा लागू कर सकता है। यह निश्चित है कि यदि लोगों को शासन का भय हो तो वे अपहरण और स्त्रियों की खरीदो-फरोख्त नहीं कर सकते।' 'मैं तो देखता हूं कि आज लोगों को सरकार, समाज और ईश्वर—किसी का भी भय नहीं रह गया। शासन धर्मनिरपेक्षता का नारा देता है किन्तु धर्मानुसार आचरण करना नहीं सिखाता। आपका क्या विचार है ?

'धर्मनिरपेक्षता भी तो असली नहीं है। यही कारण है कि अधिकतर लोग धर्म का झंडा तो उठाये घूमते हैं किन्तु धर्म का पालन नहीं करते। मैं पूछता हूं कि किस धर्मग्रन्थ ने व्यभिचार को मान्यता दी है। वास्तविकता तो यह है कि इस तथाकथित धर्मनिरपेक्षता ने समाज का बहुत बड़ा अहित किया है।' मैं चुपचाप आर्य जी के ओजस्वी वचनों को सुन रहा था। मैंने अन्तिम प्रश्न पूछने का साहस जुटाया—'वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं का हल क्या है ? सच्चरित और सम्पन्न भारत का निर्माण कैसे होगा ?'

आर्य जी ने संयत होकर कहा—'आज आवश्यकता है क्रान्तिकारी परिवर्तन की। जब तक लोगों का दूषित चिन्तन नहीं बदलेगा, सुधार की आशा करना व्यर्थ है। मैं तो सर्वशक्तिमान् पर पूर्ण आस्थावान् हूं। ईश्वरीय सत्ता के आगे भ्रष्टाचार, अनैतिकता और आतंकवाद का कोई अस्तित्व नहीं है। देश के जिम्मेदार लोग यदि युवा पीढ़ी का उचित मार्गदर्शन करें तो हमेशा विपत्तियां आई हैं लेकिन मैं अविचलित रह कर सामाजिक कार्योंमें लगा हुआ हूं।'

काश ! भारत की तरुणाई देवीदास जी के व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण करती तो आज अनेक समस्यायें निःशेष हो जातीं। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई दिल्ली के वोट क्लब को सार्वजनिक सभा में मुस्लिम नेताओं का विष वमन

—युगलकिशोर चतुर्वेदी

अयोध्या के राम जन्म भूमि मन्दिर और बाबरी मस्जिद के विवाद को लेकर 30 मार्च को कट्टर मुस्लिम नेताओं ने दिल्ली में एक जबरदस्त रैली निकाल कर वोट क्लब पर जो भाषण दिये, वे केवल उत्तेजक और भड़काने वाले ही नहीं थे, बल्कि भारतीय दंड संहिता की अनेक धाराओं को तोड़ने वाले और अराजकता के सूचक भी थे। उनके विरुद्ध कठोर से कठोर कार्रवाई की जानी आवश्यक थी, परन्तु केन्द्रीय सरकार ने गीदड़ भभकी देने के अतिरिक्त इन पंक्तियों को लिखते समय तक कोई भी कदम नहीं उठाया।

समाचारपत्रों में प्रकाशित समाचारों के अनुसार उक्त भाषणों के कुछ आपत्तिजनक अंश इस प्रकार हैं—

बाबरी मस्जिद संघर्ष समिति की जम्मू और कश्मीर कमेटी के अध्यक्ष अब्दुल गनी लोन ने कहा—"पहली बार मुसलमान यह सोचने पर मजबूर हुए हैं कि हिन्दुस्तान में दीन-ए-इस्लाम पर अमल करते हुए जिन्दा रहना है या गुलाम बनकर।' कर्नाटक कमेटी के अध्यक्ष अब्दुल अजीज मेनन ने कहा कि बाबरी मस्जिद ने हमें एक होने का मौका दिया है। अभी तक हम भीख माँगते रहे हैं। अब ताकत से हासिल करेंगे।

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के नये अध्यक्ष कलवे सादिक ने कहा कि जो काम मुस्लिम उलेमा नहीं कर पाये उसे हुकूमत ने कर दिया। आज शिया-सुन्नी एक हो गये हैं। जिन्हें हमारी वफादारी की चाह है, वे अपना बरताव भी देखें।

उत्तरप्रदेश लोकदल(ब) के महासचिव, विधायक और राज्य बाबरी मस्जिद कमेटी के संयोजक आजम खान ने कहा कि "बाबरी मस्जिद हिन्दुस्तानी मुसलमानों की इज्जत-आबरू ही नहीं, जिन्दगी और मौत का सवाल है। इंसाफपसंद हिन्दू, सिख और ईसाइयो, हमारे दिलों में लगी आग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बुझाओ वरना हिन्दुस्तान को बहुत घाटा उठाना पड़ेगा। बाबरी मस्जिद ही थी, है और रहेगी।

जनवादी पार्टी के चंद्रजीत यादव बोले "मुल्क में मुसलमानों में डर पैदा हो गया है कि बाबरी मस्जिद की तरह उनकी कोई भी मस्जिद छीनी जा सकती है। यह डर सरकार के कारण है। हिन्दुओं में भी रामजन्म भूमि को लेकर गर्व और मान है। जब दो बड़े सम्प्रदायों को चोट लगे तो सरकार को रास्ता निकालना चाहिये वरना फिजा बिगड़ेगी। उन्होंने फैजाबाद जिला जज के फैसले पर मुस्लिम नेताओं की तरह टिप्पणी की। राम जानकी रथ को फिरकापरस्ती का रथ बताया और इस देश की ब्राह्मणवादी व्यवस्था को खत्म करने की जरूरत बताई। उन्होंने गोलमोल शब्दों में कहा कि समस्या टालने पर पंजाब जैसा पेचीदा मसला पैदा हो सकता है।

उत्तरप्रदेश कमेटी के एक अन्य संयोजक जफर यार जिलानी ने अयोध्या को राम की जन्मभूमि बनाने को राम का अपमान बताया। उनके मुताबिक इतिहास और तुलसीदास की रामायण के अनुसार यह रामजन्म भूमि नहीं है।

कमेटी के अध्यक्ष और पूर्व इंका सांसद मुजफ्फर हुसैन कलौछवी ने उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री वीरबहादुर सिंह को बदनीयत बताया। उन्होंने कहा कि "राजीव गांधी जल्दी से जल्दी फैसला कर लें, नहीं तो जिस दिन बाबरी मस्जिद में नमाज पढ़ने का ऐलान होगा, उस दिन इससे चार गुना ज्यादा मुसलमान इकट्ठा हो जायेगा। जो मुस्लिम एम. एल. ए., एम. पी. और मंत्री बाबरी मस्जिद के पक्ष में नहीं बोले, उन्हें अपने इलाके में मत घुसने दो। उनकी कुर्सियाँ छीन लो। उनके भड़काऊ भाषण पर अल्लाहू अल्ला अकबर का नारा गूंज उठा।

मजलिस-ए-इत्तहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष और सांसद सलाउदीन ओवेसी ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दुस्तान के 20 करोड़ मुसलमान जब उठकर खड़े हो जायेंगे तो संभाले नहीं संभलेंगे। हमें ताकत पैदा करनी है। जब ताकत होती है तो माँ के कातिल से भी समझौता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करना पड़ता है और दुत्कार भी सहनी पड़ती है। उन्हें यह समझना चाहिये कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं अपनी मौत पर दस्तखत कर रहे हैं। एकजुट हो जाइये। हिन्दुस्तान के सारे फैसले आप खुद कर लेंगे।

जनवादी पार्टी और दिल्ली कमेटी के अध्यक्ष सैयद अहमद हाशमी ने बाबरी मस्जिद नहीं मिलने पर राजीव गांधी की गद्दी खतरे में पड़ने और मुल्क के टुकड़े-टुकड़े होने का अन्देशा बताया। उन्होंने श्री कलोछवी के इका में होने पर भी चोट की। इस पर थोड़ी देर बाद कलोछवी ने तैश में माइक पर कहा "मैं ऐसी कांग्रेस को कई बार जूते मारता हूँ और उससे इस्तीफा देता हूं।" यह घोषणा होते ही सय्यद शहाबुद्दीन ने उन्हें गले लगा लिया।

मौलाना अब्दुल्ला बुखारी ने जोश में आकर कहा "कौन जज है जो बावरी मस्जिद का फैसला करेगा। न तो हम इस हुकूमत को पसद करते हैं न आजादी को तस्लीम करते हैं। न जुडिशरी को तस्लीम करते हैं। लाखों लोग यहाँ हैं। लाखों आदमियों का समंदर तुम्हारी कोठियों मे आग लगा देगा। मंत्रियों से इस्तीफे ले लो। मंत्रियों, तुम्हारी कारों पर पथराव होगा। तुम्हारी टांगें तोड़ दी जायेंगी। कोठियों में आग लगा दी जायेगी। आगे इमाम ने यह भी कहा कि मैं इस सरकार का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उस ने सोते शेर को जगा दिया है। गुलामी की जंजीरें तोड़ देना चाहिये। हमने अब तक बहुत सब्र किया है। मैं इस सरकार को, जुडिशरी को और आजादी को मंजूर ही नहीं करता। यह मामला अदालत पर नहीं छोड़ा जा सकता। हाईकोर्ट क्या फैसला करेगा ? उन्होंने अभी 30 वर्ष तक तो फैसला नहीं किया है। सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट और लोअर कोर्ट सभी कांग्रेस सरकार के गुलाम हैं।

इमाम के भाषण के बाद मुस्लिम लीग के अध्यक्ष इब्राहीम सुलेमान सेठ ने धार्मिक उद्धरणों के हवाले से कहा कि मजीद और मस्जिदों से छेड़छाड़ करने वाले बरबाद हो जायेंगे। उन्होंने भीड़ को संबोधित करते हुए कहा "अल्लाह के लिए सिर कटाना सीखो।"

मुस्लिम लीग के महासचिव गुलाम महमूद बनातवाला ने कहा कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"हम सबसे बात करने को तैयार हैं। पर बाबरी मस्जिद मुसलमानों को मिले, इससे हटकर हमें कुछ भी मंजूर नहीं है।"

राब्ता कमेटी के संयोजक सय्यद शहाबुद्दीन ने कहा कि कानून और इंसानियत की गवाही हमारे पक्ष में है। वतन बैचेनी महसूस कर रहा है। उन्होंने इंसाफ के सारे रास्ते बंद कर रखे हैं। पता नहीं, वे गलत कदम उठाने के लिए क्यों मजबूर कर रहे हैं।

इन भाषणों के दौरान बीच-बीच में काफी शोर-शराबा और हंगामा होता रहा। ★

यह अत्यन्त लज्जा का विषय है कि हमारे प्रमुख धार्मिक व ऐतिहासिक स्थान आज भी यवनों के अधिकार में है। मुगल काल के अत्याचारों की कहानी कहते हुए ये स्थान यवन मनोबृत्ति का परिचय दे रहे हैं।

हमारी इच्छा है कि हम शासन व मुसलमानों को बाध्य करें कि वे देश के सभी मन्दिर व ऐतिहासिक स्थान जो यवनों के अधिकार में हैं. हिन्दुओं को लौटाए जायें नन्यथा हम शिव मन्दिर वारणसी, राम जन्म भूमि अयोध्या व कृष्ण जन्म स्थान मथुरा को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हुए तीव्र आन्दोलन आरम्भ करेंगे।

भारत का मुसलमान आज भी दंगे की भाषा में सोचता है। भाई चारा नाम की कोई बात उसके पास है ही नहीं। उसने तलवार की भषा पढ़ी है और वह उसी में बात करने का इच्छूक है। स्थान-पर दंगे उनकी मनोवृति का परिणाम है। हमें खेद है कि अत्यन्त उदार व मानवतावादि होते हुए भी हमें उनकी भाषा में ही बात करनी पड़ रही है। किन्तु यह हमारा स्वभाव नहीं, लाचारी है।

उनके काश में फेंसले का अर्थ व समझोता या सुलह नहीं तलवार से किया निर्णय है उनकी सभ्यता और परम्परा 'जियो औ जिने दो' हैं विश्वास करना नहीं सिखाती। वे तो किसी और विचार-चिन्तन को जिन्दा रहने का अधिकार भी देने को भी तेयार नही।

—वेद भिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत देश महान्

भारत देश महान् है, अपना भारत देश महान् ।
इसकी रक्षा-हित करना है, प्राणों का बलिदान ।।
प्राणों का बलिदान अपने प्राणों का बलिदान ।
भारत देश महान् है, अपना भारत देश महान् ।।

जब-जब पाप बढ़े धरती पर फैला अत्याचार ।
भारत की भू पर ईश्वर ने लिया मनुज अवतार ।।
राम-कृष्ण ने किया धर्म-हित असुरों का संहार ।
जिनके यश की गौरव-गाथा दोहराता संसार ।।
इसी देश में दिया कृष्ण ने था गीता का ज्ञान ।
भारत देश महान् है, अपना भारत देश महान् ।।

बन कर मुकुट हिमालय इसकी शोभा नित्य बढ़ाता ।
और गले में गंगा-यमुना का है हार सुहाता ।।
दक्षिण में सागर पैरों को धोते नहीं अघाता ।
उत्तर में कश्मीर स्वर्ग-सी अपनी छटा दिखाता ।।
शस्य-श्यामला भारत माता है रत्नों की खान ।
भारत देश महान् है, अपना भारत देश महान् ।।

वाल्मीकि ने रामायण लिख यहीं राम गुण गाये ।
और महाभारत का अमृत वेदव्यास जी लाये ।।
कालिदास ने यहीं आर्या और अनुष्टुप् गाये ।
और पाणिनी ने भाषा-सम्बन्धी सूत्र बनाये ।।
इसी देश ने दिया जगत् को था भाषा का ज्ञान ।
भारत देश महान् है, अपना भारत देश महान् ।।

राणा जिसने स्वाभिमान से जीना हमें सिखाया ।
देखो जिसने आजादी का हमको पाठ पढ़ाया ।।
जिसने दुश्मन के आगे निज मस्तक नहीं झुकाया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कवियों ने गाया ।।
जिसके पौरुष की गाथाओं को कवियों ने गाया ।।
सह कर कष्ट निभाई जिसने मरते दम तक आन ।
भारत देश महान् है अपना भारत देश महान् ।।

स्वर्णिम पृष्ठों वाला उज्ज्वल है इतिहास हमारा ।
वीर शिवा ने औरंगजेबी शासन को ललकारा ।।
बन्दा वैरागी ने जिस पर निज प्राणों को वारा ।
बलिदानी वीरों का गौरवशाली देश हमारा ।।
तज अपना सर्वस्व रखा वीरों ने इसका मान ।
भारत देश महान् है अपना भारत देश महान् ।।

असेम्बली में भगतसिंह ने फेंका बम का गोला ।
जिसके पौरुष के आगे अंग्रेजी शासन डोला ।।
फांसी के फन्दे को चूमा पहन बसन्ती चोला ।
मरते-मरते भी जो भारत माता की जय बोला ।।
अमर हो गया वीर, दिखा दी उसने अपना शान ।
भारत देश महान् है, अपना भारत देश महान् ।।

नेहरू, गांधी, तिलक, लाजपत, वल्लभभाई पटेल ।
और चन्द्रशेखर ने खेला आजादी का खेल ।।
सदा मिली बदले में इनको लाठी गोली, जेल ।
बाजी जीती अंग्रेजों का खत्म हो गया खेल ।।
आजादी आई भारत का जागा स्वाभिमान ।
भारत देश महान् है अपना भारत देश महान् ।।

फिर ले नयी चुनौती भारत में ऐसे दिन आये ।
जगह-जगह आतंकवाद के काले बादल छाये ।।
हिंसा की डायन बैठी है अपनी घात लगाये ।
अस्त्र अहिंसा का लेकर फिर कोई गांधी आये ।।
दानवता हो नष्ट बढ़े फिर मानवता का मान ।
भारत देश महान् है, अपना भारत देश महान् ।।

रूपकिशोर गुप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत को अखंड रखना ही है

—बाला साहब देवरस

इस समय कुल मिलाकर अपने देश की परिस्थिति चिन्ताजनक है। देश के अन्दर तरह-तरह की समस्यायें हैं और बाहरी संकटों की भी संभावना है। ऐसी परिस्थितियों का विचार करते हुए हम सब लोगों को सोचना चाहिए कि इस परिस्थिति को सुधारने के लिए जैसा योगदान हम कर सकते हैं, वैसा हम करें। यह हमारा दायित्व है। अभी पिछले वर्षों में पंजाब में और दिल्ली में जो कुछ हुआ, वह हम जानते हैं। जो हुआ, वह एक भयानक दुःस्वप्न जैसा दीखता है। यह होने के पश्चात् भी देश के सभी नागरिकों का यह दायित्व है कि इस भयंकर दुःस्वप्न को भूलें और अब इस क्षेत्र की स्थिति सामान्य करने और जो समस्यायें सामने आई हैं उनमें से रास्ता निकालने के जो प्रयास हो रहे हैं, हम देखें कि वे यशस्वी हों। ये बातें हम सब लोगों पर निर्भर हैं और इसके लिए परिस्थिति भी अनुकूल है, ऐसी मेरी धारणा है।

अलगाववाद रोकना ही होगा

सरकार को एक मर्यादा अवश्य ख्याल में रखनी चाहिए। वह मर्यादा यह है कि देश एकजुट व अविच्छेद्य बना रहे, उसके टुकड़े न बनें, कोई अलग होने की बात न करें, अंग्रेजी में जिसे 'सक्सेसन' कहा जाता है वैसा कदापि नहीं हो। यह है इस देश की सरकार का प्रमुख कर्तव्य। इसके लिये सरकार को बहुत सावधान रहना चाहिए। विशेष दर्जा प्रदान करने जैसी विच्छेदकारी बातें सरकार ने चलने नहीं देनी चाहिए। इसके लिये, यदि कोई लोग नहीं समझते हैं तो सरकार को चाहिए कि आवश्यकता पड़ने पर बल-प्रयोग करे। परन्तु हर हालत में यह सारा देश एक ही रहेगा, इस प्रकार का विचार और निश्चय बनाये रखें। यह आवश्यक है।

अब्राहम लिंकन का अनुकरणीय उदाहरण

अगर उदाहरण देना है तो मैं आपके सामने उदाहरण दूंगा अब्राहम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिंकन का। वे अमरीका के अध्यक्ष थे। वे इसके लिये याद किये जाते हैं कि उन्होंने अपने देश में गुलामी-प्रथा समाप्त की। वे दास-प्रथा के कट्टर विरोधी थे। उसके लिये उन्हें गृह-युद्ध तक का सामना करना पड़ा। वहाँ गृह-युद्ध हुआ भी, लेकिन जो गृह-युद्ध हुआ उसका तात्कालिक कारण दास-प्रथा का उन्मूलन या समर्थन नहीं था, वरन् मुख्य मुद्दा था देश की अखंडता। अब्राहम लिंकन ने उत्तर के राज्यों में दास-प्रथा समाप्त कर दी थी, किन्तु अमेरिका के दक्षिणी राज्य दास-प्रथा का अन्त करने के लिये तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा कि हम अलग होना चाहते हैं। लिंकन ने उनसे कहा कि हम उत्तरी राज्यों वाले दास-प्रथा समाप्त करते हैं, तुम्हें आज नहीं करनी हो तो मत करो। आगे सोचकर करो। लेकिन देश का विभाजन नहीं होगा। दक्षिण के राज्य इस बात को मानने के लिये ही तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा कि अब तो हम अलग ही होना चाहते हैं। तब लिंकन ने कहा कि मैं यह यूनियन टूटने नहीं दूंगा, गृह-युद्ध होता हो तो हो, पर किसी भी हालत में अमेरिका को टूटने नहीं दूंगा। तब गृह-युद्ध हुआ। उसके बारे में अब्राहम लिंकन ने कहा,

"टू सेव द यूनियन" (यूनियन को बचाने के लिये) जो आवश्यक है, वह मैं करूंगा। राष्ट्रपति-लिंकन ने डटकर कहा कि "मैं आपको अलग होने नहीं दूंगा।" लिंकन ने साफ शब्दों में कहा कि "द यूनियन मस्ट रिमेन" (यूनियन एक जुट ही रहेगा) लेकिन जब दक्षिणी राज्य वालों ने हठ बनाये रखा और अन्तिम रूप में कहा कि हम साथ नहीं रहना चाहते तो फिर गृह-युद्ध हुआ। इसमें लाखों लोग मारे गये। ध्यान देने योग्य बात है कि दास-प्रथा समाप्त करने की घोषणा गृह-युद्ध के डेढ़ साल बाद हुई। यानी देश को एक रखने के लिये अब्राहम लिंकन ने गृह-युद्ध तक का खतरा उठाया, परन्तु यूनियन न टूटने देने का निश्चय बरकरार रखा। इससे अमेरिका न केवल एकजुट रहा, वरन् दुनिया में आगे बढ़ सका। आज अमेरिका की स्थिति वैसी नहीं है, जैसी गृह-युद्ध के समय थी।

विशेष दर्जा देना घातक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस बात को ध्यान में रखते हुए हिन्दुस्तान के विभिन्न प्रांतों के बारे में बातचीत सोच-विचार कर करनी होगी। फिर जम्मू-कश्मीर हो, या पंजाब हो, मिजोरम हो, या देश का अन्य कोई भी हिस्सा, वहाँ नीतियाँ अपनाते समय स्पेशल स्टेटस अर्थात् विशेष दर्जा प्राप्त करने की प्रवृत्ति बिल्कुल नहीं चलनी चाहिये। हमने कश्मीर को 370 धारा के अन्तर्गत विशेष दर्जा देकर भयंकर समस्यायें खड़ी कर दी हैं, यह आप जानते हैं। हाँ, लोग बोलते हैं, लिखते हैं कि कश्मीर में अमन चैन है। वहाँ भिन्न-भिन्न जाति और भिन्न-भिन्न उपासना-पद्धति वाले अब बड़े अमन-चैन से रह रहे हैं। लेकिन क्या हम नहीं जानते हैं कि कश्मीर में रहने वाला हिन्दू वहाँ किस प्रकार मुसीबतें झेलता रहा है। उनकी हालत कैसी है? धारा 370 के अन्तर्गत कश्मीर को अलग दर्जा देकर एक तरह से वहाँ अलगाव का बीज बोया गया है। इसी प्रकार से लालडेंगा भी कहते हैं कि हमको भी 370 का दर्जा दो। ऐसा हुआ तो अन्य प्रांतों से भी यह चर्चा चलेगी। इसका अर्थ यह नहीं कि प्रांतो से कोई मांगें ही नहीं उठने दी जायें। सबकी समस्यायें और आवश्यकतायें सुननी ही होंगी, परन्तु इन मांगों को मानते हुए इस बात को ध्यान में रखना पड़ेगा कि टूटने या अलग होने की बात बिल्कुल नहीं चलेगी।

खाई पाटनी है

पंजाब के बारे में वास्तविकता हम जानते हैं। संघ का कहना है कि सिख बन्धु हिन्दू ही हैं। कई सिख बन्धु जो अपने को हिन्दू नहीं कहलाना चाहते, वे इतना तो कहते ही हैं कि आखिर हम एक ही माता के पुत्र हैं। तो सोचना होगा कि यदि एक माता के पुत्र हैं तो बोलने और कहने के अलग नाम हो सकते हैं, परन्तु 'कुल' का नाम तो समान ही रहेगा। हमारे 'कुल' का नाम 'हिन्दू' ही है। अभी कुछ दिन पहले 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में डा. गोपालसिंह जी का लेख छपा है। डा. गोपालसिंह जी इस समय गोवा के राज्यपाल हैं। उसमें उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि सिख हिन्दू ही हैं। 'टाइम्स आफ इंडिया' में भी एक लेख छपा था। उसमें बताया गया है कि गुरुग्रन्थ साहिब में राम का नाम कितनी बार आया है, कितनी बार कितने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवी-देवताओं के नाम हैं। ये सारे आंकड़े देते हुए उस लेख में इस बात का ठोस प्रतिपादन है कि गुरुग्रन्थ साहिब का जो तत्त्वज्ञान है, वह उपनिषद् का ही तत्त्वज्ञान है। आप जानते हैं कि गुरुग्रन्थ साहिब के प्रणेता गुरुओं ने जो बलिदान दिये हैं वे हिन्दुओं के लिये ही दिये गये। इसलिये सिख बन्धुओं को भी यह ध्यान में रखना चाहिये कि वे हिन्दू ही हैं। इस प्रकार ठीक से, संयम से, शान्ति से, सभ्य शब्दों में समझाकर रास्ता निकालें। हम देखेंगे कि यह जो खाई है, या जो दूरी है, उसे हम पाट सकते हैं। ऐसा प्रयास होना अत्यन्त आवश्यक है।

'भारत राष्ट्र' या 'हिन्दू राष्ट्र'

आखिर हम लोग जानते हैं कि वैदिक काल से लेकर आज तक यहां एक राष्ट्रीय जीवन चलता आया है। हो सकता है कि पहले उसको भारतीय राष्ट्र-जीवन कहते हों, लेकिन आजकल तो हिन्दू राष्ट्र-जीवन शब्द का प्रयोग अधिक उचित है, क्योंकि पिछले लगभग तीन हजार वर्षों से सारी दुनिया इस देश को हिन्दुस्तान और यहाँ रहने वाले को हिन्दू कहती आई है। भारत का राष्ट्र-जीवन भी इसी नाम अर्थात् हिन्दू नाम से पहचाना गया है। फिर भी कुछ लोग इसे 'भारत' कहना चाहते हैं। इस राष्ट्र को भारतीय राष्ट्र कहने से या हिन्दू राष्ट्र कहने से कोई अन्तर नहीं होता। जब हम इसका विचार करेंगे कि इस देश का नाम भारत क्यों पड़ा, तो हमें उस प्राचीनकाल तक पहुंचना पड़ेगा जिसका अटूट सम्बन्ध हिन्दू से है। वैदिक काल से आज तक, जम्मू-कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, उधर गुजरात से लेकर असम तक वेद-पाठन होता है, उपनिषदों के प्रवचन होते हैं, रामायण, महाभारत की कथायें होती हैं। यह सब कितने हजार वर्षों से चल रहा है, इसका कोई पता नहीं चलता। इस प्रकार एक अत्यन्त पुरातन संस्कृति इस राष्ट्र में विद्यमान है। इसी का परिणाम है कि यहाँ के अत्यन्त पुरातन और सनातन राष्ट्र को हिन्दू राष्ट्र कहते हैं।

धर्मान्तरण का विष-वृक्ष

प्राचीन काल से इस राष्ट्र का तत्त्वज्ञान बहुत उदार, दिव्य और व्यापक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहा है। इस कारण अन्यान्य देशों से अन्य उपासना-पद्धति वाले बन्धु यहाँ आकर बसते रहे। हमारी मान्यता रही है: "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" जिसके अनुसार हम सोचते हैं कि सत्य एक है, विद्वान लोग इसे अनेक प्रकार से कहते हैं। हर एक मार्ग ठीक है। किसी भी मार्ग से चलो, तुम्हारा कल्याण होगा, ऐसा ही हमारा सोचना रहा है। धर्म की एक ही किताब या एक ही प्रमुख, जैसा हमारा सोचना नहीं है। इसलिये जब यहाँ क्रिश्चियन या मुसलमान आये तो उन्हें यहाँ सब प्रकार की सुविधायें उपलब्ध करा दी गईं। उन्हें धर्माचरण का स्वातन्त्र्य दिया। उन्हें गिरजाघर और मस्जिद बनाने की अनुमति मिली। यहाँ तक तो ठीक था, लेकिन आगे चलकर हमने उन्हें धर्मान्तरण का भी स्वातन्त्र्य दे दिया। हमारे पूर्वजों ने ध्यान नहीं दिया कि धर्मान्तरण करने की सुविधा देने के कारण हमारे सामने भविष्य में क्या समस्यायें उत्पन्न होंगी। वे तो यह समझते रहे कि किसी की उपासना पद्धति यह या वह होने से क्या बिगड़ता है ? उपासना-पद्धति तो व्यक्ति का भगवान से नाता है। लेकिन धर्मान्तरित हुए लोगों को सोचने का ढंग ऐसा बना कि उनका धर्म-परिवर्तन होने के साथ उनका राष्ट्र-परिवर्तन भी हो गया। इसके कारण ही तरह-तरह की छोटी-बड़ी समस्यायें खड़ी हो गईं।

समस्यायें कैसे निर्मित होती हैं ? यह अगर देखना हो तो आप केरल का विचार करिये। केरल में करीब-करीब दूसरी शताब्दी में क्रिश्चियन आये और सातवीं या आठवीं शताब्दी में मुसलमान। उस समय वहाँ राजा-प्रजा शत-प्रतिशत हिन्दू थे। यह बात होने के बाद भी ईसाई और मुसलमान आगन्तुकों को सब प्रकार की सुविधायें उपलब्ध करा दी गईं। लेकिन जब धर्मान्तरण का स्वातन्त्र्य मिला तो हिन्दू समाज को उसका यह फल मिला है कि आज केरल में करीब 25 प्रतिशत क्रिश्चियन हैं और करीब 20 प्रतिशत मुसलमान। इसीलिये जब चुनाव होते हैं तो चुनाव में उनके वोट का बड़ा महत्त्व होता है। दो प्रमुख दल हैं: एक कांग्रेस और एक कम्यूनिस्ट। दोनों को मुसलमानों से और क्रिश्चियन से उनके संख्या-बल के कारण समझौता करना पड़ता है। तब वे चुनाव जीतते हैं, और जब सत्ता में आते हैं तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नीतियाँ अपनाते समय सदा-सर्वदा उनके मन में यह भय बना रहता है कि यदि ये क्रिश्चियन अथवा मुस्लिम एम.एल.ए. हमारा साथ छोड़ देंगे तो हमारी सरकार का पतन हो जायेगा। इसलिये नीतियाँ अपनाते समय यह नहीं सोचा जाता कि देश के हित में क्या है, अथवा केरल के हित में क्या है। अधिकतर यह सोचा जाता है कि हमारी सरकार किस प्रकार बनी रहेगी। और देश-हित की उपेक्षा होती रहती है। समस्या का यह एक प्रकार है।

भारत का मानचित्र बदल गया

धर्मान्तरण के फलस्वरूप और भी अधिक भीषण प्रकार की समस्याएं पैदा हुई हैं। इसका उदाहरण सुनिए। आज का अफगानिस्तान एक समय गान्धार था और धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी वहाँ की ही लड़की थी। मुसलमानों के आक्रमण के बाद हम अफगानिस्तान के प्रति उदासीन होने लगे। सौ-डेढ़ सौ साल तक गान्धार के लोगों ने वहाँ लड़ाई लड़ी, किन्तु वे हार गये। विद्वान लोगों का मत है कि मुस्लिम धर्म का जो प्रसार हुआ है वह उनके तत्त्वज्ञान के कारण नहीं हुआ है। उन्होंने जो कुछ किया, जोर जबर-दस्ती तलवार के भरोसे किया है। इसी प्रकार अफगानिस्तान के सारे हिन्दू मुसलमान बनाये गये और गान्धार अफगानिस्तान बन गया। कभी अफगा-निस्तान देश का अंग था। वह टूट गया। आप कहेंगे कि यह तो हजार-बारह सौ वर्ष पहले हुआ। तो आइये आज की बात करें। सन् 1947 में पंजाब का आधा हिस्सा चला गया, बलूचिस्तान चला गया, बंगाल का आधा हिस्सा चला गया। क्यों चला गया? इसका कारण ऐसा है कि जहां-जहां हिन्दू अल्पसंख्यक होता है, वह हिस्सा हिन्दुस्तान से कट जाता है। यहां कई लोग ऐसे होंगे जिनकी शिक्षा सन् 1947 से पहले हुई है। जब वे पढ़ते थे तब उन्होंने हिन्दुस्तान का नक्शा बनाया होगा। याद कीजिये कि वह नक्शा कैसा रहता था? और आजकल उनके जो बच्चे स्कूल में जाते हैं वो भी अपने देश हिन्दुस्तान का नक्शा कापियों में खींचते हैं। कल और आज के नक्शों में भारी अन्तर आया है। यह अन्तर क्यों आया? यह अन्तर इसलिए आया की भारत के कुछ हिस्सों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये और जहां-जहां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे अल्पसंख्यक हो गये, वह हिस्सा भारत से कट गया। यदि हमें बचे हुए भारत की रक्षा करनी हैं, उसकी एकता व अखण्डता बचानी है, तो हमें विचार कर लेना चाहिए कि इस क्षेत्र में यदि हिन्दू बहुसंख्यक रहेंगे तब ही यह बच सकेगा। इसलिए हम हिन्दू संगठन की बात बोलते हैं, हिन्दू राष्ट्र की बात कहते हैं। हमारे चिन्तन के कारण कुछ लोग कहते हैं कि तुम साम्प्रदायिक हो, संकुचित हो, तुम एण्टी-सेक्यूलर हो। उनके ये आरोप पूरी तरह गलत हैं, क्योंकि हिन्दुस्तान का हित कुल मिलाकर इसी में है कि यहाँ हिन्दू बहुसंख्यक रहें। इस हेतु प्रयास करना अत्यन्त आवश्यक है। हमारा यही प्रयास है कि इस देश में हिन्दू बहुसंख्यक र हें, वे संगठित रहें, बलवान् रहें, तब ही इस देश का भविष्य उज्ज्वल होने वाला है। हमको संकुचित, एण्टी-सेक्यूलर कहने वाले लोगों ने क्या इस बात का कभी विचार किया है कि आगे चलकर अगर हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाते हैं, तो इस देश में क्या 'डेमोक्रेसी' रहेगी? क्या 'सेक्यूलरिज्म' रहेगा? क्या 'सोशलिज्म' रहेगा? ये सब बातें यहां इसीलिए सम्भव हैं, क्योंकि यहां हिन्दू बहुसंख्यक हैं।

सेक्यूलरिजम की आवश्यकता किसको ?

विचार कीजिए। आज बंगलादेश मे क्या हो रहा है? पाकिस्तान में क्या हो रहा है? कुवैत तथा अरब राष्ट्रों में क्या हो रहा है? क्या वहाँ डेमोक्रेसी है? सेक्यूलरिज्म या सोशलिज्म क्या वहाँ है? इसीलिए जो लोग इन सब बातों को भारत में स्थापित हुआ देखना चाहते है, वे ही यदि हिन्दू संगठन को संकुचित या साम्प्रदायिक कहते हैं तो यह उनकी भूल है। या फिर ऐसा हो सकता है कि वे 'सेक्यूलरिज्म' का अर्थ नहीं समझते। मार्ग 'सेक्यूलर' का अर्थ क्या है? यह अंग्रेजी शब्द है। इसका अर्थ वही है f हिन्दी में ऐहिक या भौतिक कहते हैं। सेक्यूलर राज्य का दायित्व देश में रहने वाले की ऐहिक बातों का जैसे दो समय भोजन, मक बीमार हो तो दवा-पानी, शिक्षा आदि का प्रबन्ध ठीक से हो। उपासना-पद्धति में दखल देने का कोई कारण नहीं है। सेक्यूल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थ पर जब हम विचार करते हैं तो हिन्दुओं को सेक्यूलरिज्म सिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हिन्दू सदा-सर्वदा सेक्यूलर ही रहे हैं। इतिहास बताता है कि महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह या रणजींत सिंह का राज्य हो, ये सब सेक्यूलर ही थे। उन्होंने कभी किसी की उपासना-पद्धति में दखल नहीं दिया और सबकी ऐहिक आवश्यकताओं की पूर्ति की चिन्ता की। इसीलिए हिन्दुओं को सेक्यूलरिज्म का पाठ सिखाने की बात हास्यास्पद है। इसे सिखाने की कोशिश करना "उल्टे बाँस बरेली को" ले जाने जैसी बात है। वह तो हमारी रग-रग में भरा है। इसीलिए जो सेक्यूलर चिल्लाते हैं। उनसे मेरी प्रार्थना है कि भाई, तुम एक समिति बनाओ और विश्व में जितने मुसलमान राष्ट्र हैं और जो अरब राष्ट्र हैं, वहां जाओ और वहाँ सम्मेलन आयोजित करो व परिसंवाद चलाओ। इन मुस्लिम देशों में सेक्यूलरिज्म पर भाषण दो। वहां उसकी आवश्यकता है। क्योंकि वहाँ अगर हम मन्दिर बनवाना चाहते हैं, गुरुद्वारा बनाना चाहते हैं, तो अनुमति नहीं मिलती। हम खुले स्थान पर रामलीला, दुर्गापूजा या गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती, गुरु नानक जयन्ती मनाना चाहते हैं तो अनुमति नहीं मिलती। हम हिन्दुओं को यह समझाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हिन्दू राष्ट्र होने के कारण यहां का राज्य सदा सेक्यूलर ही रहने वाला है।

भूले-भटकों को वापिस लाओ

यहाँ इस देश में तो आवश्यकता कुछ और ही बात को समझने-समझाने की है। यद्यपि हमारा तत्त्वज्ञान ऊँचा है, दुनिया में अनूठा है, परन्तु हमारा व्यवहार ठीक नहीं रहा। व्यवहार ठीक न होने के कारण हमारे समाज में दोष उत्पन्न हुए, जिसका अन्य लोगों ने फायदा उठाया। हमें समझना चाहिए था कि हिन्दू का धर्मान्तरण होता रहा तो आगे चलकर समस्यायें उत्पन्न होंगी। ऐसा तो नहीं है कि इस समस्या की ओर हमारा ध्यान बिल्कुल ही नहीं गया हो। इतिहास बतलाता है कि धर्मान्तरितों को वापिस लाने के प्रयास पहले भी हुए हैं। उदाहरणार्थ—छत्रपति शिवाजी के समय ऐसा प्रयास दिखाई देता है। उनके दो सरदार थे—नेताजी पालकर और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बजाजी निम्बालकर। ये किसी कारण से मुसलमान बन गए थे। लेकिन बाद में उनके ध्यान में आया कि उन्होंने गलती की थी। छत्रपति शिवाजी ने नेता जी पालकर और बजाजी निम्बालकर दोनों को शुद्ध कर हिन्दू धर्म में वापस लिया और उन्हें समाज में अच्छी प्रतिष्ठा दिलाने के लिए अपनी लड़की का विवाह बजाजी निम्बालकर के लड़के से किया। लेकिन दुर्दैव से छत्रपति शिवाजी के बाद वह परम्परा आगे नहीं चली और हिन्दुओं का धर्मान्तरण होता रहा। इसी के फलस्वरूप सन् 1947 में इस देश का विभाजन हो गया और हम देखते हैं कि इस देश की सीमायें अब और आगे छोटी न होने देनी हों, तो ऐसा तभी सम्भव है जब यह देश हिन्दू बहुसंख्यक रहेगा और यहाँ का हिन्दू संगठित व बलवान् रहेगा, उसका सामाजिक जीवन निर्दोष रहेगा। हमें यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि यह कार्य इस देश में अत्यंत आवश्यक है। हमें इसका भी ध्यान रखना होगा कि इसके विपरीत कार्य न हो।

हिन्दू संगठन—एक व्यावहारिक आवश्यकता

जब हम हिन्दुत्व का विचार करते हैं तो वास्तविक और व्यावहारिक आधार पर भी विचार करना चाहिए। केवल इतने मात्र से काम नहीं चलेगा कि हमारा तत्त्वज्ञान बड़ा दिव्य है, बड़ा आदर्श है, मानवता के लिए बहुत उदार है और उपयुक्त है। यद्यपि यह सच है, फिर भी मानव के लिए वह तब ही उपयुक्त होगा जब इस देश में वह समाज जीवित रहेगा जिसकी इस तत्त्वज्ञान में बड़ी श्रद्धा है और जो इसके अनुसार व्यवहार करता है तथा इसके लिए सब कुछ करने को तैयार है। ऐसा बहुसंख्यक हिन्दू समाज जब इस देश में रहेगा, तब उस तत्त्वज्ञान की प्रतिष्ठा रहेगी, नहीं तो वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथ दुनिया के पुस्तकालयों में ही रह जायेंगे। इस बात को ध्यान में रखते हुए हिन्दू संगठन की जो व्यापक और व्यावहारिक आवश्यकता है उसे समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है।

हम जानते हैं कि वर्तमान स्थिति के लिए हम ही दोषी हैं। हमारे समाज-जीवन में अस्पृश्यता तथा ऊँच-नीच के भाव जैसे तरह-तरह के दोष पिछले हजार वर्षों में निर्मित हुए। इसीलिए समाज-जीवन छिन्न-विच्छिन्न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुआ। लेकिन इन दोषों को दूर करने के लिए अब समाज जाग्रत हो रहा है और जो लोग हमें अपना विरोधी समझते थे वे भी मानने लगे हैं कि यह हिन्दू राष्ट्र है। इस सम्बन्ध में अभी-अभी का एक उदाहरण है। कुछ महीने पहले मैं केरल गया था। कुछ समय पूर्व तक केरल में कांग्रस का मंत्रिमंडल था। इसके पहले केरल में मार्क्सवादी कम्युनिस्टों की सरकार थी। उससे पहले सी.पी.आई. की थी। उसके मुख्यमंत्री थे श्री अच्युत मेनन। उन्होंने एक लेख लिखा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि हम कम्युनिस्ट अभी तक यह समझते थे कि हिन्दुस्थान कभी एक राष्ट्र नहीं रहा। यहाँ भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी लोगों के प्रांत हैं और भारत उन प्रांतों का एक लूज फेडरेशन अर्थात् ढीला-ढाला संघ राज्य। मेरी धारणा थी कि यह राष्ट्र कभी नहीं रहा, लेकिन अब मेरी धारणा बदल गई है और मैं मानने लगा हूँ कि यह सारा हिन्दुस्थान एक राष्ट्र है और इसको राष्ट्रीयत्व के सूत्र म बांधने का काम करता है हिन्दुत्व। इस प्रकार श्री मेनन का लेख छपा है। आप पढ़ सकते हैं। जो कम्युनिस्ट मुख्यमंत्री कल तक हिन्दू राष्ट्र मानने के लिए तैयार नहीं थे, वे भी अब हिन्दू-राष्ट्र मानने को तैयार हैं।

अल्पसंख्यक आयोग नहीं, मानव अधिकार आयोग बनाइए

समाचारपत्र भी अब लिखने लगे हैं कि भाई, "माइनरिटी-माइनरिटी" चिल्लाते रहने से काम कैसे बनेगा ? प्रजातंत्र में मेजोरिटी (बहुसंख्यक) का भी कोई स्थान है या नहीं ? मेजोरिटी क्या चाहती है, इसका भी विचार करोगे कि नहीं ? अपने देश में दुर्भाग्य से अल्पसंख्यक-ग्रन्थि (माइनरिटी-काम्प्लेक्स) पैदा हो गई है। बहुसंख्यकों का विचार ही नहीं करना, गलत बात है। जब जनता पार्टी का शासन स्थापित हुआ तो उन्होंने अल्पसंख्यक आयोग गठित किया। उस दिन मैं जम्मू में था। वहाँ पत्रकारों ने पूछा कि 'माइनरिटी कमीशन' के बारे में तुम्हारा क्या कहना है ? मैंने साफ शब्दों में कहा कि मैं माइनरिटी कमीशन के बिल्कुल खिलाफ हूँ, क्योंकि अल्पसंख्यकों (माइनरिटी) के साथ हिन्दुस्थान में कभी भी अन्याय नहीं हुआ। यदि गठित ही करना है तो मानव अधिकार आयोग—'ह्यूमन राइट्स कमीशन' गठित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करो। माइनरिटी कमीशन के अध्यक्ष जस्टिज बेग ने भी कहा है कि माइनरिटी कमीशन की आवश्यकता नहीं है। अल्पसंख्यक मनोवृत्ति खड़ी करके हमने बड़ी गलती की है। अब यह धारणा पक्की हो रही है कि यहाँ के राष्ट्रीय प्रवाह में समरस न होते हुए चाहे जो मांगें प्रस्तुत की जा सकती हैं। चार मांगें माँगेंगे तो दो तो मिलेंगी ही। इस प्रकार ज्यादा मांगने की आदत बनती है। अल्पसंख्यक के नाम पर यदि माँगें माँगी जाती हैं और स्वीकार की जाती हैं, तो उनकी भूख और बढ़ती जाती है। यह गलत बात है। सब के प्रति समान दृष्टि से व्यवहार करते हुए विचार करना चाहिए। तब ही यह 'माइनरिटी काम्पलेक्स' दूर होगा। अल्पसंख्यक आयोग का विचार छोड़ देना अत्यन्त आवश्यक है। तब ही देशवासियों में उचित चिंतन विकसित हो सकता है। एक बात कुछ समय के लिये भी स्वीकार करने से वह पक्की हो जाती है और फिर उससे छुटकारा पाना कठिन होता है। संविधान की धारा 370 के अन्तर्गत कश्मीर को विशेष दर्जा देने का अनुभव ऐसा ही है। स्वयं पंडित नेहरू को इस भूल के परिणाम ध्यान में आये थे तो उन्होंने कहा—"इन कोर्स आफ टाइम इट विल विदर अवे" अर्थात् आगे चल कर यह धारा घिस-घिसकर समाप्त हो जायेगी और कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त हो जायेगा। अनुभव यह है कि वह धारा घिस-घिसकर नष्ट नहीं हुई, वरन् स्थायी-जैसी होकर बैठ गयी। कहने का अर्थ यह है कि नीतियाँ बनाते और कदम उठाते समय योग्य प्रकार का विचार करना चाहिए। काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः। योग्य समय पर अपनायी जाये, तो उसका योग्य फल मिलता है।

केन्द्र सशक्त हो

यह पक्की बात है कि हम चाहते हैं कि केन्द्र सरकार मजबूत रहें। हम कदापि नहीं चाहेंगे कि कोई प्रान्त ऐसी रीति-नीति अपनाये कि जिससे केन्द्रीय सरकार दुर्बल हो। राज्यों को सुविधाएं जरूर मिलनी चाहिए और संविधान में ऐसा परिवर्तन भी हो सकता है, जिससे यदि प्रान्तों के सामने विशेष आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होती हों तो केन्द्र की सहमति के बिना वे कुछ निर्णय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ले सकें। लेकिम केन्द्र सरकार मजबूत होनी ही चाहिए, यह हमारी धारणा है! हाँ, यह जरूरी है कि केन्द्र में सत्तारूढ़ दल केन्द्र की शक्ति का उपयोग अपने दल के लिये नहीं करे। केन्द्र सरकार यदि मजबूत है तो केन्द्र सरकार को सारे देश, सब लोगों का विचार करते हुए नीतियाँ अपनानी चाहिए। अगर कोई प्रान्त चुनाव को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार से आरक्षण वगैरह बढ़ाता है तो केन्द्र उसे रुकवा सकता है।

हिन्दू जाग उठा है

विभिन्न विषयों पर विचार करते समय योग्य प्रकार की नीति अपनाना अत्यन्त आवश्यक है। सब से प्रमुख विचार यह रहना चाहिए कि यहाँ का हिन्दू दुर्वल और विभाजित न हो। संगठित रहने के लिए उसमें योग्य प्रकार की दृष्टि का निर्माण हो। इस प्रकार पूरे देश में हिन्दू अगर बलवान् हो जाता है तो आप जरूर देखेंगे कि बाकी समाज के लोग जो आज हिन्दू के विरोध में कार्य करते हैं वे भी, ठीक तरह से, रास्ते पर आ जायेंगे। केरल में सबरी-मलाई नामक एक बड़ा प्रसिद्ध क्षेत्र है। वहाँ लाखों लोग यात्रा के लिये जाते हैं। बड़ा कार्यक्रम होता है। वहाँ सारा जंगल है। पहाड़ है। कोई भी मकान नही हैं। केरल के कुछ क्रिश्चियन लोगों ने विचार किया कि यदि वे उस क्षेत्र में निलक्कल नामक स्थान पर चर्च बना ले तो भोले-भाले हिन्दू जो लाखों की संख्या में वहाँ आते हैं और जो 100-200-500 रुपये मंदिर में चढ़ाते हैं, वे 10-20 रुपये चर्च में भी चढ़ायेंगे। और ईसाइयत का कुछ प्रचार भी किया जा सकेगा। केरल सरकार का कानून ऐसा है कि उस क्षेत्र की सरकारी जमीन पर कोई भी मन्दिर या अन्य धर्मस्थान नहीं बना सकता। लेकिन केरल सरकार ने किसी को पता न लगते वहां ट्रक में चर्च बनाने की अनुमति दे दी। केरल के क्रिश्चियन लोग रातों-रात एक ढाँचा खड़ा भी कर दिया यह सब दूसरे दिन हिन्दू लोगों के ध्यान में आया। हिन्दुओं ने सोचा, यह आये और उन्होंने सरकार को नोटिस दिया, क्रिश्चियन लोगों को भी नोटिस दिया कि चर्च का यह ढांचा गैर-कानूनी है और चर्च खोलने की आवश्यकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं है। कारण, यहां क्रिश्चियन लोगों का एक भी मकान नहीं है। चर्च वहां बनता है जहां क्रिश्चियन रहते हों, इतवार को एकत्र होते हों, वह चर्च बन सकता है। यहां तो दस मील के फासले तक ईसाइयों का एक भी घर नहीं है। यहां क्यों चर्च बनाते हो? इसलिये तुम्हें चर्च हटाना पड़ेगा, नहीं तो हम इसको जलाकर भस्म कर देंगे। बिल्कुल साफ शब्दों में जब क्रिश्चियन लोगों को यह बताया तो क्रिश्चियन लोगों ने एक कान्फ्रेंस बुलायी। हिन्दू नेताओं को भी बुलाया और पूछा कि भाई, नाराज क्यों होते हो? हिन्दुओं ने कहा कि यहां चर्च बनाने की आवश्यकता क्या है? तब फिर समझौता हुआ। इस प्रकार वहां से चर्च हटा और जहां क्रिश्चियनों की बस्ती है वहां उन्होंने चर्च बनाया। रातों-रात अपना सामान उठाकर ले गए। कहने का मतलब है कि हिन्दू अगर सबल हो जाता है तो सारे लोग ठीक हो जाते हैं। तर्क भी चाहिए और बल भी चाहिए। □

पान खाने वाले सावधान!

नई दिल्ली, रेलवे स्टेशनों पर पान बेचने वाले और खाने वालों के बुरे दिन आ गए हैं। रेल राज्य मन्त्री श्री माधवराव सिंधिया ने लोकसभा में बताया कि कुछ रेलवे स्टेशनों पर पान बेचने पर रोक लगा दी गई है। अन्य रेलवे स्टेशनों पर भी यह नीति अमल में लाई जाएगी।

उन्होंने कहा कि यह पग इसलिए उठाया गया है ताकि रेलवे स्टेशनों को साफ-सुथरा रखा जा सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नई शिक्षा नीति : एक साम्प्रदायिक मोड़

—हरेन्द्र कुमार

नई शिक्षा नीति की कार्रवाई योजना में संविधान की धारा 29 एवं 30 के तहत अल्पसंख्यकों को प्राप्त शिक्षा, संस्कृति और लिपि के अधिकार की आड़ में एक षड्यंत्र रचा गया है। 40 जिलों को मुस्लिम प्रभावित जिले घोषित किया गया है। दलील यह दी गई है कि मुस्लिम समाज देश की औसत शिक्षा प्रसार से पीछे है। शिक्षा प्रसार की आड़ में जो योजना रखी गई है वह शिक्षा को कम साम्प्रदायिकता अधिक बढ़ाएगी।

भारत विभाजन के समय मिस्टर जिन्ना ने पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान को जोड़ने हेतु उत्तर भारत से एक गलियारे की मांग की थी। पर भारत विभाजन का आधार हिन्दू और मुस्लिम बहुमत था। अतः उनका सपना साकार न हो सका। नई शिक्षा नीति की कार्रवाई योजना बनाते समय बहुमत के बदले "प्रभावित" शब्द का प्रयोग कर जिन्ना की मंशा पूरी की गई है ताकि इस पर किसी प्रकार का विवाद न उठ सके।

उत्तर प्रदेश के रामपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, मेरठ, गोंडा, गाजियाबाद, बहराइच, देवरिया, बाराबंकी, बस्ती, बिहार के दरभंगा, पूर्णिया और कटिहार: प. बंगाल के मुर्शिदाबाद, मालदा, प. दिनाजपुर, वीरभूम, नादिया, 24 परगना, कूच-बिहार, हावड़ा, केरल के मल्लापुरम्, कोजिकोड़े, कन्नौर, पालघाट, वायनाड, कर्नाटक के बीदर, गुलबर्गा, बीजापुर, महाराष्ट्र के बम्बई महानगर और गाबाद; आंध्र के हैदराबाद और करनाल के अलावा गुड़गांव (हरयाणा), भोपाल (मध्य प्रदेश), जैसलमेर (राजस्थान) एवं कच्छ (गुजरात) को मुस्लिम प्रभावित जिला घोषित किया गया है, जबकि इन जिलों में मुस्लिम बहुमत तो बिल्कुल ही नहीं है।

बिहार में पहले से ही 15 जिलों को मुस्लिम प्रभावित बताकर उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा दिया गया है। ये जिले हैं बेतिया, मोतीहारी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सीतामढ़ी, मधुबनी, बेगूसराय, सहरसा, पूर्णिया, कटिहार, समस्तीपुर, नवादा, धनबाद, गया और भागलपुर।

कश्मीर पहले से ही हमारे लिए सिरदर्द बना हुआ है। उत्तर प्रदेश के केवल दो जिलों बरेली और गोरखपुर को मुस्लिम प्रभावित घोषित कर दिया जाये तो उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में एक गलियारा तैयार हो जाएगा।

"राज्य सरकारें चाहें तो और जिलों को भी मुस्लिम प्रभावित जिला घोषित कर सकती हैं।" (कार्रवाई योजना पृष्ठ 119) स्वाभाविक है कि कुछ तत्त्व जो पहले से ही पाकिस्तान-परस्त रहे हैं, इसकी मांग उठायेंगे और राज्य सरकारें इन्हें मुस्लिम प्रभावित क्षेत्र घोषित करेंगी।

हर घोषित मुस्लिम प्रभावित जिले में एक पोषक केन्द्र (रिसोर्स सेन्टर) खोला जाएगा, जो अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों को मान्यता देने और शिक्षक और प्राचार्य प्रशिक्षण के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, महिला तथा प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार की व्यवस्था की देखभाल करेगा। सातवीं योजना में इसके लिए 65 लाख रुपये दिये गये हैं।

अलगाववाद का मार्ग

शिक्षा प्रसार पर किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती पर जिस तरह से अल्पसंख्यक शिक्षा के बारे में विचार किया गया है, वह अपने आप में विवादास्पद और अलगाववाद को बढ़ाने वाला है।

अल्पसंख्यकों की बात तो की गई है पर विचार केवल मुस्लिम शिक्षा के प्रसार पर ही केन्द्रित है।

सबसे खतरनाक पक्ष पोषक केन्द्रों के परामर्श हेतु तय किये गये विश्वविद्यालय हैं। शिक्षा विभाग और कल्याण विभाग उपरोक्त 40 जिलों में शिक्षा प्रसार हेतु जो पोषक केन्द्र खोल रहा है, उन्हें परामर्श देने व पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु जामिया मिल्लियां, कश्मीर, उस्मानिया और अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपतियों को चुना गया है। पहले से ही ये विश्वविद्यालय साम्प्रदायिकता फैलाने और अलगाववाद बढ़ाने के लिए बदनाम हैं। क्या ये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन 40 जिलों में अपने जाल फैलाकर विघटन को बढ़ावा नहीं देंगे ?

साथ ही यह घोषणा और भी चिन्ताजनक है कि "स्वयंसेवी संस्थायें अल्पसंख्यक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों को आर्थिक मदद दे सकती हैं।" पूर्व से ही "पेट्रो-डालर" की बाढ़ इस देश के सामने अनेक खतरे उत्पन्न कर रही है। क्या उन्हें यह खुला निमन्त्रण नहीं है ?

राज्य तो धर्मनिरपेक्ष रहे पर योजनायें साम्प्रदायिक आधार पर तैयार होती रहें तो राष्ट्रीय एकता की बात बेमानी लगती है।

इस देश में सभी धर्मों को फलने-फूलने का अधिकार प्राप्त है और अगर कोई सम्प्रदाय विकास या शिक्षा प्रसार के औसत दर्जे से नीचे है तो इसमें दोष किसका है ? यह सच्चाई है कि आज का मुस्लिम समाज शिक्षा में पिछड़ता जा रहा है। पर इसका कारण हमें ईमानदारी से ढूंढना चाहिए।

आज मुसलमानों में जागृति लाने के लिए सामाजिक संगठनों का अभाव है। वे मुल्ला-मौलवियों के चंगुल में फंस गये हैं। बहुसख्यकों का भय दिखा कर ये लोग उन्हें चौदहवीं शताब्दी में रखना चाहते हैं।

सरकार और राजनैतिक दल भी वोटों के लालच में उन्हें आर्थिक प्रलोभन देकर मानसिक रूप से पिछड़ा ही रखना चाहते हैं।

यह घातक चिन्तन

भाषा, सम्प्रदाय और क्षेत्र के आधार पर देश में अलगाववाद सुलग रहा है। ऐसे समय में एक सम्प्रदाय को इतनी छूट देना जहाँ दूसरे तत्त्वों के मनसूबों को बल प्रदान करेगा, वहीं जिस प्रकार से जिलों का निर्धारण कर योजनायें बनाई गई हैं, उनसे पाकिस्तान-परस्त तत्त्वों को बढ़ावा मिलेगा।

इस्राईल में अनेक देशों से आये लोगों ने अपनी राष्ट्रीयता के आधार पर एक भाषा को विकसित किया। यदि हम एक देश के होकर टुकड़े-टुकड़े में विचार करते रहे तो देश के सामने नये खतरे उभरेंगे।

सरकार को अब साम्प्रदायिक आधार पर सोचना छोड़कर सम्पूर्ण देश का विचार करना चाहिए। "नवोदय विद्यालय" खोलने के पीछे राष्ट्रीय एकता का नारा बुलंद करना और दूसरी तरफ साम्प्रदाय के आधार पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अलगाववाद को बढ़ाना, एक तरफ पैसे के अभाव में नई शिक्षा नीति के कुछ अच्छे विचारों को भी क्रियान्वित न करना और दूसरी तरफ नवोदय विद्यालय और अल्पसंख्यक शिक्षा के प्रसार हेतु धन का आवंटन जहाँ सरकार की आभिजात्य और साम्प्रदायिक सोच को दर्शाते हैं, वहीं इस देश के सामने चुनौती भी पैदा करते हैं। देश की जनता को सरकार के ऐसी सोच का कड़ा विरोध करना चाहिए। ★

टेलीफोन—केवल तीन मिनट के लिए

नई दिल्ली। महानगर टेलीफोन निगम एक प्रस्ताव पर विचार कर रहा है, जिसके अनुसार प्रत्येक स्थानीय काल के दौरान केवल तीन मिनट के लिए बात हो सकेगी। तीसरा मिनट समाप्त होते ही एक और कॉल मीटर कर ली जायेगी। आजकल स्थानीय कॉल की कोई अवधि निश्चित नहीं है।

पूरी प्रणाली पर लोड कम करने के लिए इस प्रस्ताव पर अमल अत्यावश्यक है। निगम सिगनल प्रणाली प्रारम्भ करेगा, ताकि प्रत्येक तीन मिनट बाद कॉल करने वाले को मालूम हो सके कि नई कॉल प्रारम्भ हो गई है। यह प्रस्ताव सार्वजनिक टेलीफोन सब पर लागू होगा। सब से पहले यह योजना महानगरों में चालू इलैक्ट्रॉनिक एक्सचेंजों में चालू की जायेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीने की कला

—स्वेट मार्डेन

हम सभी सुन्दर संसार की खोज में रहते हैं लेकिन हमारा खोजने का ढंग एक पुरानी कहानी के उस बालक जैसा है जो पहाड़ की चोटी पर एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहता था और नित्य सूर्यास्त के समय नीचे घाटी में चमकते महल को देख कर सोचा करता था—काश! मैं उस सुनहरी खिड़कियों वाले महल में सुख से रह पाता। एक दिन उस महल की याद में वह उत्साही बाल-यात्री पहाड़ी से नीचे उतरा और महल तक पहुंचते-पहुंचते उसे सांझ हो गई लेकिन यह जानकर उसे भारी निराशा हुई कि पहाड़ी से जो महल दिखता था वह वास्तव एक टूटा-फूटा मकान था जो अस्ताचल में डूबते सूरज की किरणों से सुनहरी महल सदृश दिखाई देता था। प्यास और थकान से चूर होकर वह जमीन पर गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा। दीर्घ निःश्वास लेते हुए उसने पहाड़ी पर अपनी झोंपड़ी को देखा तो सुखद आश्चर्य से भर उठा कि वह स्वर्णमयी आभा से आलोकित हो रही थी!

संसार की मृगतृष्णाओं के पीछे भागने वाले हम लोग भी इस अबोध बालक जैसे ही हैं। जीवन की सुन्दरता और प्रसन्नता हमें सदैव उस धरती पर दिखाती है जहां हमारी पहुंच नहीं है या जहां हम आज नहीं हैं। हम कल्पना लोक में विचरण करते हुए किसी ऐसे जादू अथवा चमत्कार की आशा रखते हैं जिससे सपनों की दुनिया साकार हो उठे। जीवन में व्याप्त असंतोष और अप्रसन्नता का प्रमुख कारण यह है कि हम कभी अपने वर्तमान से संतुष्ट नही होते। कल की झूठी आशाओं में हम आज का आनन्द खो देते हैं। डा० फ्रेंक क्रेन के शब्दों मे "विश्व की सताई आत्माएं ही सदा हमें अपनी इच्छाओं पर झुकाने का प्रयत्न करती है।" ऐसे व्यक्ति संसार में रहने के अयोग्य ठहरते हैं क्योंकि वे 'जो कुछ हैं' उससे सन्तुष्ट रहना जानते नहीं और 'जो कुछ नहीं हैं' सदैव उसके पीछे भागते रहते हैं।

वस्तुतः सच्ची प्रसन्नता इच्छा और उसकी पूर्ति में न होकर आत्मा की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन्तुष्टि में ही रहती है। टाल्सटाय ने अपनी एक कहानी में दर्शाया है कि एक साधारण किसान साधारण-सी नौकरी में ही बड़ा सुखी और सन्तुष्ट जीवन बिता रहा था कि अचानक उस मालकिन की जमीन बिकने लगी। उसने जैसे-तैसे कर्ज लेकर उस जमीन में से कुछ भूमि खरीद ली। अब दिन रात उसकी लालसा बढ़ने लगी। वह सोचने लगा कि अधिक धन से अधिक प्रसन्नता बटोरी जा सकती है। अधिक भूमि की महत्त्वाकांक्षा में वह दिन-रात भाग-दौड़ करने लगा और इसी प्रयास में उसने अपना चैन, सुख, शांति खो दी। भौतिक समृद्धि से हम केवल क्षणिक सुख प्राप्त कर सकते हैं, आनन्द की उपलब्धि नहीं कर पाते। हमारी प्यास सोडावाटर, आइसक्रीम, चाय या काफी से नहीं, शीतल जल से ही बुझ सकती है।

प्रसन्नता हमारे खाने-पीने या ऐश-आराम लेने से नहीं, वह तो आदर्श जीवन जीने से ही आती है। उसकी अनुभूति उच्च विचारों एवं परोपकार के कार्यों से ही होती है। स्वार्थ भरे जीवन से प्रसन्नता नहीं मिल सकती। ईर्ष्यालु और लालची तो इसे छू भी नहीं सकते। संसार में आधे लोगों की अप्रसन्नता का कारण है दूसरों से ईर्ष्या और अपने से असंतोष। हैनरी ड्रमँड ने यथार्थ ही लिखा हैं कि "संसार के आधे से अधिक लोग प्रसन्नता को ठीक ढंग से नहीं खोजते। उनके विचार में प्रसन्नता दूसरों द्वारा दी गई सुख-सुविधाओं का उपभोग करने में है। जब कि सचाई यह है कि प्रसन्नता दूसरों को देने और उनका उपकार करने में ही है।" प्रसन्नता एक ऐसी अमूल्य देन है जो हमारे ही शुभ विचारों, उपकार के छोटे-छोटे कर्मों और निःस्वार्थ सेवा से मिलती हैं। थोड़ी-सी प्रसन्नता तब मिलती है जब हम किसी का उत्साह बढ़ाते हैं। कुछ प्रसन्नता तब मिलती है जब हम किसी के दुःख का भार हलका करते हैं और कुछ प्रसन्नता तब मिलती है जब हम दूसरों के लिए त्याग करते हैं। हम प्रसन्नता को ठीक वैसे ही जीवन के बगीचे से इकट्ठा करते हैं जैसे मधुमक्खी एक-एक फूल से रस चूस कर मधु संचय करती है। प्रसन्नता किसी की जागीर नहीं है जो इसे बांध कर रख ले। यह तो जीवन की ऐसी अनमोल निधि है जिसका मूल्य चुकाने पर उसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई भी हस्तगत कर सकता है।

प्रकृति ने वायुमंडल में ऐसे तत्त्व मिला दिये हैं जो एक साथ मानव को स्वास्थ्य, सौन्दर्य व प्रसन्नता प्रदान करते हैं। सूर्योदय इन्हीं गुणों के कारण विश्व रंगमंच पर सैंकड़ों चमत्कार दिखाता है—जड़ पौधों, फूलों, फलों एवं सजीव पशु व मानव जीवन में एक नया जीवन भर देता है, अपनी सुन्दर किरणों से पृथ्वी पर सौन्दर्य-जाल भी बुन देता है। जान वानमेकर का कहना है—"सूर्योदय के साथ ही मेरी आत्मा का सूर्य भी उदय हो जाता है।" और यह सूर्य सबके लिए मुक्त दान है। आत्मा का शृंगार करने से ही वास्तविक प्रसन्नता मिलती है। धन से हम जीवन की अन्य अमूल्य निधियां—जिन्दगी-प्यार, मित्रता, सहानुभूति अर्जित नहीं कर सकते। जीवन की ये अनमोल निधियां तो हृदय के उच्च विचारों और सात्त्विक प्रयत्नों से ही खरीदी जा सकती हैं। अब्राहम लिंकन ने कहा था कि लोग अपने में जितनी प्रसन्नता पाने का निश्चय करते हैं उतनी ही प्रसन्नता उन्हें मिलती है। प्रायः हम प्रसन्नता को बाहर खोजते रहते हैं जबकि वह हमारे भीतर ही विद्यमान होती है। ईसा ने कहा था—"ईश्वर अर्थात् शाश्वत प्रसन्नता का राज्य तुम्हारे हृदय में ही है।" संसार के दुर्भाग्य का एक प्रमुख कारण यह अन्ध विश्वास है कि स्वर्ग या प्रसन्नता इस धरती की नहीं, बल्कि सुदूर लोक की वस्तु है जो हमें इस जीवन में नहीं, मृत्यु के बाद ही मिल सकती है। धर्म प्रचारकों द्वारा डाले गए ये विचित्र संस्कार मानवता के लिए अभिशाप सिद्ध हुए हैं। प्राचीन विचारकों ने यह कभी नहीं सोचा कि प्रसन्नता जीवन की आधारभूत आवश्यकता है जिसके बिना मनुष्य जीवन अधूरा है। बहुत-से दार्शनिक तो इतने शुष्क, नीरस और संकुचित दृष्टिकोण के रहे हैं कि उनकी दृष्टि में खेलना भी राक्षसी प्रवृत्ति रही है। वे भूल गए कि क्रीड़ा प्रवृत्ति मनुष्य के लिए स्वाभाविक है अतः इसे जीवन से बहिष्कृत करने पर मनुष्य पागल या अपराधी बन सकता है। उन लोगों की कल्पना कीजिए जो अंधेरी कोठरियों की गंदी वायु में सांस लेते हुए अप्राकृतिक जीवन जीते हैं। आधुनिक विचार-दर्शन प्रसन्नता को ही मानव-धर्म मानता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब मैं लोगों को छोटी-छोटी आपत्तियों पर रोते-चिल्लाते और राई को पहाड़ बनाते देखता हूं, तो मुझे उस वृद्ध महिला की याद आये बिना नहीं रहती जिसने अपने दुःखपूर्ण जीवन में भी आशा और उल्लास का दामन कभी नहीं छोड़ा। इसका कारण पूछें जाने पर उसने उत्तर दिया कि "मेरे पास एक प्रसन्नता की पुस्तक है। जीवन के आरम्भ में मैंने यह निश्चय कर लिया था कि रोज को मैं इसमें खुशी लामे वाले अनुभव लिखा करूंगी। इससे जीवन में मेरी खुशी ढूढ़ने की [ही आदत वन गई है। विपत्तियों के काले बादलों में भी मैं प्रकाश ढूँढ़ने में सफल हुई हूं।"

आओ जीवन में जीने की इस कला को हम भी सीखें। हमारा जीवन एक मुस्कराहट भरा गीत होना चाहिए। यदि हम भी प्रसन्नता ढूंढने का स्वभाव बना लें, तो शीघ्र ही हम प्रसन्नता का स्थायी कोश स्थापित कर लेंगे। □

सोनिया गांधी को पितृ शोक

रोम। भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की धर्मपत्नी श्रीमती सोनिया गांधी के पिता श्री स्टिफनो माइनो का 30 अप्रैल को दिल को बीमारी के दौरे से देहान्त हो गया।

एक सम्बन्धी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार श्री माइनो को प्रातःकाल समाचारपत्र पढ़ते समय दिल की बीमारी का दौरा पड़ा। उनकी उम्र 71 वर्ष थी। श्री माइनो व्यापारी थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

आर्य समाज के प्रचार में तेजी लाने, ऋषिका सन्देश घर घर पहुंचाने, हेतु, उत्कृष्ट कैसेट आज ही मंगाइये ।

कैसेट नं

1. वैदिक संध्या हवन-(स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सहित) 25.00 रु.
2. भक्ति भजनावली, गायक-गणेश विद्यालङ्कार व वन्दना वाजपेयी 25.00 रु.
3. गायत्री महिमा, गायत्री मंत्र की विशद् व्याख्या (पिता-पुत्र संवाद में) 25.00 रु.
4. महर्षि दयानन्द, गायक बाबूलाल राजस्थानी व जयश्री शिवराम 25.00 रु.
5. आर्य भजन माला, गायक-संगीता, दीपक, रोहिणी, स्मिता व देवव्रत शास्त्री 25.00 रु.
6. योगासन एवं प्राणायाम स्वंय शिक्षक, प्रशिक्षण, डॉ. देवव्रत आचार्य 25.00 रु.
7. आर्य संगीतिका, गायिका-माता शिवराजवती आर्या 25.00 रु.

8-9. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कैसेट) (स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन) 50.00 रु.

10. पथिक भजन सिन्धु, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक 30.00 रु.
11 सत्यपाल पथिक भजनावली, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक 30.00 रु.
12. मुसाफिर भजन सिन्धु, कुंवर महिपालसिंह आर्य द्वारा गाये गये कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के भजन 30.00 रु.
13. श्रद्धा, प्रसिद्ध फिल्म गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान 30.00 रु.
14. आर्य भजनावली, फिल्मी संगीतकार एवं गायक-वेदपाल वर्मा 30.00 रु.
15. वेद गीतांजली, गीतकार व गायक-सत्यकाम विद्यालङ्कार 30.00 रु.
16. भजन सुधा, आ. प्रज्ञादेवी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन 30.00 रु.

17-18 वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कैसेट) 60.00 रु.
मन्त्रोच्चारण - स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
प्रथम - प्रातः प्रार्थना, सन्ध्या, ईश्वर प्रार्थना, दैनिक यज्ञ, यज्ञप्रार्थना।
द्वितीय - स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, बृहद्यज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ पाक्षिक यज्ञ दैनिक उपयोगी मन्त्र, शिवसंकल्प पाठ।

कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ अग्रिम भेजिये ।

5 या उससे अधिक कॅसेटों के आदेश पर डाक तथा पैकिंग व्यय फ्री ।

5 से कम के लिये कृपया 13 रू. अतिरिक्त डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये ।

वी. पी. पी. नहीं ।

भेंट - दस कैसेट मंगाने वालोंको एक कैसेट मुफ़्त ।

प्राप्तिस्थान - संसार साहित्य मण्डल
141, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-400 082
फोन-5617137

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीस मई को महाराणा प्रताप जयन्ती के अवसर पर

प्रणवीर राणा प्रताप

मिला कौन-सा तुमको शाप
घूमे दुर्गम वन में आप।
घास-फूस की खाई रोटियां
सहते रहे भीषण संताप।।
अरे ओ प्रणवीर प्रताप, अरे ओ रणवीर प्रताप।।

आजादी की अलख जगाई
हिन्दुत्व की लाज बचाई।
सर्वस्व की दे आहुति
करते रहे सतत लड़ाई।।
जलता रहा सदा आपके हृदय में गौरव का ताप।।
अरे ओ प्रणवीर प्रताप, अरे ओ रणवीर प्रताप।।

मातृभूमि को समझा माता
सत्ता-ऐश्वर्य से तोड़ा नाता।
जब तक वतन आज़ाद नहीं
चैन से सोना नहीं सुहाता।।
भूख-प्यास से तेरे बच्चें करते रहे विलाप।
अरे ओ प्रणवीर प्रताप, अरे ओ रणवीर प्रताप।।

करे देश तेरी स्मृति
मनाये तेरी जयन्ती।
मेवाड़ के कण-कण में तू है
होगी नहीं कभी विस्मृति।।
आज देश के हर सैनिक के दिल में तेरी अमिट छाप।।
अरे ओ प्रणवीर प्रताप, अरे ओ रणवीर प्रताप।।

—रावतमल टाक

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय से मुद्रित एवं प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P. O. अलीपुर दिल्ली-३६	ज्येष्ठ २०४४ मई १९८७	D-C-201 N.R. 10719/65

छत्रपति शिवाजी

[illegible] अप्रैल को जिनकी जयन्ती देश भर में मनाई गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi